Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

भिक्षु वाणी

जीव विमासी जोय तूं, विषय म राच गिवार।
थोड़ा सुखां रे कारणे, मूरख घणा म हार।।

हे जीव! तू विचार कर देख, हे मूढ़! विषय में आसक्त मत बन। थोड़े सुखों के लिए बहुत सुखों को मत गवां।
–आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 48 • 31 अगस्त - 06 सितम्बर 2026 | प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 29-08-2026 • पेज 24 | ₹ 10 रुपये

आश्रव पर लगेगा ताला, जब प्रतिक्रमण बनेगा जीवन की सुरक्षा-माला : आचार्यश्री महाश्रमण
पेज 02

स्तव-स्तुति से मिलेगी बोधि, स्वाध्याय से जागेगी आत्म-सिद्धि! : आचार्यश्री महाश्रमण
पेज 24

Address Here

लाडनूं में 'काल प्रतिलेखना से क्या मिलेगा?' पर पूज्य प्रवर का आगमिक बोध

समय का सही नियोजन ही है जीवन की असली कुंजी!: आचार्यश्री महाश्रमण

युवाचार्य श्री ने TPF और धर्मसंघ के 'योगक्षेम' पर दिया ओजस्वी उद्बोधन

लाडनूं।
23 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती परिसर में 'काल प्रतिलेखना से क्या मिलेगा?' विषय पर उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से चतुर्विध धर्मसंघ को अमृत देशना प्रदान की।

काल प्रतिलेखना का मर्म और प्राचीन काल-ज्ञान :

१. प्राचीन समय-प्रबंधन की विधा : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि साधुचर्या में प्रतिदिन उपकरणों और समय (काल) का प्रतिलेखन करने का विधान है। प्राचीन समय में घड़ी जैसे यंत्र न होने पर रात्रि में नक्षत्र विद्या/दिक् प्रतिलेखन तथा दिन में सूर्य की छाया के घटने-बढ़ने के आधार पर समय का सूक्ष्म अनुमान लगाया जाता था।

२. ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय : आगम के अनुसार सही समय पर स्वाध्याय और धर्म-साधना (काल प्रतिलेखना) करने से ज्ञानावरणीय कर्मों का परिमार्जन और क्षय होता है।

आधुनिक 'टाइम मैनेजमेंट' और केवली समुद्घात का आदर्श:

> व्यस्तता के बीच भी दिमाग में शांति बनाए रखना ही सच्ची साधना है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

१. तनावमुक्त और व्यवस्थित जीवन: समय का ऐसा सटीक नियोजन हो कि व्यक्ति अत्यधिक व्यस्तता के बावजूद शांत रहे और दिमाग में कोई तनाव या अस्त-व्यस्तता न आए।

(शेष पेज 20 पर)

आचार्यश्री तुलसी की परिचर्या के स्वर्णिम आधारस्तंभ : पूज्य प्रवर की दृष्टि में...

आचार्य महाश्रमण जी ने आचार्यश्री तुलसी की सेवा और परिचर्या करने वाले कई संतों का उल्लेख किया।

1. **मुनि श्री बालचंद जी स्वामी (गंगाशहर):** इन्हें गुरुदेव तुलसी द्वारा 'संघ सेवी' के रुप में अलंकृत किया गया था। ये गुरुदेव की गोचरी, साधु-साध्वियों के चोखले की पर्चियाँ बनाने और गुरुदेव की रात में सेवा करने जैसे महत्वपूर्ण कार्यों में समर्पित थे।
2. **मुनि श्री मधुकर जी स्वामी:** इन्होंने गुरुदेव तुलसी के स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या की विशेष सेवा की। वे गुरुदेव के उपकरणों की प्रतिलेखना, उनके नख-केश आदि का लोच करना और आहार आदि की व्यवस्था संभालते थे। इन्हें 'संघ परामर्शक' के पद से सम्मानित किया गया था।
3. **मुनि श्री हीरालाल जी स्वामी (बिदासर) :** ये गुरुदेव तुलसी को उदक (पानी) पिलाने और पुराने समय में जोड़ी बिछाने व पाटा लगाने जैसे कार्यों में तत्पर रहते थे।
4. **मुनि श्री दुलीचंद जी स्वामी (दिनकर) :** इन्होंने गुरुदेव तुलसी को आहार कराने में अपनी सेवाएँ दी थीं।।
5. **मुनि श्री मोहनलाल जी स्वामी (आमेट):** इनका विशेष कार्य गुरुदेव तुलसी को समाचार पत्र (अखबार) सुनाना था, विशेषकर जब वे आहार कर रहे होते थे।
6. **मुनि श्री चंपालाल जी स्वामी:** इनका प्रयाण लाडनूं में ही हुआ था और ये भी गुरुदेव तुलसी की सेवा से जुड़े रहे थे।

गुरुदेव ने इन संतों के माध्यम से यह संदेश दिया कि बड़ों की परिचर्या और सेवा करना जीवन का एक महत्वपूर्ण और गौरवपूर्ण पृष्ठ है।

कायोत्सर्ग : तनावमुक्ति की संजीवनी और प्रायश्चित्त का महामार्ग : आचार्यश्री महाश्रमण

श्वास के साथ 'लोगस्स' ध्यान और कायोत्सर्ग के 5 महा-लाभों का किया विस्तृत विवेचन

लाडनूं।
20 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, नेमानंदन, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती परिसर में 'कायोत्सर्ग से क्या मिलेगा?' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से पावन देशना प्रदान की।

कायोत्सर्ग का मर्म और इसके तीन मुख्य आयामः

> शरीर की चंचलता, ममत्व और तनाव का विसर्जन ही कायोत्सर्ग का वास्तविक मर्म है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

१. काय + उत्सर्ग : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि कायोत्सर्ग शब्द 'काय' (शरीर) और 'उत्सर्ग' (त्याग) के योग से बना है। इसका अर्थ केवल शरीर को छोड़ना नहीं, बल्कि शरीर की चंचलता का त्याग करना है।

२. तीन प्रमुख आयामः कायोत्सर्ग के तीन रूप हैं—

I. शरीर की चंचलता का विसर्जन करना।

II. शरीर के प्रति आसक्ति व ममत्व का परित्याग करना।

III. शरीर में व्याप्त खिंचाव व तनाव का विसर्जन कर उसे पूर्णतः शिथिल बना देना।

(शेष पेज 20 पर)

ध्यान में लीन गुरु, पेड़ पर शिष्य और बेअसर शेर!..

1. घटना का प्रसंग : एक गुरु और उनके शिष्य जंगल के रास्ते जा रहे थे। गुरु जी ने ध्यान करने के लिए एक स्थान चुना और ध्यान में निमग्न हो गए। उन्होंने शिष्य को आसपास घूमने या स्वाध्याय करने की अनुमति दी।

2. शेर का आगमन : अचानक एक शेर वहां आ गया। शिष्य ने शेर को पास आते देख गुरु जी को बार-बार जगाने की कोशिश की, लेकिन गुरु जी अपनी साधना में इतने गहरे लीन थे कि उन्हें बाहरी दुनिया का कोई आभास नहीं था। शिष्य डर के मारे पास के एक पेड़ पर चढ़ गया।

3. चमत्कारी शांति : शेर गुरु जी के पास आया, कुछ देर उन्हें देखता रहा और फिर बिना किसी को कोई नुकसान पहुँचाए वहां से शांति से चला गया।

4. गहरी सीख : जब बाद में शिष्य ने गुरु जी से इस घटना के बारे में पूछा, तो उन्होंने बहुत मार्मिक उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि जब वे ध्यान में थे, तब वे 'अपने प्रभु के साथ' थे, इसलिए उन्हें शेर का भय नहीं था। बाद में, जब उन्हें मच्छरों ने काटा और उन्होंने प्रतिक्रिया दी, तो उन्होंने समझाया कि अब वे 'शिष्य के साथ' हैं, इसलिए मानवीय संवेदनाएं पुनः सक्रिय हो गईं।

आचार्यश्री ने दी पावन प्रेरणा: 'रात को सोने से पहले करें दिनभर के कार्यों का आत्म-विश्लेषण

आश्रव पर लगेगा ताला, जब प्रतिक्रमण बनेगा जीवन की सुरक्षा-माला : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य आचार्यश्री ने समझाई प्रतिक्रमण की आगमिक महिमा; पर्युषण पर्व में सामूहिक प्रतिक्रमण करने का दिया पावन संदेश

लाडनूं।
19 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती परिसर में 'प्रतिक्रमण से क्या मिलेगा?' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को आगमिक पाथेय प्रदान किया।

प्रतिक्रमण का स्वरूप और उसके पांच प्रकार:

१. पर-स्थान से स्व-स्थान की ओर : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि 'प्रतिक्रमण' का अर्थ है लौटना। संयम से असंयम, निर्दोषता से सदोषता या अशुभ योग से शुभ योग में पुनः लौटना ही प्रतिक्रमण है।

२. पाँच आगमिक भेद : आगम में प्रतिक्रमण के पांच भेद बताए गए हैं—आश्रव द्वार प्रतिक्रमण, मिथ्यात्व प्रतिक्रमण, कषाय प्रतिक्रमण, योग प्रतिक्रमण और भाव प्रतिक्रमण।

३. सामूहिक और आत्म-निरीक्षण : सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त के बाद निर्धारित समय में साधु-साध्वियों को मंडली (सामूहिक) रूप में शुद्ध उच्चारण व विधिपूर्वक प्रतिक्रमण करना चाहिए। गृहस्थों के लिए भी रात को सोने से पहले दिनभर के कार्यों का आत्म-निरीक्षण करना एक विशेष प्रतिक्रमण है।

> गलतियों से पीछे हटकर पुनः संयम और निर्दोषता में लौट आना ही प्रतिक्रमण का वास्तविक मर्म है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

व्रत के छिद्र ढकने के पांच महा-लाभः

१. आश्रव निरोध : अशुभ योगों से होने वाले कर्म बंधन तुरंत रुक जाते हैं।

२. चारित्र की शुद्धि : चारित्र की धवल चादर पर लगे दोष धुल जाते हैं और संयम निष्कलंक बनता है।

३. साधना में जागरूकता : साधु आठ प्रवचन माताओं के प्रति अधिक उपयुक्त, दत्तचित्त और सजग बनता है।

४. एकता व समाधि : संयम के प्रति साधना एकरस हो जाती है और साधु को उत्तम समाधि की प्राप्ति होती है।

उजली चादर और बेदाग आत्मा: संतों का एक अनूठा दृष्टांत

पछेवड़ी का दृष्टांत : आचार्य प्रवर समझाते हैं कि जिस प्रकार संत लोग नई पछेवड़ी ओढ़ते हैं जो बिल्कुल उजली और श्वेत होती है, ठीक उसी प्रकार हमारा 'चारित्र' भी एक निर्मल पछेवड़ी की तरह है।

दोष और विशुद्धि : गोचरी के लिए जाते समय या दैनिक जीवन की गतिविधियों के दौरान जैसे पछेवड़ी पर अनजाने में छींटे या धब्बे लग जाते हैं, वैसे ही हमारे व्यवहार और चारित्र में भी अनजाने में दोष लग जाते हैं।

सीख : जिस तरह पछेवड़ी को धोकर वापस साफ कर लिया जाता है, उसी प्रकार नियमित 'प्रतिक्रमण' करने से हमारे चारित्र रुपी पछेवड़ी के तमाम दोष धुल जाते हैं और आत्मा पुनः निर्मल व बेदाग हो जाती है।

जब 'आचार्य श्री' ने नियम के खातिर रोक दी महत्वपूर्ण मुलाकात

प्रसंग (डीसा, गुजरात): आचार्य प्रवर जब डीसा (गुजरात) में 'अक्षय तृतीया' के पावन अवसर पर पधारे थे, तब वहाँ मूर्तिपूजक समाज के आचार्य भी उपस्थित थे। उन्होंने गुरुदेव से वार्तालाप करने की इच्छा जताई, जिस पर गुरुदेव ने सहर्ष एक समय निर्धारित कर दिया।

अडिग संकल्प: जब वे आचार्य निर्धारित समय से काफी देर से पहुँचे, तब तक गुरुदेव के प्रतिक्रमण की वेला आ चुकी थी। गुरुदेव ने अत्यंत विनम्रतापूर्वक वार्तालाप करने में असमर्थता व्यक्त की, क्योंकि वे अपनी साधना और प्रतिक्रमण के समय से समझौता नहीं करना चाहते थे।

प्रभाव और सीख: अगले दिन जब वे पुनः आए और उन्हें ज्ञात हुआ कि गुरुदेव ने अपने नियम में कोई बदलाव नहीं किया, तो वे आचार्य श्री महाश्रमण जी की अद्भुत नियम-निष्ठा के कायल हो गए। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि वे अपने कार्यों के लिए अक्सर समय बदल देते हैं, किंतु गुरुदेव का अपनी साधना के प्रति यह अडिग समर्पण वास्तव में वंदनीय है।

पर्युषण की प्रेरणा और प्रेक्षाध्यान सम्मेलन का आगाजः

१. पर्युषण में सामूहिक प्रतिक्रमण : आचार्यश्री ने आगामी पर्युषण पर्व के संदर्भ में श्रावक-श्राविकाओं को शाम के समय सामूहिक प्रतिक्रमण में भाग लेने और शुद्ध उच्चारण के साथ जागरूक रहने की प्रेरणा दी।

(शेष पेज 20 पर)

त्याग से कटेगी कर्मों की पतंग, संयम से बिखरेगा जीवन में भक्ति का रंग : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं में 'प्रत्याख्यान से क्या मिलेगा?' विषय पर पूज्य प्रवर का आगमिक बोध

TPF गौरव 2026 से अलंकृत हुए सूर्यप्रकाश सामसुखा

लाडनूं।
21 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'प्रत्याख्यान से क्या मिलेगा?' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से पावन देशना प्रदान की।

साधु की पर्युपासना और हेय-उपादेय का विवेक :

१. सुनने से ज्ञान की प्राप्तिः पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि साधु-संतों की पर्युपासना (नैकट्य) में बैठने और वाणी सुनने से ज्ञान मिलता है। आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रवचनों को सुनकर अनगिनत लोगों ने ज्ञान प्राप्त किया।

२. हेय और उपादेय का भेदः ज्ञान से विज्ञान यानी विवेक जागृत होता है। नव तत्त्वों में हिंसा, झूठ, चोरी, पाप, आश्रव आदि 'हेय' (छोड़ने योग्य) हैं, जबकि संवर, निर्जरा और मोक्ष 'उपादेय' (ग्रहण करने योग्य) हैं।

प्रत्याख्यान का मर्म और आश्रव निरोधः

१. प्रत्याख्यान का अर्थ : प्रत्याख्यान का सीधा अर्थ है—छोड़ देना या त्याग कर देना। मिथ्यात्व और अव्रत का त्याग करने से कर्मों का आगमन (आश्रव) रुक जाता है।

२. अणुव्रत का संकल्प : साधु पाँच महाव्रत अंगीकार कर सर्व-सावद्य से विरत होते हैं। यदि गृहस्थ महाव्रत न ले सके, तो उसे अपनी क्षमतानुसार छोटे-छोटे 'अणुव्रतों' को अवश्य स्वीकार करना चाहिए।

> यदि महाव्रत की क्षमता न हो, तो छोटे-छोटे अणुव्रतों को अपनाकर भी जीवन को पावन बनाया जा सकता है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

३. जागरूकता आवश्यक : प्रत्याख्यान करने और कराने वाले—दोनों का सजग होना ज़रूरी है। सोच-समझकर और अपनी क्षमता के अनुसार ही त्याग करना चाहिए, तथा त्याग के बाद उसके पालन में पूर्ण जागरूकता रखनी चाहिए। प्रतिक्रमण में प्रत्याख्यान छठा आवश्यक है।

सबसे कम उम्र में दीक्षा का रिकॉर्ड.....

आचार्यवर ने साधु-साध्वी जीवन में दीक्षा के महत्व को समझाया है। इस दौरान साध्वी श्री गुलाबा सती (गुलाब सती) का विशेष उल्लेख किया, जिन्होंने अत्यंत छोटी आयु में दीक्षा ग्रहण की थी। उनके द्वारा स्थापित कीर्तिमान (सबसे कम उम्र में दीक्षा) आज भी तेरापंथ के इतिहास में अद्वितीय है।

पूज्य प्रवर का विशेष चिंतन बिंदु.....

त्याग का दोहरा क्रमः पूज्य प्रवर ने एक चिंतन बिंदु रखा कि जैसे 'चातुर्मासिक पक्खी' का अवसर आता है, तो साधक को तीन स्तरों पर त्याग करना चाहिए:

1. दैनिक (दैवसिक): जो रोज किया जाता है।
2. पाक्षिक: जो पक्ष के लिए किया जाता है।(15 दिनों के लिए)
3. चातुर्मासिक: जो चार महीनों के लिए किया जाता है।

विवेकपूर्ण त्याग: आचार्यवर का चिंतन है कि हमें इन तीनों स्तरों के त्याग को अलग-अलग रुप में स्पष्टता से करना चाहिए ताकि कोई भी क्रम छूटे नहीं।

(इसी तरह भगवती संवत्सरी महापर्व पर एक दैनिक ओर एक वार्षिक त्याग करना चाहिए।)

विशेष: पूज्य प्रवर ने इसे 'चिंतन का विषय' बताते हुए फ़रमाया कि यदि हम इन सभी स्तरों पर प्रत्याख्यान करें, तो हमारी साधना और अधिक समृद्ध होगी।

TPF गौरव अलंकरण समारोह 2026:

सूर्यप्रकाश सामसुखा का सम्मानः आचार्यश्री की पावन सन्निधि में 'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम' द्वारा वर्ष 2026 का TPF गौरव अलंकरण समारोह आयोजित किया गया।

आषाढ़ी तेरस उजियाली, नव इतिहास बनाया ।
महासूर्य ने बाल सूर्य का, वर अभिषेक कराया ॥

: श्रद्धाप्रणत :

खेमचंद-ललिता देवी
विदित-प्रीति
समकित-गीतिका
संवृति, जेनिका मुकीम

श्रीMATI GEMS & JEWELS
New Delhi

Vidit Jain & Co.
New Delhi

कोटि कोटि वंदन-अभिनंदन

रोम रोम आनंद छलकता, पुलकित मन के पोर ।
युवाचार्यवर पाकर छाई, गण में हर्ष हिलोर ॥

: श्रद्धाप्रणत :

मदनलाल-लीलाबाई
राजेश-संगीता, रमेश-सरिता,
अर्हम्-सोनिका, श्रमण-रोशनी
देशना, खुशी, चिरायु, मिवान डागा
कंटालिया-चेन्नई

22वाँ राष्ट्रीय कन्या मंडल अधिवेशन

'संकल्प से सिद्धि' तक: प्रेरणा, संस्कार और व्यक्तित्व निर्माण का सशक्त महापर्व

लाडनूँ।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में आयोजित 22वाँ राष्ट्रीय कन्या मंडल अधिवेशन 'संकल्प' 24 से 26 जुलाई 2026 तक जैन विश्व भारती, लाडनूँ में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल सान्निध्य में गरिमापूर्ण एवं प्रेरणामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। देशभर के लगभग 131 क्षेत्रों से 970 कन्याओं की उत्साहपूर्ण सहभागिता ने इस अधिवेशन को युवा चेतना, संस्कार और संगठनात्मक एकता का अद्भुत संगम बना दिया। तीन दिवसीय अधिवेशन का शुभारंभ 'निराशाओं के अंधेरों में – प्रेरणा के उजाले' विषयक प्रथम सत्र से हुआ। पूज्यप्रवर ने प्रेरक प्रश्नोत्तर के माध्यम से कन्याओं को ज्ञान, प्रतिभा एवं भाषा-कौशल के विकास, नवकार मंत्र जप, 'ॐ भिक्षु' स्मरण, सामायिक, शुद्ध आचार-व्यवहार जैसे जीवनोपयोगी संकल्पों को अपनाने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वीप्रमुखा श्रीजी ने PPP Principle (Patience, Persistence एवं Positive Thinking) के माध्यम से संकल्प को सफलता का प्रथम आधार बताया।

प्रथम दिवस के द्वितीय सत्र 'संकल्प से सफलता की ओर' में मोटिवेटर सुनीता जैन एवं डॉ. सारिका गिरिया ने जीवन-मूल्यों, व्यक्तित्व विकास, मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच तथा जिम्मेदार निर्णय क्षमता पर प्रभावी मार्गदर्शन दिया। द्वितीय दिवस का प्रारंभ अनुशासन, उत्साह और आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण भव्य कन्या रैली से हुआ। इसी अवसर पर चारों क्षेत्रों द्वारा पंच महाव्रतों पर आधारित आकर्षक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका आचार्यप्रवर ने अवलोकन कर जैन जीवन-दर्शन के व्यावहारिक मूल्यों की सराहना की। द्वितीय दिवस के विभिन्न सत्रों में 'संकल्प से सितारे बदल जाते हैं' के अंतर्गत आयोजित संकल्प संसद में संयुक्त परिवार, अंतरजातीय विवाह, नशामुक्ति, गृहकार्य एवं तेरापंथी पहचान जैसे समसामयिक विषयों पर सार्थक संवाद हुआ। 'संकल्प से सजे संस्कार' में देशभर की कन्या मंडलों द्वारा प्रस्तुत प्रेरक नाट्य प्रस्तुतियों ने सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्यों का प्रभावी संदेश दिया, जबकि 'सम्मान समारोह – संकल्प से जीत' में वर्षभर की उत्कृष्ट प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। दिन का समापन 'संकल्प से आत्मशुद्धि' सत्र से हुआ, जिसमें सामूहिक सामायिक, जाप, 'तेरापंथ प्रबोध' संगान एवं पॉडकास्ट के माध्यम से आत्मचिंतन, आध्यात्मिक जागृति एवं आत्मपरिष्कार का संदेश दिया गया। तृतीय दिवस के प्रथम सत्र 'संकल्प से सजगता' में पुलिस विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा आत्मरक्षा, साइबर सुरक्षा, महिला अधिकार एवं कानूनी जागरूकता जैसे विषयों पर अत्यंत उपयोगी एवं व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई।

समापन सत्र 'संकल्प से सिद्धि' में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कन्याओं को नशामुक्ति, ईमानदारी, अहिंसा, निर्भीकता एवं शांति जैसे जीवन-मूल्यों को अपनाने का प्रेरक संदेश दिया तथा महिला मंडल द्वारा कन्याओं में संस्कार निर्माण के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। राष्ट्रीय अध्यक्षा सुमन नाहटा ने संकल्प को जीवन-दर्शन बताते हुए सेवा एवं संस्कार आधारित जीवन जीने का आह्वान किया। राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी हेमा जैन ने वर्षभर की गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर लगभग 125 कन्याओं ने गुरुदेव के समक्ष आजीवन तेरापंथ परिवार में बने रहने एवं नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प ग्रहण किया।

पूरे अधिवेशन के सफल संचालन में अभातेममं चीफ ट्रस्टी कनक बरमेचा, राष्ट्रीय अध्यक्षा सुमन नाहटा, महामंत्री रचना हिरण, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी हेमा जैन आदि का विशेष श्रम एवं समर्पण रहा।

संस्कार किसी Mall में नहीं, ज्ञानशाला के माहौल में मिलते हैं

उधना।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में 'मंत्र दीक्षा कार्यशाला एवं किशोर दिवस' के कार्यक्रम का समायोजन हुआ। डॉ. साध्वी परमयशाजी ने अपने उद् बोधन में कहा कि किशोर मंडल 'गहन अंधेरी रात में जो मशाल बन जाते हैं, आने वाले युग में वे ही मिसाल बन जाते हैं।'

अगर आपको कुछ बनना है तो अगरबत्ती ज्यों बन सकते हैं। अगरबत्ती को कोई भी जलाए कभी भी जलाए। अगरबत्ती ज्यों संस्कारों की सौरभ साथ रखे। माचिस की तिली कभी न बने जो थोड़ी-सी घर्षण से जलने लग जाती है। माचिस की तिली ज्यों Angry न बने। Happy person बने। Laughing Buddha घर में सजाते हैं। खुद ही Laughing Buddha बन जाएँ। स्टूडियो में Photo खिंचवाने जाते हैं। 'Please Smile' फोटो ग्राफर कहता है। 15 seconds मुस्कुराने में Photo अच्छी आती है। हर समय smiling करते रहो तो ज़िंदगी की रील Very nice बन जाती है। आज रहन-सहन खान पान वेशभूषा बदल रही है। संस्कार बदल रहे हैं। बुजुर्गों का सम्मान कम हो रहा है। पारम्परिक रीति-रिवाज कम हो रहे हैं। रिश्तों का अपनत्व कम हो रहा है।

किशोर मंडल में Ego Problem का Infection कम हो यही मंगल कामना। संघ का गौरव हैं। परिवार की गरिमा हैं। बालक भगवान के देवदूत हैं। संस्कार किसी Mall में नहीं, Market में नहीं मिलते। संस्कार निर्माण की पहली unit है परिवार। संस्कार सम्पन्न बनने का दूसरा unit है ज्ञानशाला। जहाँ बच्चे जीरो से हीरो बन जाते हैं। मन के मालिक बन जाते हैं। खुद के भाग्य-विधाता बन जाते हैं। एक श्रेष्ठ बालक का निर्माण सौ school से बेहतर है। ज्ञानशाला ज्ञान का मंदिर है। ज्ञानशाला एक दौलत है। एक खजाना है। ज्ञानशाला एक मंगलकलश है। ज्ञानशाला एक चार्जर है। ज्ञानशाला एक कल्पवृक्ष है। ज्ञानार्थी All the Best बने। Ideal बने। साध्वी श्री ने ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा दिलाई। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों ने 'वर्णमाला' पर एक सुंदर प्रस्तुति दी और 'नमस्कार महामंत्र के द्वारा CANCER जैसी महारोग भी ठीक हो सकती है' इस पर भी बहुत ही रोचक व Wonderful Performance नाटक के द्वारा प्रस्तुति दी। किशोर दिवस के अंतर्गत किशोरों ने लघु नाटिका के माध्यम से लौकिक और लोकोत्तर दान की सुंदर प्रस्तुति दी।

अखिल भारतीय कन्या मंडल अधिवेशन में उधना कन्या मंडल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। कार्यक्रम का संयोजन अनिल सिंघवी ने किया और आभार ज्ञापन पीयूष आंचलिया ने किया।

व्यक्तिवाद एवं सुविधावाद को चुनौती देने वाला धर्मसंघ : तेरापंथ

नई दिल्ली।

शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में 267वें तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. सीताराम श्यामसुखा द्वारा मंगलाचरण के साथ हुआ। साध्वी सुव्रताजी ने संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु ने शुभ मुहूर्त में तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की थी। आज तेरापंथ धर्मसंघ व्यापक विस्तार का रूप ले चुका है।

उन्होंने कहा कि तेरापंथ एक नेतृत्व और अनुशासन में रहने वाला, विशुद्ध आचार का पालन करने वाला तथा व्यक्तिवाद एवं सुविधावाद को चुनौती देने वाला धर्मसंघ है। इस संघ में शिक्षा, साहित्य और शोध की त्रिवेणी निरंतर प्रवाहित होती रहती है। संगठन और समर्पण का अद्भुत स्वरूप यहां देखने को मिलता है तथा धर्मक्रांति और धर्मसमन्वय का मंगल दीप निरंतर प्रज्वलित होता रहता है। उन्होंने कहा कि हमें आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे कुशल संचालक एवं संरक्षक प्राप्त हुए हैं, जिनके अनुशासन एवं पावन सान्निध्य में संयम-साधना सतत एवं अनवरत चल रही है। कार्यक्रम में साध्वी सुमनप्रभाजी, साध्वी कार्तिकप्रभाजी एवं साध्वी चिंतनप्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त किए तथा गीतिका का संगान किया। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के शांति जैन, दिल्ली सभा के संगठन मंत्री संजय संचेती, मध्य दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्षा कनक चोपड़ा एवं सुरेश जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन विकास बोथरा ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
31 अगस्त - 06 सितम्बर 2026

संक्षिप्त खबर

उपासक प्रशिक्षण एवं प्रेरणा कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली। कार्यशाला में मुख्य प्रशिक्षक के रूप में उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश श्यामसुखा ने अपनी प्रभावी एवं प्रेरणात्मक शैली में उपासक बनने की प्रक्रिया तथा उपासक की अर्हताओं के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। मुनिश्री उदित कुमारजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि उपासक बनना एक नितांत आध्यात्मिक प्रवृत्ति है। यह आत्मकल्याण के साथ-साथ संघ सेवा में समर्पित भाव से स्वयं को नियोजित करने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि सभी को अपनी रुचि एवं ज्ञान को इस दिशा में अग्रसर करने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम में प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री सुखराज सेठिया, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष विमल कुमार बेंगानी की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन दिल्ली सभा से विकास बोथरा ने किया, जबकि आभार ज्ञापन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रदीप संचेती ने किया।

असीम शक्तियों की कुंजी है - नमस्कार महामंत्र

गदग। दुनिया में अनेक प्रकार के मंत्र है लेकिन नमस्कार महामंत्र अदभुत, अनुपम एवं असीम शक्तियों की कुंजी है। नमस्कार महामंत्र में प्रोटेक्शन पॉवर यानी सुरक्षा शक्ति है तो सोल्यूशन पावर भी है, समाधान की शक्ति भी है ये उद्गारा गदग तेरापंथ भवन में आयोजित मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम में मुनि आलोक कुमारजी ने कहे। इस अवसर पर मुनि हिमकुमारजी ने कहा कि यदि अच्छे भावों के साथ एवं एकाग्रता के साथ हम नमस्कार महामंत्र का जाप करते है तो गति सुधरती है ,आत्मा निर्मल, विशुद्ध होती है। मंत्र दीक्षा के आयोजन मे खासकर गदग, हुब्बल्ली एवं हिरियर के ज्ञानशाला के बालक - बालिकाओं ने पूरे उत्साह से भाग लिया। गदग तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ गदग ज्ञानशाला के द्वारा हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन गदग ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका एवं महिला की अध्यक्ष शोभा संकलेचा ने किया। आभार ज्ञापन सुनीता सालेचा ने किया। इस कार्यक्रम के पश्चात मुनि हिमकुमार जी द्वारा आध्यात्मिक फुटबॉल प्रतियोगिता का भी बहुत ही सफलतापूर्वक आयोजन हुआ।

मंत्र दीक्षा कार्यशाला का आयोजन

शिरपुर। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की प्रेरणा एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वधान मे तेरापंथ युवक परिषद्,शिरपुर द्वारा मंत्र दीक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की शुरुवात ज्ञानशाला प्रशिक्षिका करिश्मा बाफना द्वारा त्रिपदी वंदना एवं नवकार महामंत्र से हुई। युवक परिषद् के अध्यक्ष स्वप्निल गेलडा ने मंत्र दीक्षा के बारे में जानकारी दी। युवक परिषद् के मंत्री कल्पेश गेलडा ने नवकार महामंत्र का चमत्कार एक घटना के द्वारा बताया। युवक परिषद् के पूर्व मंत्री चंद्रशेखर गेलडा भी उपस्थित थे। ज्ञानशाला में कुल 14 ज्ञानार्थी की उपस्थिति रही।

सम्यक्त्व एवं तप साधना का प्रेरक संदेश

सेलम। साध्वी श्री मार्दव श्री जी ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष तथा विभिन्न तिथियों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का विवेचन करते हुए बताया कि जन्म के साथ जुड़े अनेक बाह्य प्रभावों के बीच भी मनुष्य अपने आंतरिक भावों को शुद्ध बनाकर आत्मोन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। अपने प्रेरणादायी प्रवचन में साध्वी संयमलता जी ने सम्यक्त्व को जीवन की वास्तविक दिशा एवं आत्मकल्याण का आधार बताया। आपने कहा कि सम्यक्त्व का उदय व्यक्ति के विचारों, व्यवहार और भावों में पवित्रता लाता है। भावशुद्धि, हृदय-परिवर्तन एवं सम्यक् दृष्टि के माध्यम से जीवन में संतुलन, शांति और प्रकाश का संचार होता है। तप तभी सार्थक बनता है जब उसके साथ सम्यक्त्व और अंतर्मन की निर्मलता जुड़ जाए। आपने सभी को अपने जीवन में सम्यक्त्व को विकसित कर आत्मविकास की दिशा में सतत प्रयासरत रहने की प्रेरणा दी। प्रवचन के उपरांत साध्वी श्री द्वारा मंगलमय तप-अनुमोदना गीत का संगान किया गया।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का स्थानांतरण समारोह

चेम्बूर।

तेरापंथ युवक परिषद्, चेम्बूर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर (ATDC) के स्थानांतरण समारोह ने सेवा के क्षेत्र में एक नया इतिहास रच दिया। यह अवसर केवल तेरापंथ युवक परिषद् के लिए ही नहीं, बल्कि तेरापंथ सभा, चेम्बूर ट्रस्ट एवं सम्पूर्ण चेम्बूर समाज के लिए सेवा का एक स्वर्णिम अध्याय बन गया। कार्यक्रम पूज्य साध्वी निर्वाणश्रीजी आदि ठाणा-6 के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। साध्वीश्रीजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि आचार्य तुलसी के नाम से जुड़ा यह सेवा प्रकल्प उनके मानवीय दृष्टिकोण एवं सेवा-दर्शन का साकार स्वरूप है।

उन्होंने इस सेवा अभियान को सफल बनाने वाले सभी कार्यकर्ताओं, सहयोगियों एवं दानदाताओं के प्रति मंगलकामनाएँ व्यक्त कीं। मुख्य अतिथि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने कहा कि मुंबई के कार्यकर्ता केवल आयोजन तक सीमित नहीं रहते, बल्कि प्रत्येक सेवा उपक्रम को समर्पण, संगठन शक्ति एवं सेवाभाव के साथ साकार कर धर्मसंघ की प्रभावना करते हैं। उन्होंने कहा कि ATDC आज चेम्बूर की एक विशिष्ट पहचान बन चुका है तथा पूर्व अध्यक्ष संदीप कोठारी जैसे अनुभवी कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन में परिषद् निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त कर रही है।

तेरापंथ सभा, चेम्बूर के अध्यक्ष लक्ष्मण ने सभा की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत का आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया। पूर्व ABTYP अध्यक्ष किशन डागलिया ने कहा कि 'साध्वी निर्वाणश्रीजी को 'निर्माणश्रीजी' कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।' उन्होंने कहा कि साध्वीश्री अपने प्रेरक व्यक्तित्व से कार्यकर्ताओं में सेवा, समर्पण एवं आध्यात्मिक चेतना का सतत संचार करती रहती हैं। स्थानीय महिला मंडल अध्यक्षा ममता कच्छारा तथा तेरापंथ युवक परिषद्, चेम्बूर के अध्यक्ष हिमांशु गन्ना ने भी अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के साहित्य प्रचारक प्रकाश धाकड़ एवं नवनीत चौधरी विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन पूर्व अध्यक्ष रमेश धोका ने किया। मुंबई सभा अध्यक्ष सुरेन्द्र कोठारी एवं कोषाध्यक्ष रिंकू बापना की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

तेरापंथ युवक परिषद्, चेम्बूर के मंत्री कपिल मेहता ने संत-सान्निध्य, सभी अतिथियों, दानदाताओं, सहयोगियों एवं उपस्थित जनसमुदाय के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

भीतर सुप्त पड़े पौरुष, संस्कार और चेतना को जागृत करने वाला पर्व : चातुर्मास

सिकंदराबाद।

आस्था, अनुशासन और आध्यात्मिक ऊर्जा का अभूतपूर्व संगम उस समय देखने को मिला, जब युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी एवं सहवर्ती मुनि काव्य कुमारजी के चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के अवसर पर सिकंदराबाद में भव्य 'योगक्षेम रैली' निकाली गई।

सभा को संबोधित करते हुए मुनि दीप कुमारजी ने कहा— 'चातुर्मास केवल चार महीनों का ठहराव नहीं, बल्कि हमारे भीतर सुप्त पड़े पौरुष, संस्कार और चेतना को जागृत करने वाला महाविस्फोट है। आज का मनुष्य धन, सुविधा और प्रतिष्ठा की अंधी दौड़ में स्वयं को भूलता जा रहा है। ऐसे समय में चातुर्मास आत्मचिंतन, आत्मसंयम और आत्मपरिवर्तन का दिव्य अवसर लेकर आता है।' उन्होंने आगे कहा कि चातुर्मास धर्मध्यान, स्वाध्याय, त्याग, तप, संयम और ज्ञानार्जन का स्वर्णिम काल है। प्रत्येक व्यक्ति को नियमित प्रवचन श्रवण, साधना, तपस्या एवं आत्मविकास का संकल्प लेकर इस अवसर का अधिकतम लाभ उठाना चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में प्रत्येक कार्य गुरु आज्ञा से ही सम्पन्न होता है। हम भी परम पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की आज्ञा से चातुर्मास हेतु यहाँ पधारे हैं। गुरुदेव की प्रेरणा से मनाया जा रहा 'योगक्षेम वर्ष' सम्पूर्ण धर्मसंघ के आध्यात्मिक उत्थान का प्रेरणास्रोत सिद्ध होगा। अपने उद्बोधन में मुनि काव्य कुमारजी ने कहा कि चातुर्मास आत्मशुद्धि, संस्कार संवर्धन और जीवन-परिवर्तन का पर्व है। यदि प्रत्येक व्यक्ति इन चार महीनों में अपने जीवन में एक श्रेष्ठ परिवर्तन का संकल्प ले ले, तो उसका जीवन भी बदल सकता है और समाज भी।

स्वागत उद्बोधन तेरापंथी सभा,अध्यक्ष सुशील संचेती ने दिया। तेयुप अध्यक्ष विनोद दूगड़, तेमम अध्यक्ष नमिता सिंघी, TPF अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल सहित अनेक गणमान्यजनों ने अपने प्रेरक विचार एवं भावपूर्ण गीतों की प्रस्तुतियाँ दीं। चेन्नई से पधारे पल्लावरम के सभा अध्यक्ष दिलीप भंसाली अपने भावपूर्ण विचार प्रकट किए। कार्यक्रम का प्रभावशाली एवं गरिमामय संचालन लक्ष्मीपति बैद ने किया।

तेरापंथ मेरा पंथ कार्यशाला का सफल आयोजन

शिरपुर।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशन मे तेरापंथ सभा,शिरपुर द्वारा 'तेरापंथ मेरा पंथ' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला प्रशिक्षक सूरत से पधारे अर्जुन मेडतवाल (प्रवक्ता उपासक) ने नमस्कार महामंत्र का मंगल उच्चारण करते हुए कार्यशाला का शुभारंभ करवाया। उसके पश्चात तेरापंथ महिला मंडल ने भिक्षु अष्टकम से मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष पंकज गेलडा ने स्वागत वक्तव्य दिया।

कार्यशाला में मार्गदर्शन देते हुए प्रशिक्षक मेडतवाल ने कहा - आचार्य भिक्षु हमारे आराध्य हैं। उन्होंने आगमों का गहन अध्ययन किया। धर्म क्षेत्र में व्याप्त शिथिलाचार को समाप्त करने का उन्होंने बीड़ा उठाया। उन्होंने जैन धर्म का जो विशुद्ध रूप जनता के सामने रखा उसीका नाम है तेरापंथ। वर्तमान वर्ष आचार्य श्री भिक्षु का जन्म त्रिशताब्दी वर्ष है। इस अवसर पर हमें तेरापंथ के दर्शन को गहराई से समझना चाहिए। उन्होंने जैन तत्व दर्शन तथा दान-दया के दो पक्ष लौकिक और लोकोत्तर के बारे में विस्तृत प्रकाश डाला। शुद्ध साध्य की प्राप्ति के लिए शुद्ध साधन की आवश्यकता व प्रतिमा पूजा के संबंध में तेरापंथ के दृष्टिकोण को भी विस्तार से प्रस्तुत किया।

उन्होंने भिक्षु स्वामी के 3 दृष्टांत के जरिए धर्म की परिभाषा को सरल भाषा में समझाया।आगे जिज्ञासा समाधान का रोचक क्रम चला। तेरापंथ सभा के मंत्री दिनेश गेलडा ने आभार ज्ञापन किया। मंगल पाठ के साथ कार्यशाला सम्पन्न हुई। मंच संचालन कल्पेश गेलडा ने किया।

नेत्रदान जागरूकता पुस्तक का हुआ लोकार्पण

बीरगंज, नेपाल।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के सेवा आयाम नेत्रदान प्रकल्प के अंतर्गत नेत्रदान जागरूकता के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक पहल करते हुए पहली बार हिंदी भाषा के अतिरिक्त नेपाली भाषा में तैयार की गई। नेत्रदान जागरूकता पुस्तक का लोकार्पण अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अभिनंदन जी नाहटा द्वारा विज़न फॉर विशनलेस 2.0 के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद्, बीरगंज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अभिनंदन नाहटा, आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल प्रकल्प के राष्ट्रीय प्रभारी एवं बीरगंज शाखा प्रभारी सुमित कोठारी, नेत्रदान आयाम के राष्ट्रीय सलाहकार सुनील दुगड़, स्थानीय संघ संस्था के पदाधिकारीगण एवं नेपाल के विशिष्ट गणमान्यजनों की गरिमामयी उपस्थिति रही। नेत्रदान के प्रति जन-जागरूकता को व्यापक स्तर तक पहुँचाने के उद्देश्य से तैयार की गई यह पुस्तक नेपाली भाषा में सरल एवं सहज रूप से नेत्रदान के महत्व, इसकी आवश्यकता तथा समाज के प्रति इसके मानवीय दायित्व को प्रस्तुत करती है।

विज़न फॉर विशनलेस 2.0

किशोर एव बच्चो का जीवन संस्कार संपन्न हों

नोखा।

तेरापंथ युवक परिषद नोखा द्वारा बच्चों की मंत्र दीक्षा एवं जैन संस्कार विधि से जन्मदिवस का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में धर्म, संस्कार एवं व्यक्तित्व निर्माण पर आधारित विविध प्रेरणादायी प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिन्होंने उपस्थित सभी को प्रेरित किया।उपासक सुरेश बाफना ने कहा बच्चो में नैतिकता एवम सेवा भावना का विकास हो। बच्चो की मंत्र दीक्षा उपासक कांतिभाई मेहता ने प्रदान करते हुए व्यसन मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। जैन विधि संस्कारक इंद्रचंद बैद एवं हंसराज भूरा ने मंत्रोंचार के साथ संपन्न किया।

तेयुप अध्यक्ष गजेन्द्र पारख ने अभिभावकों से निवेदन किया की बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बच्चों को नियमित ज्ञानशाला में भेजें। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेयुप अध्यक्ष गजेन्द्र पारख ने किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

गृह प्रवेश

■ **गाँधीनगर दिल्ली।** सुजानगढ़ निवासी दिल्ली राजगढ़ कॉलोनी प्रवासी ऋषभ कोठारी संस्कारक - संस्कारक महेन्द्र कुमार श्यामसुखा व प्रशिक्षु संस्कारक कुलदीप बुच्चा ने पुरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से सानन्द संपादित करवाया।

प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **गाँधीनगर दिल्ली।** राकेश पुगलिया व उनके सहयोगी प्रवीण फूलफगर व राजेंद्र हीरावत के नूतन प्रतिष्ठान (MS/- ALLORA) का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से उपासक संस्कारक मनीष छलाणी व हेमराज राखेचा ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

आचार्य भिक्षु : सत्य, संयम, त्याग और दृढ़ संकल्प की अनुपम मिशाल

दिल्ली।

अणुव्रत भवन में आचार्य भिक्षु के 301वें जन्म दिवस के उपलक्ष में भिक्षु जन्मोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समागत जनसमुदाय को संबोधित करते हुए शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ने कहा कि हम बहुत सौभाग्यशाली हैं कि हमें आचार्य भिक्षु द्वारा संचालित प्राणवान तेरापंथ धर्मसंघ मिला है। इस संघ में शालीन परंपराएं, सुदृढ़ मर्यादाएं एवं सुव्यवस्थित व्यवस्थाएं विद्यमान हैं। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु सत्य के पक्षधर और दृढ़ संकल्प के धनी थे। विरोध की आंधी और तूफानों के बीच भी वे दृढ़ता से खड़े रहने वाले महापुरुष थे। वे जन्म से ही अनेक विशेषताओं को अपने साथ लेकर आए थे। उनके जन्म के समय शुभ शकुन हुए। उनके बाएं पैर में ऊर्ध्वरेखा, दाएं हाथ में मत्स्य रेखा एवं मणिबंध रेखाएं थीं। ललाट पर तीन आड़ी रेखाएं, नाभि पर स्वस्तिक रेखा तथा वक्षस्थल पर छत्राकृति का चिह्न था। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु का जीवन ज्योतिर्मय था। शुद्धाचार के पालन के लिए उन्होंने गुरु का साया छोड़ा। आहार, पानी, स्थान और पथ की अनेक समस्याओं को उन्होंने हंसते-हंसते सहन किया। अपने सिद्धांतों को लोगों को समझाने के लिए उन्होंने पूरी-पूरी रात भ्रमण किया। उनका जीवन सत्य, संयम, त्याग और दृढ़ संकल्प का प्रेरणास्रोत रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ 'सुगुरु को वंदन वारंबार' आचार्य प्रवर द्वारा रचित गीत के संगान के साथ हुआ। शासनश्री साध्वी सुमनप्रभाजी एवं साध्वी चिन्तनप्रभाजी ने आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हुए उनके जीवन से जुड़ी प्रेरक घटनाओं का वर्णन किया और श्रद्धासुमन अर्पित किए। साध्वी कार्तिकप्रभाजी ने सुमधुर स्वर में संगान प्रस्तुत करते हुए आचार्य भिक्षु के चरणों में श्रद्धासिक्त अभिवंदना अर्पित की। कार्यक्रम में विकास परिषद के संयोजक मांगीलाल सेठिया, दिल्ली सभा अध्यक्ष विमल बैंगाणी, मध्य दिल्ली तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा कनक चोपड़ा तथा मांगीलाल भडला सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

आचार्य भिक्षु अभय पुरुष थे

सिकंदराबाद।

पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी एवं सहवर्ती संत मुनि काव्य कुमारजी के सानिध्य में समारोह आयोजित किया गया। आयोजन तेरापंथी सभा सिकंदराबाद द्वारा किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री भिक्षु के चरणों में श्रद्धा अर्पित करते हुए उनके त्याग, तप, अनुशासन एवं शुद्ध साधना के आदर्शों को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। मुनि दीप कुमारजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि 'आचार्य भिक्षु अभय पुरुष थे। उन्होंने सत्य और सिद्धांतों के लिए कभी किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। विपरीत परिस्थितियों में भी वे निर्भीक रहकर धर्म की शुद्धता, साधना की पवित्रता और मर्यादा की रक्षा में अडिग रहे। उनका जीवन त्याग, तप, आत्मानुशासन और निडरता का अनुपम उदाहरण है। आचार्य भिक्षु का व्यक्तित्व हमें सिखाता है कि सिद्धांतों पर दृढ़ रहकर ही जीवन को महान बनाया जा सकता है।'

आचार्य श्री भिक्षु केवल तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक ही नहीं, बल्कि सत्य, साहस, आत्मानुशासन और सिद्धांतनिष्ठा के साकार प्रतीक थे। उनका सम्पूर्ण जीवन हमें यह संदेश देता है कि जो व्यक्ति सत्य के मार्ग पर दृढ़ रहता है, उसे किसी भी परिस्थिति से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं होती। आचार्य भिक्षु वास्तव में अभय पुरुष थे। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु ने अपने जीवन में कभी भी सुविधा, लोकप्रियता अथवा किसी प्रकार के दबाव के कारण सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। जब-जब धर्म की शुद्धता, साधना की पवित्रता और मर्यादाओं की रक्षा का प्रश्न आया, तब-तब उन्होंने अद्भुत निर्भीकता, आत्मबल और अटल संकल्प का परिचय दिया। विपरीत परिस्थितियाँ, विरोध, संघर्ष और अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ भी उनके कदमों को डिगा नहीं सकीं। वे सत्य के पथ पर अडिग रहे और अपने आचरण से यह सिद्ध कर दिया कि सिद्धांतों पर चलने वाला व्यक्ति कभी पराजित नहीं होता। मुनि काव्य कुमारजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'आचार्य भिक्षु केवल एक महान संत ही नहीं, बल्कि युगदृष्टा एवं क्रांतिकारी चिंतक थे। उन्होंने धर्म को आडंबरों से मुक्त कर आत्मशुद्धि, संयम, समता और साधना का सरल एवं वैज्ञानिक मार्ग प्रदान किया।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

युवाचार्य प्रवर की गुरुनिष्ठा अद्भुत है

राजलदेसर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या शासनश्री साध्वी मानकुमारीजी के पावन सान्निध्य में युवाचार्य मनोनयन वर्धापना समारोह एवं तप अभिनन्दन समारोह का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी मानकुमारीजी ने उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य के कई कई प्रमुख कार्य बताए गए हैं उनमें एक सर्वोपरि कार्य है भावी आचार्य का निर्णय करना, अपने उत्तराधिकारी का चयन करना। अपने उत्तराधिकारी का चयन करने से पूर्व आचार्य पूरे धर्मसंघ पर दृष्टि डालते हैं, जिसे युवाचार्य बनाना होता है उसे खूब जांचते-परखते हैं और फिर जिस पर पूरा भरोसा होता है निश्चिंत होकर उत्तराधिकारी घोषित करते हैं। आचार्य प्रवर ने आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी सम्पन्नता समारोह एवं योगक्षेम वर्ष के पावन अवसर पर जैन विश्व भारती के विशाल प्रांगण सुधर्मा सभा में चतुर्विध धर्मसंघ के बीच मुख्य मुनि महावीर कुमार जी को युवाचार्य पद पर शोभित कर धर्मसंघ को निश्चिंतता, सुदृढता प्रदान की। युवाचार्यश्री की विनम्रता, समर्पण भावना और गुरुनिष्ठा ने आचार्य प्रवर का दिल जीत लिया। छोटे से गांव फलसूंड के बालक महावीर का तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् युवाचार्य पद पर मनोनयन होना अपने आप में गर्व की बात है। शासनश्री साध्वी जी ने मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा कि युवाचार्य प्रवर निरामय रहें, स्वस्थ रहें एवं उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास करते रहें। इस अवसर पर साध्वीवृंद ने सामुहिक गीत, साध्वी कीर्तिरेखाजी ने कविता के द्वारा युवाचार्य प्रवर के प्रति अध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की, महिला मंडल के द्वारा सामुहिक गीत एवं सभा मंत्री ने वक्तव्य के द्वारा मंगलकामना प्रेषित की। 11 वर्षीय नन्हे बाल तपस्वी जयंत विनायक को 11 दिवसीय तप करने पर आज साध्वीश्री जी दर्शन कराए गए। बाल तपस्वी जयंत विनायक के तप अनुमोदना कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी जी ने कहा जयन्त का मनोबल बहुत मजबूत है। इसने जो सोचा वो कर दिखाया।

विवेक सम्पन्न, श्रमशील, श्रुत आराधक– युवाचार्य प्रवर

राजराजेश्वरी नगर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनीत कुमार जी ठाणा -2 एवं मुनि आकाश कुमार जी ठाणा -2 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के नवनियुक्त युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी का वर्धापना समारोह श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा विजयनगर एवं राजराजेश्वरी नगर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिवृन्द द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। मुनि विनीत कुमार जी ने कहा 2001 में गंगाशहर के मर्यादा महोत्सव में पिता सवाईसिंह एवं पुत्र महावीर की जोड़ी ने भावपूर्ण जोशीले अंदाज में गीत गाकर दीक्षा की अनुनय-विनय प्रस्तुत किया। दीक्षा उपरांत आचार्य महाप्रज्ञ जी ने युवाचार्य महाश्रमण जी से कहा कि महावीर मुनि को सदैव अपने साथ रखना। युवाचार्य श्री एक विवेक सम्पन्न, श्रमशील, श्रुत आराधक, अप्रमत्त अवस्था के आराधक एवं सुशिष्य थे। उन्होंने आचार्य तुलसी के भी कुछ गुण अपनाएं। बच्चों पर विशेष ध्यान देते हैं।

मुनि आकाश कुमार जी ने कहा कि योग्य उत्तराधिकारी का चयन आचार्य का मुख्य दायित्व होता है। गुरु की दृष्टि फिल्टर की तरह अपने शिष्यों का सर्वांगीण परीक्षण कर योग्यतम शिष्य के हाथों में संघ के भावी की बागडोर सौंपने का निर्णय लेती है। कुछ शब्द ब्रह्मवाक्य बन जाते हैं। 27 जुलाई को जब आचार्य महाश्रमण जी ने कहा 'आओ मुनि महावीर' तो ऐसा ही प्रतीत हुआ। बालसभा कहुं या सहपाठी, 11 वर्ष तक हम साथ में अध्ययनरत रहे। मुनि महावीर जहां पढ़ाई में सदा अव्वल रहे वहीं गुरु के प्रति अद्भुत श्रद्धा एवं समर्पण उनका वैशिष्ट्य है। सद्भाव उनका सहज गुण हैं। वे शुरू से ही शांत, सकारात्मक सोच के धनी, अन्तर्मुखी, देव-गुरु-धर्म के प्रति आस्थावान रहे हैं। मुनि पुनीत कुमार जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति में आरम्भिक वर्षो का जिक्र किया। तेरापंथ सभा राजराजेश्वरी नगर के सभाध्यक्ष कमलसिंह दुगड़ ने सभी का स्वागत करते हुए सान्निध्य प्रदान करने हेतु मुनि विनीत कुमार जी के प्रति अनंत कृतज्ञता ज्ञापित की।

ट्रस्ट के अध्यक्ष राकेश छाजेड़, तेयुप अध्यक्ष सरल पटावरी, तेममं अध्यक्ष मंजु बोथरा, अभातेयुप से दिनेश मरोठी, महासभा के उपाध्यक्ष प्रकाश लोढ़ा, गांधीनगर आदि सभी ने युवाचार्य वर्धापना हेतु आचार्य प्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए युवाचार्य श्री के भावी जीवन के उत्तरोत्तर उन्नयन की मंगल भावनाएं प्रेषित की। सुव्यवस्थित मंच संचालन मुनि हितेन्द्र कुमार जी ने किया। आर आर नगर सभा के मंत्री अमित नौलखा ने आभार ज्ञापन किया।

तेरापंथ बगिया का नया गौरव - युवाचार्य श्री महावीर

चिक्कमगलुर।

युगप्रधान शांतिदूत महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पुण्ययशाजी के सान्निध्य में तेरापंथ के नवनिर्वाचित युवाचार्य श्री महावीर कुमारजी का वर्धापना -अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वी पुण्ययशाजी ने अपने मंगल उदबोधन में कहा-तेरापंथ बगिया के कुशल गणमालि के चिंतन में भविष्य की निष्पत्तियो की गीत गूंजते रहते है।आचार्य श्री महाश्रमणजी एक अद्वितिय अनुपमेय धर्मसंघ के सारथि है,आचार्य है। तेजस्वी धर्मसंघ के तेजस्वी आचार्य श्री की कृपा से तेरापंथ धर्मसंघ के युवाचार्य श्री महावीर के रूप में एक कोहिनूर हिरा प्राप्त हुआ है। एक धीर, गंभीर,सहनशील,आचारनिष्ठ, प्रतिभा संपन्न,श्रुताराधक डॉ.युवाचार्य को पाकर आज यह धर्मसंघ गौरवान्वित है।आनेवाला कल निश्चित ही सुनहरा होगा। साध्वी विनितयशाजी एवं साध्वी बोधि प्रभाजी ने गीतिका-कविताके माध्यम से युवाचार्य श्री का वर्धापन किया गया।

साधना, अनुशासन, विनम्रता और नेतृत्व का प्रेरक संगम : युवाचार्य प्रवर

बेंगलुरु।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गांधीनगर के तत्वावधान में परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुयोग्य उत्तराधिकारी युवाचार्य श्री महावीर कुमारजी स्वामी का वर्धापना समारोह साध्वी पावनप्रभाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ संपन्न हुआ ।कार्यक्रम के शुभारंभ में साध्वी पावनप्रभाजी ने श्रद्धालुओं को सवा लाख 'उवज्झायाणं' मंत्र जप का सामूहिक जाप करवाया। अपने मंगल उद्बोधन में साध्वी पावनप्रभाजी ने युवाचार्यश्री के जीवन से विनय, समर्पण, साधना एवं पुरुषार्थ की प्रेरणा ग्रहण करने का संदेश देते हुए सभी को धर्ममय जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हुए सर्वप्रथम परम पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के श्रीचरणों में श्रद्धापूर्वक वंदन अर्पित करते हुए कहा कि उनकी दिव्य प्रेरणा से राजस्थान के छोटे से ग्राम फलसूंड का एक बालक दीक्षित होकर साधना-पथ पर अग्रसर हुआ। परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में विनय, समर्पण, आज्ञा-निष्ठा और अथक पुरुषार्थ के बल पर वह साधक निरंतर आगे बढ़ता गया और साधना की तलहटी से शिखर तक पहुँचकर आज युवाचार्य पद की गरिमामयी जिम्मेदारी का निर्वहन कर रहे है। परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समर्पित, विनीत,श्रुत-आराधक,विद्वान एवं पुरुषार्थी संत को उत्तराधिकार सौंपकर भिक्षु शासन को नई दिशा और सुदृढ़ नेतृत्व प्रदान किया है। युवाचार्य श्री महावीर कुमारजी पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त करने वाले प्रथम युवाचार्य हैं। उनका व्यक्तित्व ज्ञान, साधना, अनुशासन, विनम्रता और नेतृत्व का प्रेरक संगम है। इस अवसर पर युवाचार्यश्री के जीवन के महत्वपूर्ण पड़ावों का भी उल्लेख किया गया। उनका जन्म 19 जून, दीक्षा 3 मार्च तथा युवाचार्य पद पर मनोनयन 27 जुलाई को हुआ। इन तिथियों के आध्यात्मिक एवं प्रेरणादायी महत्व पर प्रकाश डालते हुए उनके उज्ज्वल व्यक्तित्व और भविष्य के नेतृत्व की मंगलकामना की गई। इस अवसर पर साध्वी उन्नतयशाजी ने युवाचार्यश्री के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर श्रद्धामयी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। तत्पश्चात साध्वी पावनप्रभाजी, साध्वी आत्मयशाजी, साध्वी उन्नतयशाजी,साध्वी रम्यप्रभाजी द्वारा सामूहिक मंगलगीत का भावपूर्ण संगान किया गया। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष प्रकाश बाबेल ने स्वागत वक्तव्य दिया। महासभा उपाध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि प्रकाश लोढ़ा तथा अणुविभा उपाध्यक्ष कैलाश बोराणा,अभातेयुप संगठन मंत्री रोहित कोठारी,महासभा सदस्य नवनीत मुथा, तेयुप अध्यक्ष विनोद कोठारी, महिला मंडल अध्यक्ष लक्ष्मी बोहरा, टीपीएफ अध्यक्ष पुष्पराज चोपड़ा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित बाबेल, पारमार्थिक शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष बजरंग जैन ने अपनी भावनाएं व्यक्त की ।कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री सुभाष पोखरणा ने तथा आभार सुरेश मांडोत ने दिया।

युवाचार्य प्रवर -गुरुभक्ति व विनम्रता की 'साक्षात मूर्ति'

कटक।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में नवमनोनीत युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी का वर्धापना समारोह श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कटक के तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा पूज्य प्रवर नेआचार्य श्री भिक्षु के 301वें जन्मदिवस की मंगल बेला में चतुर्विध धर्मसंघ की साक्षी में मुख्यमुनिश्री महावीर कुमार जी को अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य पद पर मनोनीत कर धर्मसंघ को समर्थ नेतृत्व प्रदान किया है। मुनिश्री ने युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि गुरु के प्रति उनकी अटूट निष्ठा, विनम्रता, समर्पण, प्रमोदभाव तथा सेवाभाव हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। मुनिश्री भव्य कुमार जी ने कहा कि फलसूंड जैसे छोटे से गाँव से प्रारंभ हुई यह साधना-यात्रा आज गुरु-समर्पण, सहजता, सरलता, विनम्रता एवं उत्कृष्ट गुणों से सुशोभित होकर युवाचार्य पद तक पहुँची है। मंगलकामनाएँ व्यक्त कीं।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

पूज्य प्रवर ने कहा 'चौथे आरा का साधु है'

तिरुपुर।

स्थानीय तेरापंथ भवन, तिरुपुर में परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य, नवमनोनीत युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापना समारोह का भव्य एवं गरिमामय आयोजन साध्वी सिद्ध प्रभा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में किया गया।

यह विशेष कार्यक्रम संघ की एकता, अखंडता और अक्षुण्णता की आराधना को समर्पित रहा, जिसमें श्रद्धालुओं ने भारी उत्साह के साथ भाग लिया। समारोह को संबोधित करते हुए साध्वी सिद्धप्रभा जी ने युवाचार्य पद की गरिमा और तेरापंथ धर्मसंघ की अनूठी परंपरा पर प्रकाश डालते हुए अपने मार्मिक विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि अन्य स्थानों पर पद और कुर्सी प्राप्त करने की होड़ लगी रहती है, जहाँ अध्यक्ष पद हेतु वोटिंग तक होती है और अजीब दृश्य देखने को मिलते हैं। परंतु तेरापंथ की परंपरा अत्यंत अनोखी है; यहाँ अनेक आचार्यों की परंपरा नहीं है। गुरु-मुख से जो वचन निकल जाता है, वही पूरे संघ के लिए शिरोधार्य होता है।

साध्वी श्री ने मुनि श्री महावीर कुमार जी के दीक्षा काल का स्मरण करते हुए बताया कि आचार्य प्रवर ने दीक्षा के समय ही फरमाया था कि 'वो चौथे आरा का साधु है' और गुरु-दृष्टि से ही व्यक्तित्व में निखार आता है। संघ में दीक्षित होने वाले अत्यंत सौभाग्यशाली होते हैं, क्योंकि तेरापंथ की जन्मघुट्टी एक ऐसा वरदान है, जहाँ कोई भी योग्य बन जाता है। उन्होंने आगे कहा कि संघ में दायित्व सौंपने हेतु हर दृष्टि से परख की जाती है, जिसमें विनय, समर्पण और सहिष्णुता सर्वोपरि हैं। तेरापंथ का ताज वास्तव में कांटों का ताज है। संघ को एक अमूल्य हीरा प्राप्त हुआ है, जो ऊर्जा और शक्ति के निरंतर स्रोत हैं।

कार्यक्रम में साध्वी दीक्षाप्रभा जी ने अपने ओजस्वी विचारों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ सभा अध्यक्ष रंजित बरड़िया शामिल रहे। कार्यक्रम का सुव्यवस्थित एवं सफल संचालन साध्वी दीक्षाप्रभा जी द्वारा किया गया।

लिखा जितना जाए कम है – ऐसे हैं हमारे युवाचार्य श्री

उधना।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या डॉ. साध्वी श्री परमयशा जी (ठाणा 4) के सानिध्य में समारोह आयोजित किया गया। उनके प्रेरणादायी उद्बोधन ने समस्त उपस्थितजनों के हृदय में आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार कर दिया।

डॉ. साध्वी परम यशा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य प्रवर द्वारा मुख्य मुनि को युवाचार्य के रूप में मनोनित करना एक ऐतिहासिक एवं अद्वितीय घटना है। उन्होंने इस प्रसंग को गौरव, गर्व और आध्यात्मिक उत्कर्ष का प्रतीक बताया। उन्होंने भावपूर्ण शब्दों में व्यक्त किया कि एक साधारण भूमि पर जन्म लेकर, तप, त्याग और साधना से युक्त एक सुकुमार संत का युवाचार्य पद तक पहुँचना तेरापंथ धर्मसंघ की महान परंपरा का जीवंत उदाहरण है।

यह केवल एक पद परिवर्तन नहीं, बल्कि भिक्षुबोधि दिवस के पुनर्जागरण का संदेश है। उन्होंने यह भी प्रेरणा दी कि संसार में अनेक जन्म होते हैं, परंतु कुछ विरले ही ऐसे होते हैं जो समाज और धर्म के लिए कल्पवृक्ष बन जाते हैं। युवाचार्य श्री महावीर कुमार स्वामी का व्यक्तित्व उसी दिव्यता का प्रतीक है, जिनके प्रति जितना लिखा जाए, उतना कम है।

यह आयोजन केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि तेरापंथ धर्मसंघ की उज्ज्वल परंपरा, अनुशासन एवं आध्यात्मिक नेतृत्व की गौरवगाथा का सजीव चित्रण था। उपस्थित सभी श्रद्धालुओं के मन में अपार हर्ष, गर्व और प्रेरणा का संचार हुआ। अंत में सभी ने नव-मनोनित युवाचार्य श्री के प्रति अपनी मंगलकामनाएँ अर्पित करते हुए उनके उज्ज्वल, प्रेरणादायी एवं धर्मप्रभावना से परिपूर्ण भविष्य की कामना की।

विनम्रता, विनयता का उज्ज्वल प्रतीक युवाचार्य श्री महावीर

केसिंगा।

तेरापंथ भवन में मुनि हिमांशु कुमार जी एवं मुनि हेमंत कुमार जी के पावन सान्निध्य में युवाचार्य वर्धापना दिवस का गरिमामय आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम उड़ीसा स्तरीय रूप में आयोजित हुआ। तेरापंथ धर्मसंघ की पहचान उसकी सुदृढ़ एक आचार्यीय व्यवस्था, अनुशासन और गुरु-परंपरा से रही है। धर्मसंघ की स्थापना महामना आचार्य श्री भिक्षु द्वारा की गई और उनके द्वारा आचार्य श्री भारमलजी को युवाचार्य के रूप में चुने जाने से उत्तराधिकार की यह परंपरा आगे बढ़ी। कालांतर में आचार्यों ने अपने योग्य उत्तराधिकारी का चयन युवाचार्य अथवा अन्य उपयुक्त व्यवस्था के माध्यम से किया। वर्तमान में यह गौरवशाली परंपरा युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के शासनकाल में भी निरंतर गतिमान है। तेरापंथ में युवाचार्य का पद आचार्य के बाद अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह केवल पद की प्रतिष्ठा नहीं, बल्कि संघ की भावी व्यवस्था, नेतृत्व और गुरु-परंपरा की निरंतरता से जुड़ा दायित्व है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी भी– आचार्य श्री तुलसी जी द्वारा युवाचार्य नियुक्त किए गए थे और आगे चलकर तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य बने। इसी प्रकार आचार्य श्री महाश्रमण जी को भी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अपना उत्तराधिकारी बनाते हुए युवाचार्य नियुक्त किया था। इसी गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाते हुए लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर में आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मुख्यमुनि श्री महावीर कुमार जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित करते हुए युवाचार्य पद पर नियुक्त किया। कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ सभा के अध्यक्ष रामकुमार जैन, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष रश्मि देवी जैन, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अभिषेक जैन सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने अपने भाव व्यक्त किए। वक्ताओं ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा युवाचार्य की नियुक्ति केवल एक व्यक्ति को उत्तरदायित्व सौंपने की यह कोई साधारण घटना नहीं, बल्कि तेरापंथ की सुदृढ़ गुरु-परंपरा, अनुशासन और भविष्य की संघ-व्यवस्था के प्रति दूरदर्शी सोच का परिचायक है। कार्यक्रम में मुनि हेमंत कुमार जी ने अपने प्रेरणादायी वक्तव्य से उपस्थित जनसमुदाय को अनुगृहीत किया। उन्होंने युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के व्यक्तित्व, गुणों, साधना, विनम्रता एवं संघ के प्रति उनकी समर्पित भावना पर प्रकाश डाला। मुनिश्री ने युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी तथा गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के साथ बिताए अपने अनुभवों को भी साझा किया।

अशुभ कर्मों का अंत-शुभ जीवन का प्रारंभ-लोगस्स कल्प

गंगाशहर।

तेरापंथ सभा के तत्वाधान में साध्वी त्रिशलाकुमारी जी के सान्निध्य में "लोगस्स कल्प अनुष्ठान" का आयोजन किया गया। साध्वी त्रिशलाकुमारी जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा - आज हर व्यक्ति समस्या से ग्रस्त है। कोई शारीरिक समस्या से परेशान है तो कोई मानसिक समस्या से। कोई आर्थिक समस्या से जूझ रहा है तो कोई पारिवारीक समस्या से आक्रान्त है। शारीरिक मानसिक समस्या वाला डॉक्टरों के चक्कर लगता है तो आर्थिक व पारिवारीक समस्या वाला ज्योतिषियों देवी देवताओं के पास अपनी समस्याओं का समाधान खोजता है। साध्वीश्री ने कहा सबसे पहले हमें ये समझना होगा कि हमारे जीवन में समस्या आती क्यों है ? यदि हम कर्मशास्त्र की दृष्टि से देखे तो समस्या का मूल कारण है हमारे अशुभ कर्म। जब अशुभ कर्म का उदय होता है तो हमारे जीवन में समस्या आती है। अशुभ कर्मो को दूर करने का एक मात्र साधन है अध्यात्म।

हमारे तीर्थंकरों ने गणधरों ने आचार्यों ने ऐसे-ऐसे मंत्रो का तंत्रो का निमार्ण किया है जिनके द्वारा न केवल समस्याओं से मुक्त हो सकते अपितु शारीरिक मानसिक दृष्टि से शक्तिशाली भी बन सकते है। आज हम "लोगस्स कल्प" का अनुष्ठान करने जा रहे हैं। वर्तमान परिपेक्ष्य में यदि देखा जाए तो लोगस्स हमारे लिए कल्पवृक्ष चिन्तामणि रत्न समान है। इसमें चौबीस तीर्थकरों की स्तुति की गई है। चैबीस तीर्थकरों की स्तुति करने से हमारे अशुभ कर्म तो क्षय होते ही है साथ-साथ हमारे आस-पास की नेगेटीव एनर्जी भी दूर होती है।

हमारे आस-पास का वातावरण शुद्ध होता है। कोई भी अनुष्ठान सफल कब होता है ? जब उसके प्रति हमारी दृढ़ आस्था होती है। दृढ़ आस्था के साथ किसी मंत्र का हम प्रयोग करते है तो निश्चित रूप से अपना प्रभाव दिखाता है। साध्वीश्रीजी ने बहुत ही सुन्दर ढंग से अनुष्ठान करवाया। पूरा वातावरण मंत्रमय बन गया। लोगों ने बहुत ही उत्साह के साथ इस अनुष्ठान में भाग लिया।

युवाचार्य अभिनंदन, मंत्र दीक्षा का संयुक्त आयोजन

श्रीडूंगरगढ़।

साध्वी लक्ष्यप्रभाजी के सान्निध्य में युवाचार्य श्री महावीर कुमारजी के मनोनयन पर अभिनंदन समारोह, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा मंत्र दीक्षा कार्यक्रम तथा किशोर दिवस का संयुक्त रूप से आयोजन किया गया। तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष विक्रम मालू ने भाव व्यक्त किये। साध्वी संपतप्रभाजी, साध्वी पुनीतप्रभाजी, साध्वी दीपयशाजी एवं साध्वी सुलेखा श्रीजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन दिए। वहीं साध्वी नव्यप्रभाजी, साध्वी उन्नतप्रभाजी, साध्वी युक्तिप्रभाजी, साध्वी प्राज्ञप्रभाजी एवं साध्वी सात्विकप्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से युवाचार्य श्री के प्रति मंगलभाव एवं शुभकामनाएँ व्यक्त कीं।

सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी लक्ष्यप्रभाजी ने मंगल उद्बोधन में युवाचार्य श्री महावीर कुमारजी के बाल्यकाल की प्रेरणादायी घटना का उल्लेख करते हुए उनके मनोनयन पर हार्दिक अभिनंदन एवं मंगलकामनाएँ प्रेषित कीं। इसी अवसर पर आयोजित मंत्र दीक्षा कार्यक्रम में 8 नन्हे बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान कर नियमित जप एवं साधना का संकल्प दिलाया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
31 अगस्त - 06 सितम्बर 2026

एक भव्य, नव्य, अभूतपूर्व नज़ारा

शक्ति, संकल्प और समर्पणः तेरापंथ इतिहास का स्वर्णिम एवं अभूतपूर्व तप अनुष्ठान

तेरापंथ धर्म संघ के लिए योगक्षेम वर्ष (2026) अनेक आध्यात्मिक उपलब्धियों की सौगात लेकर आया है। परम पूज्य महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी के मंगल सान्निध्य में आराधना की नई दिशाएं उद्घाटित करने वाला यह योगक्षेम वर्ष भैक्षव शासन के गौरव को शिखर चढ़ा रहा है। एक साथ 12 साध्वियों के द्वारा की गई मासखमण की तपस्या ने तेरापंथ धर्म संघ के तपोनिष्ठान कीर्तिमानों की श्रृंखला में एक और नये अध्याय का सृजन किया है।

आषाढ़ शुक्ला 11 की शुभ घड़ी में साध्वियों की पाँच पचरंगी तप का शुभारम्भ हुआ। इसी पचरंगी तप में साध्वियों ने अपने कदम आगे बढ़ाए और मासखमण तक पहुंचा दिया। सभी तपस्विनी साध्वियों ने अनुभव किया कि यह परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर के शक्तिशाली आभामण्डल, ऊर्जा संप्रेषित करने वाले मंगल पाठ का प्रभाव था कि असंभव सा लगने वाला कार्य भी संभव हो गया।

स्वयं आचार्य प्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में इस तपस्या को 'अभूतपूर्व तपस्या' कह कर तपस्विनी साध्वियों पर अमृत वर्षा की और शक्ति का संचार किया।

इस अभूतपूर्व तपस्या की पृष्ठभूमि में एक और विशिष्ट शक्ति का योगदान रहा, वह शक्ति है– श्रद्धेय साध्वी प्रमुखा श्री जी की इच्छाशक्ति, प्रेरणाशक्ति। पचरंगी तपस्या के दौरान मातृहृदया साध्वी प्रमुखा श्री जी ने अपनी भावना व्यक्त की कि योगक्षेम वर्ष में साध्वी समाज में कम से कम 13 मासखमण हो। उनका यह स्वप्न शीघ्र ही साकार हो गया, हो भी क्यों नहीं, गुरुकुल वास में एक साथ 12 मासखमण एवं 1 मासखमण बहिर्विहार में, इसप्रकार एक साथ तेरह मासखमण का होना वास्तव में शक्तिप्रदाता, महातपस्वी, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर की प्रत्यक्ष ऊर्जा और शक्ति का ही प्रतिफलन है।

22 अगस्त मध्याह्न प्रज्ञा निलयम के विशाल प्रांगण में श्रद्धेया साध्वी प्रमुख श्री जी के पावन सान्निध्य में इस ऐतिहासिक तपस्या का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह को लेकर सबके मन में एक विशेष उत्साह नजर आया। नियत समय से पूर्व ही अपना-अपना स्थान आरक्षित करने की दौड़ सी शुरू हो गई। प्रज्ञा निलयम का प्रांगण श्वेतमय हो गया। श्रावक-श्राविकाओं का उल्लास भी देखते ही बन रहा था। इस उमंग और उल्लास के कारण ही प्रज्ञा निलयम का विशाल प्रांगण छोटा पड़ने लगा। पहली मंजिल की सीढ़ियां और बरामदे भी आरक्षित हो गए। लोगों ने ऊपर की मंजिल से खड़े रहकर भी कार्यक्रम को देखने का आनंद उठाया।

कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र थीं - साध्वी प्रमुखा श्री जी के ठीक सामने बैठी तपस्विनी 12 साध्वियों की कतार। 12 साध्वियाँ हैं जिन्हें इस अद्भुत तप अनुष्ठान में सहभागिता दर्ज कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ–

१. साध्वी लब्धिश्री जी
२. साध्वी संवरप्रभा जी
३. साध्वी कान्तप्रभा जी
४. साध्वी राजश्री जी
५. साध्वी मर्यादा प्रभा जी
६. साध्वी सिद्धान्त श्री जी
७. साध्वी समीक्षा प्रभा जी
८. साध्वी हेमप्रभा जी
९. साध्वी भव्यप्रभा जी
१०. साध्वी विशालप्रभा जी
११. साध्वी रुचिप्रभा जी
१२. साध्वी गौतमप्रभा जी

कार्यक्रम की मंगल शुरुआत प्रज्ञा निलयम में प्रवासित साध्वियों के मंगलाचरण से हुई। बड़े ही सुनिश्चित तरीके से विशाल समाज ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। साध्वियों ने प्रस्तुति में सूत्रशैली का अनुसरण किया। प्रज्ञा निलयम, अमृतायन, समाधिवरम और अमृतवाणी में प्रवासित साध्वियों ने अपने अपने प्रवासस्थल की ओर से एक-एक सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी आगमप्रभा जी, साध्वी कृतार्थप्रभा जी, साध्वी मध्यस्थप्रभा जी और समणी सुमनप्रज्ञा जी ने रोचक कार्यक्रम के द्वारा तप अभिनंदन किया। समणी वृंद ने भी गीत के माध्यम से भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। श्रावक-श्राविका समाज का प्रतिनिधित्व महिलामंडल ने अपनी गीतिका के माध्यम से किया।

साध्वी जिनबाला जी, साध्वी संवेगश्री जी, साध्वी शीतलयशा जी, साध्वी उज्ज्वलरेखा जी, साध्वी संपूर्णयशा जी, साध्वी हेमयशा जी, साध्वी दर्शितप्रभा जी, साध्वी कीर्तिलता जी, साध्वी वर्धमानश्री जी ने अपने-अपने वक्तव्य में तपस्विनी साध्वियों का गुणानुवाद करते हुए उनके तप का श्रेय परम पावन आचार्य प्रवर के ऊर्जस्वल आभामंडल, साध्वी प्रमुखा श्री जी की वात्सल्य पूरित प्रेरणा और साध्वी वर्याजी के प्रोत्साहन को दिया। शासन गौरव साध्वी श्री राजीमती जी एवं शासन गौरव साध्वी श्री कनकश्री जी ने भी भावपूर्ण शब्दों में तपस्विनी साध्वियों के प्रति मंगल कामना व्यक्त की।

आदरणीय साध्वीवर्याजी ने अपने वक्तव्य में तपस्वी को सागर, भुजंग और रजत—इन तीन उपमाओं से उपमित करते हुए कहा—

१. तपस्वी की साधना सागर के समान गम्भीरता लिए होती है।

२. भुजंग जिसप्रकार हर छह माह में अपनी केंचुली का त्याग कर देता है वैसे ही तपस्वी कर्मों का त्याग करते हुए साधना के पथ पर आगे बढ़ता रहता है।

३. रजत ज्यों अग्नि में तप कर उज्ज्वलता प्राप्त करता है। उन्होंने तपस्यारत साध्वियों के तप अनुमोदन करते हुए मंगल कामनाएं दीं।

मातृहृदया साध्वी प्रमुखा श्री जी ने अपने मंगल उद्बोधन में इस अभूतपूर्व तप का सम्पूर्ण श्रेय वीतरागकल्प आचार्य प्रवर को समर्पित करते हुए कहा— **'आचार्य प्रवर ने एक दिन फरमाया—'संत तपस्या में आगे हैं।'** मुझे लगा यह साध्वियों के लिए तपस्या के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा है। मैंने चिंतन किया कि साध्वियों को तप में आगे बढ़ना चाहिए। साध्वियों ने मेरे इस चिंतन को मूर्त रूप दे दिया। इस तप अनुष्ठान ने गुरुदेव तुलसी के वचनों को सत्यापित कर दिया—तपस्या श्रम साधना संकल्प में पीछे नहीं। साध्वी प्रमुखा श्री जी ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि सब इस तपस्या का निमित्त उन्हें मान रहे हैं लेकिन वास्तव में इसमें पूज्यप्रवर की प्रेरणा काम कर रही है। आपने फरमाया—तपस्या की निष्पत्ति में तीन बातों का योगदान होता है

१. प्रकृति की अनुकूलता
२. गुरु का आशीर्वाद
३. मनोबल और धृतिबल

तपस्विनी साध्वियों को सौभाग्य से ये तीनों ही अनुकूलताएं प्राप्त हो गयीं। उन्होंने तपस्विनी साध्वियों के आत्मबल, मनोबल और संकल्पबल का उल्लेख करते हुए कहा कि असाता होने पर भी वे बढ़ते-बढ़ते अपनी मंजिल तक पहुंच गयीं। उन्होंने सम्पूर्ण साध्वी समाज को तप के साथ-साथ ज्ञान और आचार के क्षेत्र में भी आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। साध्वी प्रमुखा श्री जी ने तपस्या काल में निर्मित सौहार्दपूर्ण वातावरण और सेवा भावना के लिए आत्म-तोष व्यक्त किया।

इस प्रकार कार्यक्रम का वातावरण तप, त्याग और आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो यह १२ साध्वियों के तप का अभिनंदन नहीं बल्कि उनके आत्मबल, संघबल, गुरुबल, संकल्पबल का अभिनंदन था। योगक्षेम वर्ष २०२६ में सम्पन्न ये १२ साध्वियों के मासखमण का यह सामूहिक तप तेरापंथ के इतिहास में एक स्मरणीय और विशिष्ट प्रसंग बन गया। इस भव्य-नव्य नजारे को देखकर सभी विस्मयाभिभूत हुए।

मंत्र दीक्षा बचपन के संस्कार पचपन तक काम करते हैं

रोहिणी दिल्ली।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या शासन श्री साध्वी सुमनश्री जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम का प्रारम्भ 'लक्ष्य है ऊंचा हमारा' गीत का संगान युवक परिषद् के सदस्यों ने किया। शासनश्री साध्वी सुमन श्री जी ने रोहिणी व पालम ज्ञानशाला के बच्चों को विधिवत् मंत्र दीक्षा के संकल्पों से संकल्पित करते हुए कहा कि बच्चे घर परिवार के कुलदीपक है। उनको प्रेम वात्सल्य का सिंचन और सद्संस्कारों के बीज चाहिए। बच्चों का जीवम पान के कच्चे पत्तों के समान है। पत्तों को जैसा चाहे मोड़ सकते हैं सूखने के बाद वो टूट जाएंगे। बच्चे भगवान की मूरत है तो बच्चे भगवान की सूरत है। बचपन के दिये संस्कार पचपन यानि जीवन भर काम करेंगे वास्तव में बच्चे असली संपत्ति है तिजोरी में रखी सम्पत्ति काम आये या नहीं भी आये किन्तु यह संपत्ति अवश्य काम आएगी। अतः सभी अभी-भावकों का कर्तव्य है कि ज्ञानशाला में अपने-अपने बच्चों को अवश्य आने की प्रेरणा दें। ज्ञानशाला संस्कार शाला है। यहाँ से मिले हुए धार्मिक संस्कारों से एक होनहार योग्य पीढ़ी का निर्माण होगा।

ज्ञानशाला के बच्चों में लघुनाटिका संवाद प्रस्तुत किया जिसको सुनकर सभी भावविभारे हो गये। मंत्र दीक्षा पुस्तिका और माला तेरापन्थ युवक परिषद द्वारा सभी बच्चों को उपलब्ध कराई गयी। ज्ञानशाला प्रभारी रतनलाल जैन ने अपने सामयिक विचार रखे।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

गुरु महाश्रमण को नमन करें युवाचार्यवर को नमन करें

● शासनश्री मुनि विजय कुमार ●

गुरु महाश्रमण को नमन करें,
युवाचार्यवर को नमन करें।
मनमोहक जोड़ी अमर रहे, अमर रहे, गुरु॥

गुरुवर महाश्रमणजी ने वाह-वाह क्या रंग जमाया,
मुख्य मुनि श्री महावीर को उन्नत शिखर चढ़ाया।
इन चरणों का अनुगमन करें, नमन करें, गुरु॥1॥

रचा नया इतिहास अनूठा धन्य हो गईं आँखें,
हर मन महक उठा श्रद्धा से अपने भीतर झाँके।
वे दुर्लभ घड़ियाँ अमर रहें, नमन करें, गुरु॥2॥

युवाचार्यवर की विशेषताएँ क्या-क्या बतलाएँ,
बिन्दू में है सिन्धु समाया हम अनुमान लगाएँ।
इनके पीछे हम कदम धरें, नमन करें, गुरु॥3॥

नये सूर्य की दिव्य रश्मियों से हम पाँव पखारें,
आशा भरी नजर से इस जोड़ी को सभी निहारें।
शासन उपवन में रमण करें, नमन करें, गुरु॥4॥

लय - जय-जय नारायण-नारायण हरे-हरे

विद्या, विनय, विवेक के संगम युवाचार्य महावीर

● साध्वी संगीतश्री ●

तेरापंथ शासन मिल्यो महाश्रमण दरबार
युगा-युगा मिलतो रेवै, अंतर के उद्‌गार।।

युवाचार्य को हमने करीब से देखा तो लगा आप ऐसे हो,
तारों की बारात में हंसते हुए चांद जैसे हो।
शब्दों का जाल नहीं, हमारे दिल की परिभाषा है,
महाश्रमण युग की तकदीर तुम, महावीर-महावीर जैसे हो।

विद्या, विनय, विवेक के संगम युवाचार्य महावीर,
झेलो हमारा अभिनंदन, धीर-वीर महावीर।
कार्यकुशलता अनुपम देखी, सहज सरलता है बेजोड़,
तुम जैसे युवाचार्य को पाकर, जागी हम सबकी तकदीर।

योगक्षेम वर्ष का पावन दिन ये आया,
महाश्रमण पट्टधर महावीर सबके मन को भाया।
सौ-सौ बधाई देती तुमको, जागे भाग्य हमारे,
कोड दीवाली रहो युवाचार्य, महाश्रमण सुख साया।

तेरापंथ री राजधानी, गुरु जन्मभूमि है मनहारी

● साध्वी योगक्षेमप्रभा ●

जंबू द्वीप के भरतक्षेत्र में चंदेरी नगरी प्यारी,
तेरापंथ री राजधानी, गुरु जन्मभूमि है मनहारी।।

१.सभा सुधर्मा में मघवा ज्यूं महाश्रमण गुरुवर सोहे,
योगक्षेम वर्ष री सुष्मा जन-जन रा मनड़ा मोहे,
युवा मनस्वी युवाचार्यवर महावीर है जयकारी।।

२.महासती चंदनबाला ज्यूं विश्रुतविभाजी शासन में,
साध्वीवर्या संबुद्धयशा जी नंबर टू श्रमणीगण में,
जबर झुंड है संत सत्यों रो, समवसरण साताकारी।।

३.तेरामास प्रवास लाडनूं, तेरा मासखमण रा ठाट,
युवाचार्य रे मनोनयन पर, साध्वीप्रमुखा री सौगात
पुलकित प्रमुदित गणपति पल-पल, सींचे शासन फुलवारी।।

४.वर्धापन! अभिनंदन! भगवन! मासखमण रो अभिनंदन,
बड़ो कठिन है तप ओ तपणो, रसनाजय रो अनुमोदन,
लब्धि श्री स्यूं धन्यप्रभा तक गुम्फित माला मोत्यांरी।।

५.निरख निरख नित नया नजारा हिवड़ो ओ हरसावै है,
प्रबल पुण्याई भैक्षवण री, शिखरां सुयश चढ़ावै है,
कीर्तिमान री रची श्रृंखला, योगक्षेम महिमा भारी।।

तर्ज – व्याऊ बिनणी

गणमाली के चरणों में, झुक-झुक करते हम वंदन

● शासन श्री साध्वी मंजूरेखा ●

अभिनन्दन, अभिनन्दन, अभिवन्दन, अभिवन्दन
गणमाली के चरणों में, झुक-झुक करते हम वंदन॥

शक्तिधर हो तुम गुरुवर, शक्ति सभी में भरते हो।
गण मन्दिर की मीनारों पर, आलेख नया नित लिखते हो।

झेलो-झेलो अभिनन्दन, चरणों में शत-शत वंदन॥

सूरत तेरी अति सुन्दर, मूरत भी मन हारी है।
सरल विवेचन से भरते, गुरु गुण निष्ठा एकतारी है।
रहो निरामय बढ़ते चरण, कण-कण में अभिनव पुलकन॥

महाश्रमण जी गुरुवर ने, हीरे का मूल्य बढ़ाया है।
खरी कसौटी कर-कर के, गण का ताज पहनाया है।
संकल्प सदा शुभ-शुभ हो, बन गए तुम गण की धड़कन॥

तुलसी महाप्रज्ञ आशीर्वर फलित-फलित है सब सपने।
हम सब मिल आनन्द मनाते, सचमुच भाग्य खिले अपने।

युवाचार्यवर के चरणों में, आत्म रमण के खिले सुमन॥

तर्ज – तुम दिल की धड़कन में

युवाचार्य के मनोनयन का सुन्दर अवसर आया है

● शासनश्री साध्वी यशोमती ●

युवाचार्य के मनोनयन का, सुन्दर अवसर आया है।
व्यक्त करूँ उल्लास हृदय का, मन मेरा ललचाया है॥

महाप्रभु श्री महाश्रमण ने, दृश्य अनोखा दिखलाया।
योगक्षेम वर्ष में हम सब पर, यह अमृत बरसाया।
विश्व भारती के आँगण में, नव इतिहास रचाया है॥

गण की प्रथम-प्रथम मर्यादा, बनी रहे अक्षुण्ण सदा।
गणपति का महनीय कार्य है, पूर्ण हो गया आज मुदा।
दृश्य निहारा इन आँखों ने, क्षण-क्षण मन पर छाया है॥

करें कामना विजय वरो, पग-पग पर सुरभित सुमन खिले।
जहाँ-जहाँ ये चरण टिके पावन, कण-कण प्रभुवर को अमन मिले।
कोटि-कोटि पुनः बधाई, आनन्द घन उमड़ाया है॥

श्रेष्ठ श्रुताराधक डा. महावीर स्वीकारो वंदन

● साध्वी प्रियंवदा ●

युवराज तुम्हारा अभिनंदन
श्रेष्ठ श्रुताराधक डा. महावीर स्वीकारो वंदन ॥

किसने सोचा किसने आंका बचपन में तेरी दिव्य शक्ति को,
महाश्रमण की दूरदृष्टि ने पहचाना तेरी शक्ति-भक्ति को।
गांभीर्य और औदार्य निराला भर देता जन-जन में पुलकन ॥

तलहटी से शिखर तक पहुँचाया तुमको महाश्रमण ने,
ऊर्जा संप्रेषित कर काबिल किया तुम्हें ज्योतिचरण ने।
तलबगार हम अनुकंपा के तुम हो शीतल सुरभित चंदन ॥

प्रबुद्ध चेत्ता आगम वेत्ता मिला सुरीले कंठों का वरदान,
सद्‌गुण मुक्ताहार सजाकर बने श्रेष्ठ गुण रत्न निधान।
संघ चमन के हर पल्लव को देते रहना अमृत सिंचन ॥

अप्रतिप व्यक्तित्व तुम्हारा जन-जन के मन भाया है,
मंगलमय इन पुण्य क्षणों में पोर-पोर विकसाया है।
नंदीघोष बजायें करते शुभ भावों से हम वर्धापन ॥

भिक्षु गण गौरव गावा जी

● मोंटू ओस्तवाल, सूरत ●

भिक्षु गण गौरव गावा जी,
युवाचार्य श्री महावीर ने आज बधावा जी।।

राजस्थान रो छोटो सो गाँव, फलसूंड रो ओ बालक,
छगनी देवी माई कोचर, सवाईचंद जी पालक,
सेवाभावी विनीत समर्पित, गुण बतलावा जी।।१।।

बचपन मे माथे पर लागी, खुलगी किस्मत क्यारी,
सर पर हाथ सदा रूपा रो, कहगी सतिवर न्यारी,
महाप्रज्ञ रे हाथा स्यू, संयम सुख पावा जी।।२।।

महाश्रमण युगनायक री छाया बण कर के चाले,
भिक्षु जनम दिवस पर गुरुवर संघ उपहार दिरावे,
महावीर युवाचार्य महावीर सगळा बुलावा जी।।३।।

भिक्षु एकादश पटधारी महाश्रमण जय जय हो,
युवाचार्य श्री महावीर जी पग पग तेरी विजय हो,
रहो चिरायु,रहो चिरायु संघ उदगारा जी।।४।।

❖ सत्य के मार्ग पर चलने में परेशानी आ सकती है, किंतु सच्चाई के मार्ग पर चलने से मिलने वाली मंजिल सुखद होती है।

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।

– आचार्य श्री महाश्रमण

कलमकारों की आस्था : 'महाश्रमण के महावीर' को संपादकीय वंदन

मुख मुद्रा : मानो आचार्य भिक्षु की प्रतिकृति

पदमचंद पटावरी, राजसमंद, पूर्व संपादक, तेरापंथ टाइम्स

आचार्य भिक्षु की प्रतिकृति

प्रखर प्रतिभा और ओजस्वी मुखमुद्रा — युवाचार्यश्री महावीर कुमारजी का स्वरुप साक्षात आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु की प्रतिकृति जैसा दृष्टिगोचर होता है।

इतिहास बयां करता है कि जितनी भी महान विभूतियां पैदा होती हैं, वे प्रायः छोटे क्षेत्रों एवं साधारण परिवेश से होकर देश-दुनिया के लिए ज्योति-स्तम्भ बन जाती हैं। राजस्थान का जैसलमेर जिला विश्व प्रसिद्ध रेगिस्तान के रूप में जाना जाता है।

इस जिले के सीमावर्ती गांव फलसूंड में आज से ३८ वर्ष पूर्व कोचर परिवार (ओसवाल, तेरापंथी जैन) में एक होनहार शिशु ने जन्म लिया। अपने साथ जन्म-जन्मांतरों की पुण्याई के कारण बचपन में वैराग्य के संस्कार प्रस्फुटित होने लगे। गांव में पधारने वाले जैन साधु-साध्वियों के दर्शन, संपर्क और प्रेरणा के फलस्वरूप बालक महावीर ने जैन साधु दीक्षा स्वीकार करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

दीक्षा, साधना और पूज्य प्रवरों का वरदहस्त

1. लघु वय में दीक्षा : तेरापंथ धर्म संघ के महाप्रतापी आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं युवाप्रचेता युवाचार्य श्री महाश्रमणजी की पारखी नजर से अनुप्राणित बालक महावीर ने मात्र १३ वर्ष की लघु वय में परमश्रद्धेय आचार्य महाप्रज्ञजी के कर-कमलों से जसोल (बाड़मेर) में जैन भागवती दीक्षा स्वीकार की।

2. चतुर्मुखी सफलता : ग्रामीण परिवेश में पले-पुसे बाल साधु ने अपने वैराग्य भाव को पुष्ट करते हुए, ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय और सेवा में आशातीत सफलताएं अर्जित कीं और बाल साधुओं की अग्रिम पंक्ति में प्रभावी स्थान हासिल कर लिया।

3. पूज्य प्रवर के उद्‌गार : बाल संत के प्रति आगम पठन, कंठस्थीकरण एवं स्वाध्याय के संदर्भ में पूज्य प्रवर के श्रीमुख से निकला था— 'मेरे पास महावीर और मनन जैसे उदीयमान बाल संत हैं।'

भविष्य के संकेत और दायित्व-बोध—

4. 'निहाल' होने का आशीर्वाद (२०१०) : सिवाणची-मालानी यात्रा में फलसूंड प्रवास के दौरान सायंकालीन वंदना के समय आचार्य श्री महाश्रमणजी ने मुनि महावीर के मस्तक पर हाथ रखकर फरमाया— 'महावीर, तुम इसी प्रकार निरअतिचार साध्वाचार को पुष्ट करते रहोगे तो निहाल हो जाओगे।' (उसी समय मैंने अपनी डायरी में नोट किया था कि आज धर्मसंघ की बारहवीं पीठी का शुभ भविष्य सुनिश्चित हो गया है)।

5.'मुख्य मुनि' पद एवं उत्तराधिकार: नेपाल (बिराटनगर) प्रवास में आचार्य प्रवर ने मुनि महावीर को 'मुख्य मुनि' का संबोधन दिया। तत्पश्चात असम की वादियों में इस संबोधन को पद में परिवर्तित कर वरिष्ठता के क्रम में नम्बर वन की महत्ता प्रदान की।

6. सम्मान की कड़ियां : सरदारशहर में दीक्षा स्वर्ण जयंती के अवसर पर गुरुदेव ने स्वयं धारण की हुई कलापूर्ण माला अपने हाथों से मुख्य मुनि महावीर को पहनाई। इसके बाद प्रवचन में कुर्सी, महासभा तथा बहुश्रुत परिषद के संयोजक का सम्माननीय पद जैसी कड़ियां जुड़ती गईं।

ऐतिहासिक कीर्तिमान और शुभ संयोग

7. पिता की विद्यमानता में ऐतिहासिक मनोनयन : अतीत से लेकर आज तक एक प्रश्न अनुत्तरित जैसा रहा कि कोई भी आचार्य अपने पिताश्री की विद्यमानता में दीक्षित होकर युवाचार्य पद पर आसीन नहीं हुए। मुनि महावीर के पिताश्री ने स्वयं प्रेरणा देकर पुत्र को दीक्षित कराया और लाडनूं में आषाढ़ सुदी में उन्हें युवाचार्य पद पर मनोनीत होते देखा। आचार्य श्री महाश्रमणजी ने यह पद प्रदान कर अनुत्तरित प्रश्नों को उत्तरित करने के साथ नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया।

8. त्रिवेणी संगम (दुर्लभ संयोग):

- युवाचार्य श्री महावीर की दीक्षा के २५ वर्ष पूर्ण (दीक्षा रजत जयंती)।
- परम श्रद्धेय आचार्य श्री तुलसी के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के समापन 'बोधि दिवस' के दिन युवाचार्य पद का मनोनयन।
- योगक्षेम वर्ष के द्वितीय चरण का आयोजन।

आचार्य भिक्षु की प्रतिकृति एवं शुभाशंसा—

9. आकृति एवं प्रतिभा : मैं युवाचार्य श्री महावीर को बार-बार कहता रहता हूं कि आपकी आकृति/मण्डल आचार्य भिक्षु की प्रतिकृति जैसी है। मुझे गर्व है कि आप गौर वर्ण के हैं। वैसे तो तेरापंथ का हर आचार्य भिक्षु का ही स्वरूप होता है और यह गौरवमयी परंपरा सदियों तक निर्विघ्न चलती रहेगी।

10. भविष्य का योगसूत्र : दो-तीन वर्ष पूर्व एक लंबे पत्र में मैंने संघ-हित के जो व्यक्तिगत विचार प्रेषित किए थे, वे आपके भविष्य के दायित्व-बोध को प्रभावी बनाने में योगसूत्र बनेंगे।

प्रसन्नता का विषय है कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद अपना पहला हक मानकर तरुणाई के प्रहरी युवाचार्य श्री महावीर को 'तेरापंथ' अभिनंदन ग्रंथ/विशेषांक समर्पित करने जा रही है। मंगल कामना है कि आप संघ में नए कीर्तिमान स्थापित करें।

'निहाल' होने का ऐतिहासिक आशीर्वाद

वर्ष 2010 में जब आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मुनि महावीर के मस्तक पर हाथ रखकर 'निहाल' होने का आशीर्वाद दिया, तभी संघ का स्वर्णिम भविष्य सुनिश्चित हो गया था।

9 वर्ष धम्मजागरण सम्पन्नता पर कार्यक्रम

साल्टलेक। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य डॉ. मुनि आलोक कुमार जी की पावन प्रेरणा से, प्रत्येक माह की सुदी तेरस को आयोजित होने वाले 'भिक्षु धम्मजागरण' के 9 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण होने के इस स्वर्णिम अवसर पर, एक वृहद भिक्षु धम्मजागरण का भव्य आयोजन हुआ। अध्यक्ष जयसिंह डागा का स्वागत वक्तव्य हुआ। मंत्री महोदय ने कहा मुनि श्री ने एक बीज के रुप में आयाम दिया जो आज वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया है। जिस दिन धम्मजागरण के 108 महीने सम्पन्न हुए, संयोग से उसी दिन तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक महामना आचार्य श्री भिक्षु का 301 वां जन्मोत्सव और 269 वां बोधिदिवस था।

ज्ञानशाला की दक्षिण बंगाल आंचलिक संयोजिका डॉ. प्रेमलता चोरड़िया ने ज्ञानशाला ने गतिविधियों के बारे में बताया। आभार ज्ञापन सभा के जगतसिंह चौरड़िया ने किया।

शक्ति को पहचानने का सशक्त माध्यम नवकार मंत्र है

मंत्रदीक्षा कार्यशाला का सफल आयोजन

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सानिध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में मंत्रदीक्षा कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् उत्तर हावड़ा द्वारा योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में किया गया। जिसमें तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण हावड़ा, साउथ कोलकाता, पूर्वांचल, उत्तर कोलकाता, लिलुआ, हिन्दमोटर ने सहभागिता दर्ज की। गरिमामयी उपस्थिति अभातेयुप के उपाध्यक्ष प्रथम अनंत बागरेचा आदि की रही। मुनि जिनेशकुमार जी ने मंत्र दीक्षा के योग्य 37 बच्चों को नमस्कार महामंत्र के माध्यम से समझाते हुए मंत्र दीक्षा प्रदान की और बच्चों को संकल्प कराकर शिक्षा सूत्र प्रदान किये। मुनि श्री ने दीक्षान्त प्रवचन करते हुए कहा कि - आत्मा में अनंत शक्तियां निहित है। लेकिन राग, द्वेष, कषाय, अज्ञान, प्रमाद की सघनता के कारण मनुष्य अपनी शक्ति को पहचान नहीं पाता। शक्ति को पहचानने का एक सशक्त माध्यम मंत्र है। मंत्र साधना के द्वारा चित्त की एकाग्रता बढती है और एकाग्रता की स्थिति में अज्ञात भी ज्ञात बन जाता है। मन को अहर्व मुखी वृत्तियों की ओर ले जाने वाली शब्दशक्ति मंत्र कहलाती है। मंत्रों में एक मंत्र है नवकार मंत्र। मंत्र दीक्षा का उद्देश्य -बच्चों को मंत्रों से परिचित कराना और उन के प्रयोग से होने वाले लाभ का अनुभव कराना। बच्चे संस्कारी होंगे तो अच्छे इंसान बनेंगी देवगुरु धर्म के प्रति आस्था रखने से व नशामुक्त जीवन जीने से व्यक्ति हमेशा समाधि में रहता है। इस अवसर पर अभातेयुप के उपाध्यक्ष प्रथम अनंत बागरेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। स्वागत भाषण तेरापंथ युवक परिषद् उत्तर हावड़ा के अध्यक्ष बसंत पटावरी ने दिया। आभार ज्ञापन मंत्री विनीत भंसाली ने किया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। कार्यशाला के प्रारंभ में बच्चों त्रिपदी वंदना कराई गई।

विद्वता,विनम्रता, विवेकशीलता के पंडित युवाचार्य प्रवर

इरोड। तेरापन्थ धर्म संघ के अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी सोमयशाजी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापन्थ सभा भवन में आयोजित युवाचार्य अभीवन्दना समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी सोमयशाजी ने कहा 'दसो दिशाएँ गूँज रही धरा बने खुशहाल - जन्म छगनी गोद में महावीर सा लाल' परम पूज्य परम श्रद्धेय गुरुदेव यह दृश्य युवाचार्य नियुक्ति का दृश्य देखने का हम साध्वियो को सौभाग्य मिला। युवाचार्य जी अनेक गुण सुमनो से सजा हुआ है । जैसे विद्वता, विनम्रता, विवेकशीलता आदि गुणों से जीवन पंडित है। जहां शिष्य का समर्पण होता है। गुरु का आशीर्वाद होता है। वहाँ कुछ भी असंभव नहीं होता है। आप धर्म संघ में नये कीर्तिमान रचते हुये निरामय रहे। मंत्र दीक्षा का भी आयोजन हुआ। जिससे संस्कारों से संस्कारित होकर देश,समाज और परिवार का नाम रोशन कर सके। महासभा न्यासी नरेंद्र नखत, सुरेंद्र एवं वीणा ने भी विचार रखे। डॉ. साध्वी सरलयशाजी ने अपने विचार रखे। साध्वी ऋषिप्रभाजी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

कलमकारों की आस्था : 'महाश्रमण के महावीर' को संपादकीय वंदन

आचार्य भिक्षु के 301वें जन्मोत्सव पर युवाचार्य मनोनयन—एक अविस्मरणीय दिवस

मर्यादा कोठारी, जयपुर, पूर्व संपादक, तेरापंथ टाइम्स

गुरु-प्रसन्नता और बाल्यकाल का वैराग्य
1999 के दिल्ली चातुर्मास में पिता-पुत्र के संगान ने आचार्य महाप्रज्ञजी का दिल जीत लिया था; बचपन से ही वैराग्य और प्रतिभा का अद्भुत संगम थे मुनि महावीर।

27 जुलाई 2026 का दिन मेरे जीवन में सदैव एक अविस्मरणीय दिवस के रूप में अंकित रहेगा। यह दिन था तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु के 301वें जन्मोत्सव का।

गत रात्रि इंदौर से उपासक के रूप में सेवारत युवक रत्न राजेंद्र भाईसा सेठिया का फोन आया था। उन्होंने बताया कि विज्ञप्ति में टीवी प्रसारण का उल्लेख है और सर्वत्र इसी की चर्चा है। उन्होंने पूछा—'क्या आज कुछ विशेष होने वाला है?' मैंने कहा—'भाईसा! विशेष तो अवश्य है, किंतु क्या है, यह अभी केवल कल्पना का विषय है।'

सुधर्मा सभा में विशेष दिवस की अनुभूति :

प्रातः लगभग 8:30 बजे मैं अमृतवाणी के मंत्री अशोक भाई पारख के साथ प्रवचन पंडाल 'सुधर्मा सभा' पहुँचा।

इसी बीच प्रकृति ने भी अमृत-वर्षा कर इस पल का स्वागत किया। वर्षा थमने के पश्चात बहुश्रुत परिषद के सदस्य मुनिश्री दिनेश कुमार जी पधारे और तत्पश्चात परम पूज्य प्रवर मंच पर विराजमान हुए।

कार्यक्रम अपनी सहज गति से आगे बढ़ रहा था। प्रातः 10 बजे पूज्य प्रवर का प्रवचन प्रारंभ हुआ। उन्होंने आचार्य भिक्षु के जन्म-त्रिशताब्दी वर्ष के संदर्भ से अपनी बात प्रारंभ की।

प्रवचन के मध्य अचानक वह ऐतिहासिक क्षण आया, जिसकी घोषणा के स्वरूप से सब अनभिज्ञ थे। पूज्य प्रवर के मुखारविंद से शब्द फूटे।

'आज मैं अपना उत्तराधिकारी घोषित करना चाहता हूँ... आओ, मुनि महावीर!'

जैसे ही ये शब्द गूंजे, संपूर्ण धर्मसंघ ने 'ॐ अर्हम्' के गगनभेदी घोष से पंडाल को गुंजायमान कर दिया। वह क्षण केवल एक घोषणा नहीं, बल्कि तेरापंथ धर्मसंघ की परंपरा, मर्यादा और भावी स्थिरता का स्वर्णिम अध्याय था।

आचार्य भिक्षु की दूरदर्शिता और उत्तराधिकार की परंपरा :

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने 'अनुशासन संहिता' में लिखा है कि आचार्य भिक्षु ने उत्तराधिकार के प्रश्न को अत्यंत गंभीर चिंतन के साथ सुलझाया था। उत्तराधिकारी का निर्णय वर्तमान आचार्य पर ही छोड़ना—यह तेरापंथ की मौलिक मर्यादा है।

विक्रम संवत् 1832 के लिखित में आचार्य भिक्षु ने फरमाया था :

'भारमलजी री इच्छा आवे गुरु भाई अथवा चेलादिक नै टोला रो भार सूंपे ते पिण कबुल छै। ते पिण रीत परंपरा छै, सर्व साध-साध्वियां एकता री आज्ञा मांहै चालणो एहवी रीत बांधी छै।'

सं. 1832 के इस ऐतिहासिक विधान से लेकर सं. 2083 तक (लगभग 251 वर्षों की यात्रा) यह परंपरा अनवरत प्रवाहमान है। यद्यपि एक अवसर पर आचार्य श्री माणकलाल जी युवाचार्य का मनोनयन नहीं कर सके थे, तब संघ ने सामूहिक निर्णय से मुनिश्री डालचंद जी स्वामी को संघ का दायित्व सौंपा था। आज मुनि श्री महावीर कुमार जी को उत्तराधिकारी घोषित देख लगा जैसे वही गौरवशाली इतिहास पुनः जीवंत हो उठा हो।

फलसूंड से प्रारंभ हुई एक प्रेरणादायी यात्रा :

मुझे 1990 के दशक का वह समय याद आता है, जब हम बालोतरा से जैसलमेर जिले के फलसूंड ग्राम जाया करते थे। वहाँ शासनश्री साध्वी रूपां जी, शासनश्री मुनि श्री मोहनलाल जी आमेट, साध्वी श्री राकेश कुमारी जी आदि चरित्रात्माओं के दर्शन का सौभाग्य मिलता था।

एक बार बालोतरा के साधक मंडल (श्री नारायण चंद जी गोगड़ के नेतृत्व में) पर्युषण की उपासना हेतु फलसूंड गया। वहाँ चरित्रात्मा प्रायः कहते कि इस छोटे से ग्राम में संघ के प्रति अगाध समर्पण और निष्ठा है। साध्वी श्री राकेश कुमारी जी के चातुर्मास के दौरान जब हम शासनसेवी रूपचंद जी श्रीश्रीमाल के नेतृत्व में वहाँ गए, तब साध्वी श्री ने कहा था—

'यहाँ सवाई चंद जी कोचर का पुत्र महावीर बहुत होनहार है और उसकी वैराग्य भावना अत्यंत उच्च है।' जब हम उस बालक से मिलने उसके विद्यालय पहुँचे, तो शिक्षकों और बच्चों ने उसे छिपा दिया था। गाँव में अफवाह फैल गई थी कि बालोतरा से आए लोग बालक महावीर को साथ ले जाएँगे—शिक्षक अपने इस विलक्षण विद्यार्थी को खोना नहीं चाहते थे।

बाल्यकाल से ही प्रतिभा और वैराग्य :

19 जून 1988 को पिता श्री सवाई चंद जी एवं माता श्रीमती छगनी बाई के घर जन्मे महावीर कुमार जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और संस्कारी व्यक्तित्व के धनी थे।

सन् 1999 में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के दिल्ली चातुर्मास का प्रसंग स्मरणीय है। आध्यात्मिक साधना केंद्र में सवाई चंद जी ने अपने बालक महावीर के साथ आचार्य प्रवर के समक्ष अत्यंत तन्मयता से गीत प्रस्तुत किया। गुरुदेव इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने प्रवचन के दौरान विशेष रूप से मुनि श्री रजनीश कुमार जी के माध्यम से संदेश भेजकर उन्हें बुलवाया। जब पिता-पुत्र की इस जोड़ी ने प्रवचन पंडाल में संगान किया, तो संपूर्ण श्रोता वर्ग भावविभोर हो उठा।

तत्पश्चात रतनगढ़ में अक्षय तृतीया पारणे के अवसर पर भी पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ जी ने फलसूंड से आई इस विलक्षण पिता-पुत्र की जोड़ी की सार्वजनिक सराहना की थी।

दीक्षा से युवाचार्य पद तक :

3 मार्च 2002 को जसोल की पावन धरा पर मुनि श्री महावीर कुमार जी के रूप में उनकी दीक्षा संपन्न हुई। दीक्षा के पश्चात उन्होंने सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चरित्र की उत्कृष्ट साधना प्रारंभ की। अपनी निर्मल संयम-साधना, संघनिष्ठा और मेधा के बल पर वे शीघ्र ही आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी एवं युवाचार्य श्री महाश्रमण जी के अति निकट आ गए।

१. 16 फरवरी 2012 (कुचौली): आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा 'श्रेष्ठ श्रुतआराधक' सम्मान।

२. अहिंसा यात्रा का दौर : आचार्य प्रवर ने उनकी क्षमता, स्थिर योग, प्रभावोत्पादक वाग्मिता और आचार-कुशलता को परखते हुए उन्हें निरंतर दायित्व सौंपे।

आचारनिष्ठा, आध्यात्मिकता, अनुशासन, श्रुतसंपन्नता और विनय की कसौटी पर सर्वांशतः खरे उतरने के पश्चात ही 27 जुलाई 2026 को वह ऐतिहासिक शब्द गूंजा— 'आओ, मुनि महावीर!'

स्मृति-पट से : एक पुरानी चर्चा

बचपन की प्रतिभा और शिक्षक
गाँव में जब दीक्षा की चर्चा फैली तो शिक्षकों ने बालक महावीर को स्कूल में छिपा दिया था — इतने प्रिय और होनहार थे हमारे भावी युवाचार्यश्री!

और आज का सत्य :

युवा गौरव बड़े भाईसा पदमचंद जी पटवारी से जब भी संघीय चर्चा होती, भावी नेतृत्व की बात अवश्य उठती। वर्षों पूर्व उन्होंने पूछा था—'मर्यादा कुमार, भावी दायित्व के लिए मुनि श्री महावीर कुमार जी कैसे हैं?' मैंने कहा था—'एकदम योग्य!'

समय चक्र चला, मुनिश्री मुख्यमुनि बने और फिर युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। मनोनयन के दिन सायं जब पदमचंद जी लाडनूं पहुँचे, तो उन्होंने स्नेहिल उलाहना दिया—'तूने मुझे पहले संकेत नहीं दिया, अन्यथा मैं प्रातः ही उपस्थित रहता!'

हार्दिक अभिनंदन एवं मंगलकामना :

इस गौरवपूर्ण अवसर पर मैं युवाचार्य प्रवर श्री महावीर कुमार जी के चरणों में असीम वंदना अर्पित करता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे दीघायु एवं दीर्घागामी संयमी जीवन प्राप्त करें तथा सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चरित्र की साधना से संघ को नई ऊँचाइयों तक ले जाएँ। यह केवल एक व्यक्तित्व का अभिनंदन नहीं, बल्कि मर्यादा, अनुशासन और संघीय एकता के उज्ज्वल भविष्य का अभिनंदन है।

युवाचार्य प्रवर श्री महावीर कुमार जी को अनंत-अनंत मंगलकामनाएँ!

साधना और अष्टसंपदा के धनी - हमारे नवयुवराज प्रवर

बीकानेर।

तुलसी साधना केन्द्र में' युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या शासनश्री साध्वी मंजु प्रभाजी के सान्निध्य में नवमनोनीत युवाचार्य श्री महावीर मुनि के वर्धापना का कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वी मंजुप्रभाजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा- आचार्य अष्टसंपदा से युक्त होते है। हमारे नवयुवराज प्रवर श्री भी अष्टसंपदा से युक्त है। आचार्य प्रवर ने शुभ ग्रह नक्षत्र, शुभयोग, शुभमुहुर्त व शुभ क्षणों में युवाचार्य प्रवर की घोषणा करके सकल तेरापंथ धर्मसंघ में खुशी का वातावरण बना दिया है। आपके इस चयन से धर्मसंध श्रद्धा प्रणत है। आचार्य प्रवर व युवाचार्य प्रवर की कुशल-अनुशासना में युग को नया दिशा बोध मिलेगा और धर्म संध विकास की नई ऊंचाईयों को छूएगा। साध्वी गुरुयशाजी ने इस अवसर पर कहा की भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य की परम्परा गौरवशाली रही है। रामायण, महाभारत में भी गुरु शिष्य का वर्णन आता है। तेरापंथ धर्मसंघ में भी गुरु-शिष्य की परम्परा गौरवशाली रही है। आचार्य अपने शिष्य पर स्पर्श, चिंतन व दर्शन से अपने तेजस्वी आभा मण्डल से शक्ति सम्प्रेषित करते है। साध्वी जयंतप्रभा जी ने कहा- 'अभी तो पर खुले है लम्बी उड़ान बाकी है, अभी तो चांद सितारों को ही मापा है, अनंत आसमान बाकी है। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष सुरेश बैद, तेरापंथ महिला मंडल से लीलादेवी कोठारी ने अपने विचार रखे।

कलमकारों की आस्था : 'महाश्रमण के महावीर' को संपादकीय वंदन

गुरु-शिष्य की एक और आदर्श जोड़ी

प्रमोद घोड़ावत, दिल्ली, भूतपूर्व का. संपादक, तेरापंथ टाइम्स

भिक्षु जन्म त्रिजन्मशताब्दी वर्ष के पावन अवसर और भिक्षु बोधि दिवस जैसे पुनीत दिवस की तेरस को पांच सौ से अधिक साधु-साध्वियों, श्रमण श्रेणी और विशाल श्रावक समाज की उपस्थिति में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने श्रीमुख से एक ऐसे वाक्यांश का उच्चारण किया, जिसके श्रवण मात्र से ही चतुर्विध धर्मसंघ में हर्षोल्लास की लहर दौड़ पड़ी। वह कर्णप्रिय उक्ति थी — **'आओ मुनि महावीर...'**।

तेरापंथ के एकादशम शासक परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने गुरुदृष्टि को सर्वात्मना समर्पित, मुख्य मुनि के रूप में सुप्रतिष्ठित, बहुश्रुत परिषद के संयोजक, गुणों से सुशोभित अपने सुयोग्य सुशिष्य को प्रगतिमान और तेजस्वी तेरापंथ धर्मसंघ के युवाचार्य पद पर मनोनीत कर मानो धर्मसंघ को निश्चिंत बना दिया।

> **पात्रता और सौभाग्य का संगम**
> उत्कृष्ट साधुत्व से अर्जित 'अर्हता' और पूज्य गुरुदेव की 'कृपादृष्टि'... इन्हीं दो पंखों से युवाचार्यश्री ने अध्यात्म के शिखर को छुआ है।

'तेरापंथ की क्या पहचान - एक गुरु और एक विधान' सिर्फ एक उद्घोष नहीं, बल्कि इसकी जीवंत प्रयोग भूमि है। एक सुगुरु के अनुशासन में चतुर्विध धर्म संघ आध्यात्मिकता के पथ पर सतत गतिमान है। गुरुदेव ने युवाचार्यश्री के रूप में मुनि महावीर को प्रतिष्ठित करते हुए तथा उसके बाद उन्हें और अधिक ज्ञानवान, सेवाभावी, स्वाध्यायी और सुप्रेरक बनने का आशीर्वाद दिया।

अनेक गुणों के धारक युवाचार्यश्री महावीर का अतिविशिष्ट गुण - उनकी गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा और अतिरेक समर्पण के रूप में परिलक्षित होता है। आगम में इसके संदर्भ में एक उक्ति आती है - 'इंगियागार संपन्न'। युवाचार्यश्री महावीर इस उक्ति के अनुरूप सर्वांगीण व्यक्तित्व के धनी हैं।

जिन शासन में गुरु-शिष्य परम्परा का उज्ज्वल आलेख दृष्टिगोचर होता है। महावीर और गौतम की जोड़ी से प्रारम्भ कर भिक्षु-भारमल से लेकर तुलसी-महाप्रज्ञ और महाप्रज्ञ-महाश्रमण की जोड़ी के देखते हुए महाश्रमण-महावीर की जोड़ी से एक नूतन स्वर्णिम अध्याय का सृजन होता हुआ देख रहे हैं।

युवाचार्यश्री ने अपने प्रथम वक्तव्य में अपनी प्रति यह मंगलकामना की कि मेरा युवाचार्य काल आचार्य भिक्षु के युवाचार्य काल से भी अधिक हो। अधिक से अधिक वे अपने गुरु के संरक्षण में रहें, ऐसी मंगल उनकी भावना है।

किसी पद पर मनोनीत होने की पात्रता के दो पक्ष होते हैं। इन दोनों पक्षों के सुयोग एवं समन्वय का परिणाम सुखकारी होता है।

पात्रता के दो पक्षः

१. अर्हता : युवाचार्य श्री महावीर ने एक अच्छे साधु के रूप में अपना सर्वोत्तम करणीय करते हुए अर्हता का अर्जन किया।

२. सौभाग्य : वहीं उनका प्रबल पुण्योदय या सौभाग्य रहा कि वे परम पूज्य आचार्यप्रवर की कृपादृष्टि के पात्र बने।

कौन जानता था कि सिंवाची मालाणी के एक छोर में स्थित फलसूंड का वह प्यारा सा छोरा अपनी बालसुलभ चपलता, सरलता और भोलेपन के साथ साधना के बहुविध सोपानो का आरोहण करते हुए शिखर के उपपात में पहुँचेगा। आदरणीय सवाईलालजी, छगनी बाई कोचर कुल का लाल आज इतने बड़े तेरापंथ परिवार की आँखों का तारा बन गया है।

युवाचार्य प्रवर अनेक गुणों के समवाय हैं। वर्धमान के अवसर पर साधु-साहित्यों द्वारा हृदय उदगार को प्रस्तुत किया जा रहा था— मानो उनके एक-एक गुणों का अभिनंदन किया जा रहा था। युवाचार्य श्री के किस गुण का वर्ण करें, किस गुण से प्रेरणा लें?

युवाचार्यश्री के विलक्षण व्यक्तित्व के प्रमुख आयाम :

१. आकर्षक व्यक्तित्व : युवाचार्य श्री की मोहनीय मुस्कान और उसके साथ उनकी चर्चित मुखकृति बरबस सबको उनकी ओर आकृष्ट करने को पर्याप्त है।

२. सद्गुणों के पर्याय : युवाचार्यश्री सादगी, सरलता, श्रमशीलता, समर्पण भाव के पर्याय हैं।

३. तेजस्वी व्यक्तित्व : स्वाध्यायशीलता, गुणग्राहकत्ता, सहनशीलता, समत्वभावना, विनम्रता के समावेश से आपका व्यक्तित्व तेजस्विता को प्राप्त करता है।

४. मर्यादा और आगम निष्ठा : आगम ग्राही एवं मर्यादा पालक होना आपका ध्येय प्रतीत होता है।

५. लोकप्रियता की ऊंचाइयां : बाल मुनियों के प्रशिक्षक, ओज भरे वक्तृत्व और सुमधुर गायनशैली से आपने एक लोकप्रियता की ऊंचाइयों को स्पर्श किया है।

महाश्रमण-महावीर की यह आध्यात्मिक जोड़ी युगों-युगों तक जन-जन का आध्यात्मिक मार्गदर्शन करते हुए उन्हें अच्छा इंसान बनाने को प्रेरित करती रहे। **आध्यात्मिक अभिनंदन - शत शत अभिनंदन**

महावीर बने युवाचार्य महावीर : सफर सेवा, साधना एवं समर्पण का

इंद्र बैंगानी, दिल्ली, भूतपूर्व का. संपादक, तेरापंथ टाइम्स

अध्यात्म निष्ठा, सत्यनिष्ठा, संघनिष्ठा, अनुशासन निष्ठा, मर्यादा निष्ठा और समर्पण निष्ठा का नाम है — तेरापंथ।

तेरापंथ एवं संघीय मर्यादाएँ :

१. स्थापना : विक्रम संवत 1817 में आचार्यश्री भिक्षु द्वारा की गई।

२. धर्मक्रांति : तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु धर्मक्रांति के पुरोधा थे। उनकी धर्मक्रांति आचार-मूलक और सिद्धांत-मूलक थी। अनुशासन की भूमिका पर उनकी नीति स्वस्थ एवं सुदृढ़ थी।

३. संघीय मर्यादाएँ : संघ की मर्यादा और अनुशासन को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए उन्होंने विक्रम संवत 1832 में संघीय मर्यादाओं का निर्माण किया।

४. सुसंगठित संगठन : आज तेरापंथ धर्मसंघ जो सुसंगठित एवं सुव्यवस्थित है, इसका प्रमुख श्रेय आचार्यश्री भिक्षु द्वारा बनाई गई उन मर्यादाओं को जाता है।

५. नेतृत्व एवं उत्तराधिकार : आचार्यश्री भिक्षु ने आचार्य में संघ की शक्ति को केंद्रित कर सुदृढ़ संगठन की नींव डाली और भावी आचार्य के मनोनयन का दायित्व भी वर्तमान आचार्य को प्रदान किया। उत्तराधिकार की इस यशस्वी परंपरा में उत्तरवर्ती सभी आचार्यों ने अपने सम्यक् दूरदर्शी चिंतन से संघीय मर्यादाओं एवं अनुशासन को संरक्षण देते हुए धर्मसंघ को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं।

> **गुरु-शिष्य परंपरा का अनूठा उपहार**
> आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी तेजस्वी आध्यात्मिक ऊर्जा का संप्रेषण कर आचार्य भिक्षु के नंदनवन को 'कोहिनूर' रूपी अनुपम उपहार सौंपा है।

वर्तमान नेतृत्व एवं ऐतिहासिक मनोनयन :

१. एकादशम अधिशास्ता : वर्तमान में ११वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी धर्मसंघ का अपने नेतृत्व में कुशलता से संचालन कर रहे हैं। आपश्री ने अपने आचार्यकाल में अनेकानेक कीर्तिमानों के सुनहरे अध्यायों का सृजन किया है।

२. स्वर्णिम ऐतिहासिक अध्याय : दूरदृष्टा आचार्यश्री महाश्रमण जी ने तेरापंथ के उज्ज्वल भविष्य को निश्चिंतता प्रदान करने के लिए एक और स्वर्णिम ऐतिहासिक अध्याय का सृजन किया।\

३. युवाचार्य मनोनयन की घोषणा:

स्थान : तेरापंथ की राजधानी लाडनूं।

तिथि व समय : आद्यप्रवर्तक महामना आचार्यश्री भिक्षु चेतनावर्ष की परिसंपन्नता के विशिष्ट दिन — आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी, 27 जुलाई 2026 (सोमवार), प्रातःकालीन प्रवचन में।

घोषणा : मुख्य मुनि महावीर कुमार जी को अपने उत्तराधिकारी 'युवाचार्य महावीर कुमार' के रूप में नियुक्त किया गया।

प्रारंभिक जीवन एवं संयम पथ :

जन्म : 19 जून 1988 को राजस्थान के बाड़मेर जिले के एक छोटे से गाँव फलसूंड में, कोचर कुल में।

माता-पिता : माता श्रीमती छगनी देवी एवं पिता श्री सवाईचंद जी।

दीक्षा : बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश करते ही वैराग्य के भाव प्रस्फुटित हुए। 3 मार्च 2002 को जसोल में प्रेक्षाप्रणेता युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के कर-कमलों से दीक्षित होकर संयम पथ पर अग्रसर हुए।

साधना एवं सान्निध्य : प्रारंभ से ही आपकी शिक्षा-साधना का क्रम वर्तमान अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में ही रहा।

व्यक्तित्व, विशेषताएँ एवं उपलब्धियाँ :

१. गुण एवं व्यक्तित्व : आपने अपनी विद्वत्ता, विनम्रता, सेवा, समर्पण, अनुशासित जीवनशैली, विनयशीलता, व्यवहारकुशलता, सहिष्णुता और संघनिष्ठा जैसे गुणों से विशिष्ट पहचान बनाई।\

२. आगम ज्ञान : आपने आगम ग्रंथों का गहराई से अध्ययन किया है। आप आगम वाणी के गहन मर्मज्ञ हैं एवं गायन विधा में भी निपुणता हासिल की है।

३. 'श्रेष्ठ श्रुताराधक' : आपकी विलक्षण अध्ययन शैली के लिए आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आपको 'श्रेष्ठ श्रुताराधक' उपमा से विभूषित किया।

४. दायित्व एवं अलंकरण : आप समीक्षा परिषद के सदस्य के रूप में मनोनीत हुए।

विराटनगर (नेपाल) की विदेशी धरा पर पूज्यप्रवर ने आपको 'मुख्य मुनि अलंकरण' तथा बरपथार (असम) में 'मुख्य मुनि' पद पर सुशोभित किया। आपने बहुश्रुत परिषद के संयोजक के रूप में भी अपने दायित्वों का पूर्ण निष्ठा एवं जागरूकता के साथ निर्वहन किया।

उच्च शिक्षा (Ph.D.) : शिक्षा के क्षेत्र में आपने 'जैन आगमों में पर्यावरणीय चिंतन' विषय पर शोध कर पीएच. डी. (Ph.D.) की उपाधि प्राप्त की है।

कृतज्ञता एवं मंगलकामनाएँ : भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य की गौरवशाली परंपरा का प्रत्यक्ष साक्षात्कार तेरापंथ में किया जा सकता है। आचार्य अपने तेजस्वी चिंतन से अपने उत्तराधिकारी शिष्य में आध्यात्मिक ऊर्जा का संप्रेषण करते हैं, जिससे संपूर्ण धर्मसंघ निश्चिंतता का अनुभव करता है। पूरा धर्मसंघ श्रद्धेय आचार्यप्रवर के प्रति हृदय से कृतज्ञ है, जिन्होंने युवाचार्य पद पर नियुक्ति कर कोहिनूर हीरा रूपी अनुपम उपहार आचार्य भिक्षु के नंदनवन को प्रदान किया है।

हमारी मंगलकामना : आपश्री स्वस्थ एवं निरामय रहते हुए पूज्यप्रवर के निर्देशन में धर्मसंघ की हर गतिविधि में अपने सम्यक् चिंतन, सहभागिता तथा अहर्निश आध्यात्मिक विकास से जन-जन का कल्याण करें। आप पग-पग पर विजय वरें, नव शिखरों पर चरण धरें एवं आध्यात्मिक उर्मियों से जिनशासन व तेरापंथ को रोशन करें।

समर्पित पंक्तियाँ :

विनय विवेक आगम श्रुत ज्ञान अपार,
स्पृहा से दूर तप त्याग सेवा का है सार।
कषाय विजयी उपशांत संघनिष्ठ महान,
युवाचार्य मुनि महावीर को वंदन बारंबार।
तेरापंथ के युवराज को वंदन बारंबार!

कलमकारों की आस्था : 'महाश्रमण के महावीर' को संपादकीय वंदन

एक दृष्टि, एक दिशा, एक दायित्व

अमित नाहटा, अररिया, भूतपूर्व का. संपादक, तेरापंथ टाइम्स

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी का मनोनयन : तेरापंथ की गौरवशाली परंपरा का नवीन अध्याय

तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में कुछ अवसर केवल उत्सव नहीं होते, वे परंपरा की यात्रा में नए अध्याय का प्रारंभ करते हैं।

योगक्षेम वर्ष और आचार्य भिक्षु निर्वाण की त्रिशताब्दी के समापन के अवसर पर परमपूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी को युवाचार्य के रूप में मनोनीत किया जाना ऐसा ही एक ऐतिहासिक और मंगलकारी प्रसंग है।

मेरी दृष्टि में यह केवल एक पद पर प्रतिष्ठित होना नहीं, बल्कि गुरु की पारखी दृष्टि, शिष्य की दीर्घ साधना और संघ के भावी दायित्व का अद्भुत संगम है।

आचार्यप्रवर की पारखी दृष्टि–

किसी शिष्य में भविष्य के नेतृत्व की क्षमता को पहचानना गुरु की विलक्षण दृष्टि का परिचायक है। युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के व्यक्तित्व में ज्ञान, विनय, सेवा, श्रम, गांभीर्य, सक्रियता और समर्पण का जो संतुलित समन्वय दिखाई देता है, वह इस चयन को अत्यंत सार्थक बनाता है।

मुख्य मुनि के रूप में उन्होंने संघीय कार्यों, संदेश-लेखन, शासन-प्रशासन और श्रुताराधना में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाई है। उनके व्यक्तित्व की सबसे प्रभावशाली विशेषता मुझे लगती है— ज्ञान के साथ विनय और दायित्व के साथ समर्पण। उनके व्यक्तित्व का एक और अत्यंत आकर्षक पक्ष है— सहज आत्मीयता से लोगों से जुड़ने की उनकी अद्भुत क्षमता। बड़े से बड़े व्यक्ति से लेकर सामान्य श्रावक तक, प्रत्येक के साथ उनका संवाद औपचारिकता से मुक्त और आत्मीयता से परिपूर्ण दिखाई देता है। हजारों श्रावक-श्राविकाओं के नाम स्मरण रखना, वर्षों बाद मिलने पर भी व्यक्ति को उसी आत्मीयता से पहचान लेना, उसकी बात को ध्यानपूर्वक सुनना और यथासंभव उसे समय देना—यह केवल जनसंपर्क नहीं, बल्कि मन से मन तक पहुँचने की कला है।

विशेष रूप से बच्चों के प्रति उनका सहज स्नेह और अपनापन मन को छूता है। उनके लिए बालक केवल भविष्य के श्रावक नहीं, बल्कि आज की ही जीवंत चेतना हैं। बच्चों के बीच उनका सहज हो जाना, उन्हें स्नेह देना और उनकी छोटी-छोटी बातों को भी महत्व देना उनके व्यक्तित्व की उस सहृदयता और वात्सल्यपूर्ण संवेदनशीलता को प्रकट करता है, जो किसी भी जननेता को जनमानस से जोड़ती है।

युवाचार्य श्री की स्वयं की भावना भी अत्यंत स्पर्शी है—गुरुदेव के चरणों और शरण में रहने तथा उनकी प्रेरणाओं एवं साधु-साध्वियों द्वारा बताए गए गुणों से स्वयं को संपन्न बनाने की आकांक्षा। यही विनय किसी भी बड़े नेतृत्व की वास्तविक शक्ति होती है।

> **परंपरा और आधुनिकता का बोध**
>
> बदलते दौर में परंपरा की आत्मा को अक्षुण्ण रखते हुए समय की भाषा को समझना और जनमानस की धड़कन सुनना ही युवाचार्यश्री की वास्तविक शक्ति है।

युवाचार्य—पद नहीं, भविष्य का दायित्व–

युवाचार्य का अर्थ केवल भविष्य का आचार्य नहीं, बल्कि वर्तमान में भविष्य की तैयारी करने वाला व्यक्तित्व है। आज का समय तेजी से बदल रहा है। नई पीढ़ी के सामने नए प्रश्न हैं, नई चुनौतियाँ हैं और संवाद के नए माध्यम हैं। ऐसे समय में आवश्यकता ऐसे नेतृत्व की है, जो परंपरा की आत्मा को अक्षुण्ण रखते हुए समय की भाषा को भी समझ सके और जनमानस की धड़कनों को भी सुन सके।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी में ज्ञान और आधुनिक बोध के साथ सहजता, शांति, समता और सरलता का जो समन्वय दिखाई देता है, उससे तेरापंथ के भावी विस्तार और प्रभाव के प्रति आश्वस्ति होती है।

उनकी सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक यह भी है कि वे लोगों को केवल संबोधित नहीं करते, उनसे जुड़ते हैं। किसी व्यक्ति को अपना समय देना, उसकी बात को धैर्यपूर्वक सुनना और उसे यह अनुभव कराना कि उसकी बात महत्त्वपूर्ण है—नेतृत्व की यह मानवीय संवेदना अत्यंत दुर्लभ है। यही सहजता आने वाले समय में नई पीढ़ी, विशेषकर युवाओं और बच्चों को धर्मसंघ से अधिक गहराई से जोड़ने की एक महत्वपूर्ण शक्ति बन सकती है।

गुरु-शिष्य की अद्भुत परंपरा–

तेरापंथ की शक्ति उसकी गुरु-परंपरा में है—'एक गुरु, एक विधान' केवल एक उद्घोष नहीं, बल्कि जीवन-पद्धति है।

आचार्यप्रवर की छत्रछाया में युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी का पदार्पण इसी अखंड परंपरा की अगली कड़ी है। यह उस गुरु-शिष्य परंपरा की निरंतरता का प्रतीक है, जिसमें वर्तमान की साधना से भविष्य का नेतृत्व निर्मित होता है।

> **आत्मीयता और जनसंपर्क**
>
> 'हजारों श्रावकों को नाम से पहचानना और सहजता से संवाद करना — यह केवल जनसंपर्क नहीं, बल्कि मन से मन तक पहुँचने की दुर्लभ कला है।

एक श्रावक के रूप में यह प्रसंग मेरे लिए केवल गौरव और प्रसन्नता का विषय नहीं, बल्कि आत्मचिंतन का अवसर भी है। जब गुरु ने भविष्य के नेतृत्व को पहचानकर दायित्व सौंपा है, तब हम सबका भी दायित्व है कि गुरु-आज्ञा, मर्यादा और अनुशासन के प्रति अपनी निष्ठा को और अधिक सुदृढ़ करें।

हृदय से वर्धापना

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ ज्ञान, साधना, सेवा और संगठन की नई ऊँचाइयों को स्पर्श करे; उनकी सहज आत्मीयता से जन-जन जुड़े, उनका ज्ञान नई पीढ़ी को दिशा दे, उनका विनय संघ की मर्यादा को और सुदृढ़ करे और उनकी सेवा-भावना तेरापंथ की प्रभावना को नए आयाम प्रदान करे—इसी मंगलभावना के साथ हृदय से वर्धापना।

जब गुरु की दृष्टि ठहरती है

दिनेश मरोठी, बेंगलुरु, भूतपूर्व का. संपादक, तेरापंथ टाइम्स

इतिहास में कुछ मोड़ ऐसे आते हैं जहाँ काल स्वयं ठहरकर किसी विराट घटना को अपनी छाती पर अंकित करता है। लाडनूं के जैन विश्व भारती के पावन परिसर में आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को प्रातः 10.31 बजे जो घटित हुआ, वह युगों की आध्यात्मिक विरासत के एक नए क्षितिज पर आरोहण का साक्षात प्रमाण था। जब युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन करकमल उठे और उन्होंने उत्तराधिकार की धवल चादर अपने सुयोग्य शिष्य के कंधों पर सुशोभित की, तो समूचे तेरापंथ धर्मसंघ ने यह अनुभव किया कि आज इस महान परंपरा द्वारा भविष्य को दिया गया सबसे आश्वस्तकारी अभयदान है।

1. सेवा और पात्रता से निर्मित नया सृजन : तेरापंथ का शासन-विधान सदियों से इस सार्वभौमिक सत्य पर अडिग रहा है कि यहाँ सत्ता या पद माँगे नहीं जाते, यहाँ केवल सेवा माँग कर ली जाती है।

> **पद नहीं, सेवा और पात्रता**
>
> तेरापंथ में पद माँगे नहीं जाते, यहाँ केवल सेवा माँग कर ली जाती है — जब शिष्य की अंतस पात्रता छलकती है, तब गुरु-दृष्टि नई सृष्टि का सृजन करती है।

A. गुरु-दृष्टि से नई सृष्टि : जब अंतस की अपार पात्रता गुरु की पारखी दृष्टि को अपनी ओर आकर्षित करती है, तो वह दृष्टि ही नई सृष्टि का सृजन करती है।

B. अहं-शून्यता की यात्रा : युवाचार्यश्री का अब तक का संयम-पथ किसी पद-प्राप्ति की आकांक्षा का परिणाम नहीं, बल्कि निरंतर खुद को तपाने की अनवरत साधना रही है।

C. सेवाभावी नेतृत्व (Corporate Leadership) : आधुनिक प्रबंधन आज जिस 'सेवाभावी नेतृत्व' और 'इमोशनल इंटेलिजेंस' की बात करता है, उसका सबसे प्रामाणिक और आध्यात्मिक स्वरूप हमें युवाचार्यश्री के व्यक्तित्व में दिखाई देता है। श्रेष्ठ श्रुताराधक की गहन विद्या से लेकर मुख्य मुनि के संगठन-कौशल तक, उनकी यात्रा पदों के आरोहण के साथ गुरु-इंगित में लीन होकर अपने अहं को शून्य करने की यात्रा रही है।

2. प्रथम उद्बोधन : अधिकार पर हावी अनन्य विनय : जिन्हें पद सत्ता का प्रतीक लगते हैं, वे अधिकार की भाषा बोलते हैं; किंतु जिन्हें दायित्व गुरु-आज्ञा की पावन अमानत लगते हैं, वे समर्पण के आंचल में और गहरे झुक जाते हैं। मनोनयन के तत्काल बाद युवाचार्यश्री का प्रथम उद्बोधन कृतज्ञता का महासागर प्रतीत हो रहा था।

A. महान शिल्पी और अबोध बालक : चतुर्विध धर्मसंघ की उपस्थिति में जब उन्होंने स्वयं को एक 'अबोध बालक' और 'अगढ़ा पत्थर' कहकर गुरुदेव को 'महान शिल्पी' निरूपित किया, तो वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति की आँखें नम हो गईं।

B. सुमनों का ताज : दायित्व को 'कांटों का ताज' बनने से बचाकर साधना की सुगंध से महकता 'सुमनों का ताज' बनाए रखने की उनकी मंगल-कामना ने यह सिद्ध कर दिया कि उनकी दृष्टि में संघ का उत्तरदायित्व भार नहीं, गुरु-ऋण चुकाने की एक पावन साधना है।

C. आजीवन शिक्षार्थी भाव : उनके ये भाव कि वे आजीवन एक शिक्षार्थी बनकर गुरु-छत्रछाया में सीखते रहें, नेतृत्व की सर्वोच्च दार्शनिक ऊंचाई को छूता है।

3. आधुनिक चेतना और आगमिक दृष्टि का अद्भुत समन्वय: युवाचार्यश्री का व्यक्तित्व आधुनिक चेतना और आगमिक दृष्टि का ऐसा समन्वय है, जो आज की नई पीढ़ी के प्रश्नों का सबसे संतुलित और प्रामाणिक उत्तर प्रस्तुत करता है। 'जेन जी' (Gen Z) की पीढ़ी केवल पारंपरिक आस्था के सहारे नहीं, अपितु तार्किक चिंतन, प्रामाणिकता और पर्यावरण-चेतना के धरातल पर समाधान खोजती है। युवाचार्यश्री का व्यक्तित्व इन कसौटियों पर पूरी तरह खरा उतरता है।

A. वैज्ञानिक एवं शोधपरक दृष्टिकोण: 'जैन आगमों में पर्यावरणीय चिंतन' जैसे गंभीर विषय पर उनका शोध एवं प्राप्त स्वर्ण पदक यह दर्शाता है कि वे प्राचीन प्राकृत आगमों के गूढ़ सूत्रों को आधुनिक वैज्ञानिक शब्दावली में समाज के सामने रखने में पूर्णतः सिद्धहस्त हैं।

B. व्यावहारिक एवं जीवंत चिंतन : 23 राज्यों की 40,000 किलोमीटर से अधिक की पदयात्रा ने उनके आगमिक चिंतन को किताबी न रखकर जनजीवन से जोड़कर अत्यंत व्यावहारिक बना दिया है।

C. शम, सम और श्रम की त्रिवेणी : उनके अंतर्मन की प्रशांत गंभीरता (शम), हर परिस्थिति में अडिग संतुलन (सम) और संघ-सेवा के प्रति अटूट पुरुषार्थ (श्रम) की त्रिवेणी उन्हें नए युग का आदर्श पथप्रदर्शक (युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ / युवाचार्य श्री महावीर) बनाती है।

4. अखंड गुरु-विश्वास की अनंत वर्धापना :

आज धर्मसंघ में एक अनुपम त्रिवेणी प्रवाहित है:

–आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु से चली आ रही मर्यादाओं की पावन नदी,

–केंद्र में आचार्यप्रवर का हिमालयी सुदीर्घ अनुभव, और

–आगे युवाचार्यश्री की ऊर्जावान, प्रखर दृष्टि।

यह वर्धापना उस दिव्य गुरु-दृष्टि का वंदन है जिसने भविष्य की बागडोर सुरक्षित हाथों में सौंपी; यह अभिनंदन उस विनयमूर्ति शिष्य का है जिसने स्वयं को पूर्णतः गुरु-आज्ञा में विसर्जित कर दिया।

युवाचार्यश्री महावीर के पावन चरणों में चतुर्विध धर्मसंघ की ओर से अनंत-अनंत भावांजलि एवं मंगल वर्धापना! गुरु-विश्वास अमर रहे, तेरापंथ धर्मसंघ जयवंता रहे!

कलमकारों की आस्था : 'महाश्रमण के महावीर' को संपादकीय वंदन

वंदे आचार्यवरम्, वंदे युवाचार्यवरम्

रोहित कोठारी, बेंगलुरु, भूतपूर्व का. संपादक, तेरापंथ टाइम्स

ऐतिहासिक एवं सौभाग्यशाली अवसर : विश्वविख्यात तेरापंथ धर्मसंघ में लगभग 26 वर्षों बाद 'वंदे आचार्यवरम्' के भक्तिभावित स्वरों के साथ-साथ 'वंदे युवाचार्यवरम्' की शब्दावली का प्रयोग करने का अवसर प्राप्त हुआ है। ऐसा अवसर प्राप्त कर स्वयं को भाग्यशाली जान रहा हूँ।

आचार्य प्रवर का निश्चिंतकारी चिंतन : तेरापंथ धर्मसंघ की एक विशेष बात है कि यहाँ किसी को चिंता नहीं करनी पड़ती, क्योंकि चिंतन करने वाले स्वयं परम पूज्य आचार्य प्रवर होते हैं। चरित्रात्माओं के एक वर्ग में किसकी नियुक्ति करनी है, स्वास्थ्य लाभ के लिए किसे किसके साथ रखवाना है, किस गाँव या शहर में किनका चातुर्मास या प्रवास करवाना है—यह सारा कार्य आचार्य प्रवर के चिंतन से हो जाता है। सेनानायक को तो इतनी सब व्यवस्थाओं के लिए श्रम का नियोजन करना ही होता है, पर उनका श्रम संघ के हर सदस्य को निश्चिंतता की अनुभूति करवाता है।

उत्तराधिकारी चयनः धर्मसंघ की अक्षुण्ण परंपराः ये सब आचार्य प्रवर के लिए दैनंदिन कार्य हो सकते हैं, पर धर्मसंघ की बागडोर कौन संभालेगा, यह अति महत्वपूर्ण कार्य भी एकमात्र वर्तमान आचार्य के अधिकार क्षेत्र में आता है। महामना आचार्य श्री भिक्षु ने इस धर्मसंघ को जो अक्षुण्ण जन्मघूँटी प्रदान की है—वर्तमान आचार्य अपने गुरु भाई या शिष्य को उत्तराधिकारी बनाए तो उसे सभी साधु-साध्वियाँ सहर्ष स्वीकार करें—यह हमारे धर्मसंघ का प्राणतत्व बना हुआ है। अतः उत्तराधिकारी का चयन केवल किसी पद पर नियुक्ति नहीं, बल्कि धर्मसंघ की भावी यात्रा की दिशा निर्धारित करने वाला महनीय निर्णय है।

पूर्वाभास और अगाध विश्वास का संबंध : आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में आयोजित दीक्षा समारोह के समय मुनि महावीर कुमार जी का केशलोच संस्कार युवाचार्य श्री महाश्रमण जी ने किया था। लगता है, तब से ही महाप्रज्ञ, महाश्रमण और महावीर का वह तार जुड़ गया था। आगे जब बरपथार, असम में पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मुख्य मुनि पद पर मुनि महावीर कुमार जी की नियुक्ति की, तब फरमाया था कि, 'आज मैं 90% निश्चिंत हो गया हूँ।' यह केवल विश्वास का प्रमाण नहीं था, बल्कि वर्षों के चिंतन, परख और दूरदृष्टि का प्रमाण था।

तेरापंथ का अनुपम नेतृत्व निर्माण मॉडल : आज विश्व में अनेकों प्रकार के ट्रेनिंग मॉड्यूल चलते हैं, लीडरशिप डेवलपमेंट के कोर्सेस चलते हैं, पर जब तेरापंथ धर्मसंघ की साधु संस्था को देखते हैं, तो यहाँ अनुशासन, प्रबंधन कौशल, व्यक्तित्व और नेतृत्व निर्माण का जो सुंदर क्रम चलता है, वह अन्यत्र ढूँढ पाना मुश्किल है। यहाँ नेतृत्व का निर्माण किसी कक्षा या कुछ दिनों के प्रशिक्षण से नहीं, बल्कि वर्षों की साधना, अनुशासन, सेवा, जिम्मेदारियों और निरंतर मार्गदर्शन से होता है। आचार्य प्रवर के सान्निध्य में यह प्रशिक्षण जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में निरंतर चलता रहता है।

> **पूर्वाभास और अगाध विश्वास**
> बरपथार में मुख्य मुनि बनाते समय आचार्यश्री का फरमाना— 'आज मैं 90% निश्चिंत हो गया हूँ... वर्षों के चिंतन, परख और दिव्य दूरदृष्टि का प्रमाण था।

बहुमुखी प्रतिभा और विकास की यात्रा : श्रेष्ठ श्रुताराधक मुख्य मुनि प्रवर शुरुआती दिनों में अपनी सुमधुर और ओजस्वी वाणी से गीतों का संगान कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे। फिर कभी-कभी आपश्री वक्तव्य के माध्यम से भी जनता को लाभान्वित कराते। कुछ समय बाद आपश्री बहुश्रुत परिषद के संयोजक के रूप में मनोनीत हुए। आगे आचार्य प्रवर ने आपको घरों में पगलिए के लिए भिजवाना प्रारंभ किया। इतने सब कार्यों में जहाँ एक ओर आपश्री का विकास हुआ, वहीं धर्मसंघ के हर श्रावक-श्राविका के मन-मस्तिष्क में मुख्यमुनि प्रवर ने अपना स्थान बना लिया। गीत-संगान से लेकर ओजस्वी वक्तृत्व तक, बहुश्रुत परिषद के संयोजक से लेकर घर-घर पगलिए तक, रात्रिकालीन रामायण के व्याख्यान से लेकर वर्तमान लाडनूं प्रवास में भिखू जश रसायन के वाचन तक—आपश्री की बहुमुखी प्रतिभा निरंतर सामने आती रही है।

योग्य पात्र को महनीय सौगात : यह सब कुछ आचार्य प्रवर के दिशा-निर्देश से ही संभव था। आचार्य प्रवर ने जिस प्रकार अपने उत्तराधिकारी को क्रमशः विभिन्न दायित्व सौंपते हुए तैयार किया, वह सबके लिए अनुकरणीय है। जिस व्यक्ति की प्रतिभा को पहचानकर, उसकी क्षमताओं को परखकर और उसे निरंतर दायित्व देकर आचार्य प्रवर ने तैयार किया, उसी उपयुक्त पात्र की युवाचार्य नियुक्ति के रूप में धर्मसंघ को एक महनीय सौगात प्राप्त हुई है। इसके लिए संपूर्ण धर्मसंघ आचार्य प्रवर के प्रति कृतज्ञ है, नतमस्तक है।

> **निश्चिंतता और गुरु-चिंतन**
> तेरापंथ में किसी को चिंता करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि सेनानायक रुपी गुरु का चिंतन ही पूरे धर्मसंघ को निश्चिंतता की अनुभूति कराता है।

खोज और पात्रता का सुंदर संगम : अपने समर्पण, साधना, सहजता, गंभीरता आदि अनेक गुणों से युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के अनेकों वर्षों की खोज को पूर्णता प्रदान करवाकर जो कार्य किया है, वह सबके लिए आनंददायक और प्रेरणादायक है। आचार्य प्रवर की वर्षों की खोज और युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी की साधना, समर्पण एवं पात्रता का यह सुंदर संगम आज धर्मसंघ के लिए विशेष आनंद का विषय है।

मंगलभावना एवं वंदन : युवाचार्य मनोनयन एवं वर्धापन के इस अवसर पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के नवम युवाचार्य को शत-शत वंदन। आचार्य-युवाचार्य की यह वीर गोयम-सी जोड़ी युगों-युगों तक धर्मसंघ को अपने ज्ञान, साधना और नेतृत्व से आलोकित करती रहे—इसी मंगलभावना के साथ अनंत शुभकामनाएँ। **वंदे आचार्यवरम्, वंदे युवाचार्यवरम्।**

उत्तराधिकार नहीं, उत्तरदायित्व का उज्ज्वल संकल्प

विपिन पितलिया, अजमेर, कार्यकारी संपादक, युवादृष्टि

आचार्य श्री महाश्रमण जी की करुणा, अनुशासन, अहिंसा, संयम और आत्म-साधना से निर्मित जीवनदृष्टि ने तेरापंथ को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। उनके सानिध्य में जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ दिनों दिन नए आयाम स्थापित कर रहा है। इस धर्मसंघ की गौरवशाली परंपरा में आचार्य पद केवल एक पद नहीं, बल्कि साधना, अनुशासन, त्याग, दूरदृष्टि, करुणा और संघ-समर्पण की सर्वोच्च जिम्मेदारी है। इस परंपरा में आचार्य का चयन किसी सांसारिक उत्तराधिकार की तरह नहीं, बल्कि गुण, योग्यता, तप, विवेक, विनय और संघ के प्रति समर्पण की कसौटियों पर होता है।

जब आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी को भावी युवाचार्य के रूप में मनोनीत किया, तो यह केवल एक घोषणा नहीं रही—यह तेरापंथ धर्मसंघ की परंपरा, वर्तमान की उपलब्धियों और भविष्य की संभावनाओं को जोड़ने वाला ऐतिहासिक क्षण बन गया।

> **उत्तराधिकार का वास्तविक मर्म**
> तेरापंथ में आचार्य पद केवल एक पद नहीं, बल्कि त्याग, अनुशासन और संघ-समर्पण की सर्वोच्च जिम्मेदारी है — यह सिंहासन का नहीं, संस्कारों का उत्तराधिकार है।

१.ऐतिहासिक मनोनयन और गुरु-दृष्टि : यह मनोनयन उस गुरु-दृष्टि का प्रमाण है, जो शिष्य के भीतर वर्तमान से कहीं आगे का भविष्य देखती है।

A. परंपरा और आधुनिकता का संगम : आचार्य प्रवर ने धर्मसंघ को एक ऐसी दृष्टि प्रदान की है, जिसमें परंपरा की दृढ़ता के साथ युवा ऊर्जा, आधुनिक दृष्टि और भविष्य की आवश्यकताओं को स्थान मिलता दिखाई देता है।

B. साधना और समर्पण का सम्मान : वर्षों की निकटता, शिष्य की साधना, व्यवहार, निर्णय क्षमता और संघनिष्ठा को देखकर ही गुरु इतनी बड़ी जिम्मेदारी सौंपते हैं। यह मनोनयन गुरु की परीक्षा के साथ शिष्य की साधना का सम्मान भी है।

२. युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी का प्रेरणादायी व्यक्तित्व : युवाचार्य श्री का व्यक्तित्व साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं और युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है।

A. गुणों का सुंदर समन्वय : उनके व्यक्तित्व में गंभीरता के साथ सहजता, ज्ञान के साथ विनय, अनुशासन के साथ आत्मीयता और आध्यात्मिक दृष्टि के साथ व्यवहार-कौशल का अद्भुत संतुलन है।

B. साधना-प्रधान जीवनशैली : जैन साधु का जीवन बाहरी उपलब्धियों से नहीं, आत्म-अनुशासन और आंतरिक विकास से मापा जाता है। संयम, स्वाध्याय, तप, विवेक और सहनशीलता उनके व्यक्तित्व की आधारशिला हैं। उनका जीवन संयम और सामर्थ्य का संगम है।

C. युवाओं से जीवंत संवाद : आज की युवा पीढ़ी प्रश्न करती है और परंपराओं को नए संदर्भ में समझना चाहती है। वे युवाओं की जिज्ञासाओं को समझकर उनका समाधान करते हुए उन्हें आध्यात्मिकता से जोड़ने में सक्षम हैं।

३. गुरु-शिष्य परंपरा और श्रावकों का समर्पण : हमारी संस्कृति में गुरु-शिष्य संबंध केवल शिक्षा देने और ग्रहण करने का नहीं है; गुरु शिष्य को जीवन की दिशा देते हैं और शिष्य गुरु के मूल्यों को आत्मसात कर परंपरा का संवाहक बनता है।

A. अविस्मरणीय क्षण : प्रवचन पंडाल में जब आचार्य प्रवर ने यह घोषणा की, तो वह क्षण उपस्थित जनसमुदाय के लिए अत्यंत भावुक रहा होगा।

B. श्रावक भावना : यद्यपि मैं स्वयं इस क्षण का प्रत्यक्ष साक्षी नहीं था, लेकिन मेरा मन किया कि अभी लाडनूं जाकर दर्शन कर लूं। यह भावना श्रावकों में गहरे संघ-समर्पण के संस्कारों से आती है।

C. सुरक्षित भविष्य का विश्वास : गुरु अपनी साधना से अर्जित अनुभव शिष्य को सौंप रहे हैं और शिष्य विनम्रता से उसे स्वीकार कर रहा है। यह विश्वास दिलाता है कि तेरापंथ की उज्ज्वल परंपरा सुरक्षित हाथों में है।

४. अनन्य गुरुभक्ति का आदर्श : युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के व्यक्तित्व का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष उनकी अनन्य गुरुभक्ति है।

A.आचरण में समर्पण : जैन साधना परंपरा में गुरु के प्रति श्रद्धा केवल भावनात्मक जुड़ाव नहीं, बल्कि उनके निर्देशों को जीवन का मार्ग मानना है। उन्होंने गुरु के जीवन-मूल्यों को अपने आचरण में उतारा है।

B. सच्ची गुरुभक्ति का मर्म : सच्ची गुरुभक्ति तब प्रकट होती है, जब शिष्य गुरु की दृष्टि को समझता है, उनके आदर्शों को आत्मसात करता है और सौंपे गए दायित्व को संघ की सेवा मानकर स्वीकार करता है।

५. बदलता परिवेश और भावी चुनौतियां : आचार्य परंपरा केवल वर्तमान के संचालन की व्यवस्था नहीं, बल्कि भविष्य को संस्कारित करने की सतत प्रक्रिया है।

A. युग की आवश्यकता : तकनीक, सोशल मीडिया, उपभोक्तावाद और तनाव के इस दौर में युवा पीढ़ी आध्यात्मिकता को सहज रूप में समझना चाहती है।

> **सुरक्षित भविष्य का अटूट विश्वास**
> जब गुरु अपनी साधना का अनुभव शिष्य को सौंपते हैं और शिष्य उसे विनम्रता से स्वीकार करता है, तब यह विश्वास जगता है कि धर्मसंघ का भविष्य सुरक्षित हाथों में है।

B. सक्षम नेतृत्व : आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी का मनोनयन इसी सतत परंपरा की अगली कड़ी है, जो आने वाली पीढ़ियों को भी दिशा देती रहेगी।

मंगलकामना : तेरापंथ की यात्रा में यह नया अध्याय निश्चित रूप से स्मरणीय रहेगा। गुरु की दृष्टि, शिष्य की साधना, संघ का विश्वास और भविष्य की संभावनाएं—इन चारों का सुंदर संगम इस मनोनयन में दिखाई देता है। आचार्य श्री महाश्रमण जी के मार्गदर्शन में युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी की साधना प्रखर हो तथा उनके ज्ञान और चिंतन से युवाओं का आध्यात्मिक विकास हो, यही इस ऐतिहासिक प्रसंग की सबसे सुंदर मंगलकामना है।

'क्योंकि सच्चा उत्तराधिकार सिंहासन का नहीं, संस्कारों का होता है; अधिकार का नहीं, उत्तरदायित्व का होता है; और परंपरा का सबसे उज्ज्वल भविष्य वही होता है, जिसे गुरु अपने शिष्य में पहचान लेता है।

संक्षिप्त खबर

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 का आयोजन

रायपुर। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी अंतर्गत अणुव्रत समिति, रायपुर द्वारा जो अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा प्रतिवर्ष अलग-अलग विषयों आधारित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट आयोजित किया जाता है जिसके इस वर्ष 2026 जिसका मुख्य विषय है 'हमारी ताकत हमारा परिवार' अंतर्गत 5 विधाओं भाषण, कविता, गायन, चित्रकला व निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें भारत भर के विभिन्न स्कूलों के साथ ही छत्तीसगढ़ के 101 स्कूल जिसमें रायपुर से 6 स्कूल अपनी सहभागिता निभा रहे हैं। इसी सहभागिता अंतर्गत रायपुर स्थित व्यास विद्या पीठ स्कूल में विधालय स्तरीय प्रतियोगीताओं का आयोजन किया गया। जिसमें 78 विद्यार्थीयों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता आयोजन संदर्भ में वीरेंद्र डागा, किशोर खाटेड़ के साथ स्कूल के राजकुमार व्यास व शिक्षिकाओं का भरपूर सहयोग मिला।

प्रतियोगिता का आयोजन

गंगाशहर। तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में किशोर मण्डल गंगाशहर की प्रस्तुति आजमाओ अपना भाग्य प्रतियोगिता का आयोजन साध्वी त्रिशला कुमारी जी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन गंगाशहर में किया गया। प्रतियोगिता प्रभारी लक्ष्य भंसाली ने बताया कि गुरु इंगित शनिवार की 7 से 8 सामायिक के उपरांत आयोजित प्रतियोगिता में 12 टीमों के 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में ज्ञान, भाग्य और रोमांच का अद्भुत संगम देखने को मिला व सभी उम्र के प्रतिभागियों ने इसमें भाग लेकर अपने ज्ञान को बढ़ाया।

शपथ ग्रहण समारोह

गाँधीनगर दिल्ली। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि डॉ. अभिजीत कुमार जी व मुनि जागृत कुमार जी परम हर्ष हो रहा है तेरापंथ युवक परिषद गाँधीनगर दिल्ली के तृतीय कार्यकाल सत्र 2026-27 अध्यक्ष प्रकाश सुराणा व उनकी टीम का शपथ ग्रहण का समारोह जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन, विकास मंच, कृष्णानगर दिल्ली मे आयोजित किया गया। संस्कारक व उपासक मनीष छलाणी व महेन्द्र कुमार श्यामसुखा ने पुरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया। दिल्ली सभा अध्यक्ष विमल बेंगानी ने नव निर्वाचित अध्यक्ष प्रकाश सुराणा को पद एवं दायित्व की शपथ दिलाई। तत्पश्चात तेयुप अध्यक्ष प्रकाश सुराणा ने अपनी पुरी टीम की घोषणा कर उन्हें शपथ दिलाई। डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान कर नव मनोनीत सदस्यों का उत्साह वर्धन किया। इस शुभ अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति दिल्ली महामंत्री सुखराज सेठिया, दिल्ली सभा अध्यक्ष विमल बेंगानी आदि की गरिमामय उपस्थिति रही। इसके साथ कार्यक्रम में अभातेयुप प्रवृत्ति सलाहकार जतन श्यामसुखा, TKM ब्लू ब्रिगेड सदस्य सौरभ सिंघी सहित तेयुप व TKM के लगभग 70-90 से ज्यादा सदस्यगण एवं काफी संख्या में श्रावक श्राविका समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन उपाध्यक्ष प्रथम अंकित श्यामसुखा व शपथ के बाद नवमनोनीत मंत्री राजेश सेठिया ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष प्रथम अंकित श्यामसुखा ने किया।

मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का भव्य आयोजन

लूणकरणसर। कार्यक्रम में उपासक विनोद बोरड़िया एवं उपासक रतनलाल मेहता ने मंगलमय मंत्रोच्चार के साथ बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान की। उन्होंने नवकार मंत्र की महिमा, मंत्रों के आध्यात्मिक महत्व, संस्कारयुक्त जीवन, अनुशासन, नैतिक मूल्यों एवं आध्यात्मिक साधना के विषय में प्रेरणादायी मार्गदर्शन दिया। मंत्र दीक्षा के दौरान बालक-बालिकाओं ने अत्यंत श्रद्धा एवं भक्ति भाव से नवकार मंत्र सहित विभिन्न मंगल मंत्रों का उच्चारण किया। पूरे सभागार में आध्यात्मिक वातावरण, अनुशासन और उत्साह का अद्भुत संगम देखने को मिला।

संकल्प से संयम की ओर बढ़ते कदम

दीक्षार्थी रुचिका मालू का मंगलभावना समारोह

बालोतरा।

तेरापंथ सभा द्वारा आयोजित समारोह में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- आज दीक्षार्थिनी रुचिका की अभिवन्दना की जा रही है, यह व्यक्तित्व की नहीं, उसके संकल्प शक्ति और वैराग्य की अभि-वन्दना है। इसका मुमुक्षु से संयमी जीवन की ओर प्रस्थान हो रहा है। आज इसके अभिभावक माता-पिता निश्चितता की अनुभूति कर रहे हैं। क्योंकि तेरापंथ धर्मसंघ एक गुरुनिष्ठ मर्यादित धर्म संघ है। इस संघ में हर सदस्य आमरण निश्चित रहता है। आत्मिक आहलाद का अनुभव करता है। साध्वी श्री ने कहा- दुःख मुक्ति के इस मार्ग पर चरणन्यास करने वाला शाश्वत सुख का अनुभव करता है। परिषद को विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा- सिवांची मालानी उर्वरा भूमि है। भाग्योदय से युवाचार्य प्रवर और साध्वी वर्या इस भूमि के दो नक्षत्र संघ गगन में चमक रहे है। अभिभावक गण अपनी संतान रुपी पुष्प को श्री चरणों में समर्पित करें, संघ सम्पदा को बढ़ाए और पूज्यवरों का स्वप्न साकार करे। दीक्षार्थी रुचिका के प्रति अपने उद्गार में कहा- श्रद्धा, समर्पण विनयभाव से निरन्तर प्रवर्धमान बनी रहे। साध्वी डॉ राजुल प्रभाजी ने कहा- रुचिका का अकम्प संकल्प दीप सदा प्रज्वलित रहे। साध्वी सुदर्शनप्रभा, साध्वी डॉ राजुल प्रभा, साध्वी डॉ चैतन्य प्रभा, साध्वी डॉ शौर्यप्रभा जी ने गीत का संगान कर आध्यात्मिक शुभकामना दीं। तेरापंथ सभा अध्यक्ष राणमल फोला मेहता ने दीक्षार्थी से रुचिका के संयम की अनुमोदना की। दीक्षार्थिनी रुचिका ने कहा- सोभाग्य से मेने तेरापंथ में प्रवेश किया, शक्तिशाली गुरु की चरण मिली, जिनके सान्निध्य में मुझे संयम जीवन मिलेगा। दीक्षार्थिनी के पिता रुपेश मालू ने कहा- मैं मंदिरमार्गी था, मुनि मोहनलालजी आमेट की प्रेरणा से मैंने धर्म के असली रूप को समझा, जीवन जागृत हुआ, तेरापंथ जैसे पवित्र संघ की शरण पायी, यह मेरा परम सोभाग्य है। मेरी पुत्री उस संघ में साधना के लिए प्रस्थान कर रही है यह मेरा अहोभाग्य है।

विचार अनेक, मंजिल एक-संत समागम का संदेश

दो धाराओं का आध्यात्मिक मिलन व परस्पर संवाद

राजराजेश्वरी नगर।

स्वामी मधुसूदनानन्द पुरी (पीठाधिपति/सर्वाधिकारी) ॐकार आश्रम महासंस्थान ट्रस्ट के पूज्य महाराज श्री तेरापंथ भवन पधारे। इस अवसर पर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि आकाश कुमार जी ठाणा-2 के साथ उनका आध्यात्मिक मिलन एवं परस्पर संवाद हुआ। मुनिश्री ने कहा आचार्यप्रवर की अहिंसा यात्रा के 3 मुख्य उद्देश्यों में से एक उद्देश्य था सद्भावना का विकास। स्वामी मधुसूदनानन्द पुरी ने पूर्व में भी गुरुदेव के बेंगलुरु आगमन पर केंगेरी में स्वागत किया था। आप समय समय पर जैन मुनियों से मिलते रहते हैं। भारतवर्ष में ऋषि-मुनि परंपरा अनादिकाल से चली आ रही है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमने इस ऋषि-मुनियों की धरती पर जन्म लिया। आज भी विज्ञान रिसर्च करता है, रिसर्च का अर्थ है जो पूर्व में रहा है उसको पुनः खोजना। व्यक्ति को सदैव सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। नकारात्मकता आगे बढ़ने के राह में अवरोध उत्पन्न करती है। स्वामी मधुसूदनानन्द पुरी ने राजराजेश्वरी नगर को देवी मां के वरदान से विकसित भूमि बताया। उन्होंने कहा अलग-अलग विचारधाराओं को ही दर्शन कहते हैं। मंजिल सबकी एक ही है– मोक्ष। इसके लिए सबसे पहले हमें स्वयं को जानना होगा और उसे जानने का मार्ग ही सन्मार्ग है। और यह सत्संग से ही प्राप्त होता है। ऋषि परम्परा ज्ञान की मशाल को लेकर चल रही है। धर्म का असर अर्थ है way of life अर्थात कैसे जीवन का सदुपयोग करें। तथास्तु ग्रुप के जितेन्द्र कोठारी ने कहा तथास्तु ग्रुप धर्म को साथ लेकर चलने वालों का ग्रुप है जो समय समय पर ऐसे संत समागम के अवसर बनाने का प्रयास करता रहता है। महामण्डलेश्वर मधुसूदनानन्द पुरी स्वामी जी अति सरल स्वभाव वाले हैं तथा शास्त्र ज्ञान को महत्व देते हैं। सभाध्यक्ष कमलसिंह दुगड़, तेयुप अध्यक्ष सरल पटावरी, मंत्री संदीप बैद, तेममं अध्यक्ष मंजु बोथरा आदि की अच्छी उपस्थिति रही। कुशल मंच संचालन मुनि हितेन्द्र कुमार जी ने किया।

पैंसठिया छंद का सुंदर एवं भव्य आयोजन

विलेपार्ले, मुंबई।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी राकेशकुमारीजी आदि ठाणा –४ के सान्निध्य में पैंसठिया छंद अनुष्ठान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वी राकेश कुमारीजी नें नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की सुरुवात की।

साध्वी मलयविभाजी, साध्वी विपुलयशाजी व साध्वी चेतस्वीप्रभाजीने मंगलाचरण किया। साध्वी राकेशकुमारीजी ने श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा- तू ही है अपने भाग्य का निर्माता विषय को स्पष्ट करते हुए पैंसठिया मंत्र यंत्र छंद के बारे में जानकारी दी। साध्वीश्री ने कहा आप सभी के जीवन में कोई न कोई समस्या, दुःख, तनाव परिवार में क्लेश, व्यापार में बाधा, सेहत की अव्यस्थता आदि ये सब क्यों ? साध्वीश्री ने कहा कहीं ना कहीं हमारे कर्म और ग्रह दोष बधाएं उपस्थित कर रहे हैं।

जैन शासन में पैंसठिया यंत्र छंद का बहुत बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ये पैंसठ पदों की स्तुती मंत्र है इसमें 24 तीर्थंकर, गणधर, आचार्य, उपाध्याय, जैन साधुओं को वंदन किया गया है। जैन आगमो में बताया गया है जिस घर में पैंसठिया छन्द का जाप होता है वहां नकारात्मक उर्जा नहीं टिकती। इससे कर्मो की निर्जरा भी होती है। इसने आत्मा पर आया हुआ कर्मों का आवरण हटता है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी इसकी उपयोगिता सिद्ध होती है। जब हम सामूहिक रूप में लय के साथ मंत्र का उच्चारण करते है तो हमारे शरीर के अन्दर और बाहर वाइब्रेशन बनता है। यह वाइब्रेशन मन को शांत, वातावरण को पवित्र करता है। जब समूह में लयबद्ध गाते हैं तो 100 गुणा उर्जा बढ़ जाती है। इससे व्यक्ति को तीन लाभ की प्राप्ति होती है, आज के परिवेश में पहला लाभ- शांति व उर्जा की प्राप्ति होती है मन शांत होता है। निर्णायक शक्ति का विकास होता है। बान्द्रा, सांताक्रुज, खार, अँधेरी, पार्ला, जोगेश्वरी, के श्रावक श्राविकाओं ने उत्साह से भाग लिया।

संक्षिप्त खबर

मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन

गाँधीनगर दिल्ली। तेयुप गाँधीनगर दिल्ली के अध्यक्ष प्रकाश सुराणा ने अपने व्यक्तव्य में मंत्र दीक्षा लेने वाले सभी 15 बच्चों उनके अभिभावकों व सम्पूर्ण श्रावक श्राविका समाज का स्वागत व अभिनंदन किया। उसके बाद मुनि डॉ. अभिजीत कुमार जी व मुनि जागृत कुमारद्वारा नमस्कार महामंत्र का लयबद्ध उच्चारण एवं महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया गया। मुनिश्री ने गांधीनगर ज्ञानशाला के 15 बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलाई। मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र और मंत्र दीक्षा के सभी संकल्पों की महत्ता को समझाया और सभी बच्चों को रोजाना नमस्कार महामंत्र की 1 माला का उच्चारण करने की प्रेरणा दी। कार्यशाला में अभातेयुप प्रवृत्ति सलाहकार व परामर्शक जतन श्यामसुखा, विभिन्न सभा संस्थाओं के गणमान्य पदाधिकारियों व श्रावक श्राविका समाज की गरिमामयी उपस्थिति रही। मंच का कुशल संचालन तेयुप गाँधीनगर दिल्ली के मंत्री राजेश सेठिया ने किया। तेयुप गाँधीनगर ज्ञानशाला प्रभारी व गाँधीनगर ज्ञानशाला सह-व्यवस्थापक वैभव सुराणा ने आभार ज्ञापन किया।

मंत्र दीक्षा कार्यशाला

शिरपुर। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की प्रेरणा एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान मे तेरापंथ युवक परिषद्, शिरपुर द्वारा मंत्र दीक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ ज्ञानशाला प्रशिक्षिका करिश्मा बाफना द्वारा त्रिपदी वंदना एवं नवकार महामंत्र से हुई। युवक परिषद् के अध्यक्ष स्वप्निल गेलडा ने मंत्र दीक्षा के बारे में जानकारी दी। युवक परिषद् के मंत्री कल्पेश गेलडा ने नवकार महामंत्र का चमत्कार एक घटना के द्वारा बताया। युवक परिषद् के पूर्व मंत्री चंद्रशेखर गेलडा भी उपस्थित थे। परिषद् द्वारा बच्चों को मंत्र दीक्षा पुस्तक भेंट की गई। मंगलपाठ द्वारा कार्यशाला का समापन हुआ।

मंत्र दीक्षा एवं संस्कार निर्माण शिविर

सरदारशहर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशानुसार मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम सरदारशहर तेरापंथ भवन में उपासिका बहनों कि उपस्थिति में मनाया गया। ज्ञानशाला के लगभग 70 बच्चो की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष श्रीचंद नौलखा, तेयुप अध्यक्ष मोहित, महिला मंडल अध्यक्षा शांतिदेवी चिंडालिया, ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका कांता चिंडालिया की उपस्थिति रही। तेयुप द्वारा सभी बच्चों को एवं उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों और प्रशिक्षकाओं के लिए अल्पाहार का व्यवस्था भी की गई। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री धीरज छाजेड़ द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संयोजन ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका सुनीता कुंडलिया ने किया।

दुबई तेरापंथ सभा का प्रतिनिधि पहुंचा तुलसी समाधि स्थल

दुबई। तेरापंथ सभा के सोलह जनों का प्रतिनिधि मंडल अध्यक्ष अमित बैद, मंत्री ज्योति समदरिया, पूर्व अध्यक्ष सुनील भाई जवेरी के नेतृत्व में आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, नैतिकता का शक्तिपीठ पर पहुंचा।संस्था के मीडिया प्रभारी धर्मेन्द्र डाकलिया ने बताया कि प्रतिनिधि मण्डल के आगमन पर आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के निवर्तमान अध्यक्ष हंसराज डागा, मंत्री दीपक आंचलिया, उपाध्यक्ष किशन बैद आदि पदाधिकारियों ने उन सबका स्वागत अभिनन्दन किया।

दीक्षार्थी मंगल भावना समारोह का आयोजन

उधना। दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह का अत्यंत श्रद्धा एवं भक्ति भाव से आयोजन किया गया। इस पावन अवसर पर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशाजी (ठाणा-4) के पावन सान्निध्य ने कार्यक्रम को विशेष आध्यात्मिक ऊँचाइयों तक पहुँचाया। समारोह के केंद्र में रहे दीक्षार्थी मुमुक्षु सुमन नाहटा एवं मुमुक्षु भावना नाहटा (कालू), जिनके दीक्षा संकल्प को उपस्थित समस्त श्रावक-श्राविकाओं ने भावपूर्वक अनुमोदित किया।

चन्द्र प्राप्ति यंत्र अनुष्ठान का आयोजन

बालोतरा।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की प्रबुद्ध शिष्या प्रोफेसर डॉ साध्वी मंगल प्रज्ञाजी ने चन्द्रप्राप्ति यंत्र अनुष्ठान की विशेष साधना करवाई। अनुष्ठान से पूर्व विशाल साधक साधिका समुदाय को उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा-आगम आधारित आध्यात्मिक मंत्र साधना का मूल उद्देश्य आर्तध्यान को कम करना है।

अनुष्ठान का प्रयोग कर्म निर्जरा, शारीरिक, मानसिक भावनात्मक विघ्न बाधाओं को कम करने के लिए है। प्राचीन समय से जैन प्रभावक चामत्कारिक प्रयोग होते रहे हैं। मंत्र साधक महान आचार्यों का नामो उल्लेख करते हुए एवं जैन परम्परा में मंत्रों का वैशिष्ट्य बताते हुए कहा- जैन परम्परा के अनेक आचार्यों ने मंत्र पूर्वक यंत्र साधना की है। इसका वृहद् इतिहास पढनीय है । यतियुग में भी मंत्रो एवं यंत्रों के अनेक प्रयोग किए गए है। पूर्वाचार्यों ने 'नमिऊण कल्प की रचना की।

साध्वीश्री जी ने मंत्रों की सुरक्षाकवच बताते हुए अनेक ऐतिहासिक घटना प्रसंगों का श्रवण करवाया उन्होंने चन्द्र प्राप्ति सूत्र की द्वितीय गाथा का विशेष अनुष्ठान करवाया एवं सारगर्भित व्याख्या की। उन्होंने कहा कर्मोदय से व्यक्ति के जीवन में अनेक समस्याएं आती हैं जो साधना में विघ्न पैदा करती है।

आन्तरिक, बाह्य विघ्न बाधाओं से निजात पाने और अशुभ कर्म विनाश के लिए साधना अपेक्षित है ।आचार्य भिक्षु ने भी करोड़ो - जप अनुष्ठान किए हैं। बीज मंत्रों के साथ आगम-गाथा का अनुष्ठान अधिक शक्तिशाली बन जाता है। प्रोफेसर डॉ साध्वी मंगल प्रज्ञा जी ने कहा- हर व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है जिन्दगी में आने वाली विषम परिस्थितियों से उबरना चाहता है, समस्यायों का समाधान चाहता है।

हमें विरासत के रूप में मंत्रों का विशेष खजाना मिला हुआ है, आवश्यक है व्यक्ति उसका सदुपयोग करें। अनुष्ठान के साथ व्रत और तप का योग विशेष फलदायी बनता है। सम्पूर्ण परिषद ने साध्वी श्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। साध्वी राजुल प्रभा जी ने उपासक दशा सूत्र के द्वारा बारह व्रत धारण की प्रेरणा दी।

अनुष्ठान से पूर्व डॉ साध्वी राजुल प्रभा जी एवं साध्वी डॉ चैतन्य प्रभाजी साध्वी डॉ शोर्य प्रभा जी ने - 'अनुष्ठान से जीवन आनन्दमय हो का सामूहिक संगान किया।

लोगस्स तीर्थंकर स्तुति का महान मंत्र है

दिव्य लोगस्स कल्प अनुष्ठान का भव्य आयोजन

सिकंदराबाद।

आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी के पावन सान्निध्य में 'दिव्य लोगस्स कल्प अनुष्ठान' का भव्य एवं श्रद्धामय आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद द्वारा किया गया। अनुष्ठान में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए लोगस्स की आराधना के माध्यम से आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि काव्य कुमारजी ने त्रिपदी वंदना का प्रयोग कराया। मंगलाचरण एवं वंदना के साथ ही तेरापंथ भवन का वातावरण भक्तिरस से ओतप्रोत हो गया। श्रद्धालुओं ने पूर्ण श्रद्धा, तन्मयता और एकाग्रता के साथ अनुष्ठान में सहभागिता की। इस अवसर पर मुनि दीप कुमारजी ने लोगस्स के आध्यात्मिक एवं आध्यात्मिक साधना की दृष्टि से महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा— 'लोगस्स तीर्थंकर स्तुति का महान मंत्र है। यह एक महाशक्ति है। भक्ति-साहित्य की एक अमर, अलौकिक एवं हृदयस्पर्शी रचना है। जैन समाज में इसका अत्यंत मान्य एवं लोकप्रिय स्थान है और इसे श्रद्धा एवं महत्व प्राप्त है।' मुनि श्री ने कहा कि लोगस्स केवल तीर्थंकरों की स्तुति मात्र नहीं, बल्कि साधक को भीतर से जोड़ने वाली एक प्रभावशाली आध्यात्मिक साधना है। इसके स्वाध्याय एवं स्तवन से साधक का मन श्रद्धा, भक्ति और आत्मचिंतन की ओर उन्मुख होता है। उन्होंने कहा कि 'लोगस्स शाश्वत सुख का राजपथ है। यह आरोग्य, बोधि, समाधि और सिद्धि प्रदान करने वाला है। लोगस्स में भक्ति की भागीरथी प्रवाहित होती है। साधक जब इसका पाठ करता है तो उसका हृदय भक्ति-रस से आप्लावित हुए बिना नहीं रहता।' मुनि दीप कुमारजी ने लोगस्स की मंत्रात्मक संरचना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह आगम-वर्णित एवं मंत्रगर्भित स्तवन है। इसके अक्षरों और पदों की संरचना में आध्यात्मिक दृष्टि से विशेष महत्त्व निहित है। उन्होंने कहा कि नियमित श्रद्धापूर्वक स्तवन करने से साधक के भीतर सकारात्मक ऊर्जा, श्रद्धा और आत्मबल का विकास होता है। उन्होंने कहा कि लोगस्स के माध्यम से तीर्थंकरों की स्तुति की जाती है। इसकी आराधना से अनिष्ट एवं अमंगल के प्रति भय कम होता है तथा साधक के भीतर शांति, संतुलन और आत्मविश्वास की भावना पुष्ट होती है। लोगस्स का नियमित पाठ मन को एकाग्र करने और आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने में सहायक बनता है।

किशोर दिवस उत्साहपूर्वक संपन्न

कांदिवली।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वाधान मे तेरापंथ युवक परिषद कांदिवली के निर्देशन मे तेरापंथ किशोर मंडल, कांदिवली द्वारा किशोर दिवस का आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम में 30 से अधिक किशोरों की उत्साहपूर्ण सहभागिता रही। शासनश्री साध्वी विद्यावती जी द्वितीय के पावन सान्निध्य एवं प्रेरणादायी मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम ने किशोरों में धार्मिक संस्कार, संगठन भावना, नेतृत्व क्षमता एवं आपसी आत्मीयता को और अधिक सुदृढ़ किया। मयंक धाकड़ – राष्ट्रीय प्रभारी, तेरापंथ किशोर मंडल, मिठालाल धाकड़ – अध्यक्ष, तेरापंथ सभा अनेक गणमान्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। भिक्षु स्वामी नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से किशोरों ने आचार्य भिक्षु के जीवन, आदर्शों एवं संदेश को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। जैन संस्कार विधि से जन्मदिवस मनाकर भारतीय एवं जैन संस्कृति के श्रेष्ठ संस्कारों का संदेश दिया गया। सामूहिक सामायिक में 30 से अधिक किशोरों ने एक साथ सहभागिता कर आध्यात्मिक साधना एवं आत्मचिंतन का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। टी.के.एम. लेगेसी रीयूनियन के अंतर्गत किशोर मंडल की प्रेरणादायी यात्रा का स्मरण किया गया। इस अवसर पर किशोर मंडल के प्रमुख प्रेरणास्रोत एवं सशक्त आधार स्तंभ अभिषेक चपलोत की विशेष उपस्थिति रही।

संक्षिप्त खबर

मंत्र दीक्षा कार्यशाला का आयोजन

चिक्कमगलुर। अ.भा.ते.यु.प.के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् चिक्कमगलुर द्वारा ज्ञानशाला बच्चों के लिए मंत्र दीक्षा कार्यशाला का सफ़ल आयोजन साध्वी पुण्ययशाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में किया गया। साध्वी बोधिप्रभाजी द्वारा रोचक कहानी के माध्यम से नवकार महामंत्र की महत्ता के बारे में समझाया गया। साध्वी पुण्ययशाजी ने ज्ञानशाला बच्चों को आध्यात्मिक, नैतिक और व्यावहारिक महत्त्व को समझाते हुए मंत्र दीक्षा के नियमों का वाचन कर मंत्र दीक्षा दिलाई।सभी बच्चों के समक्ष मंत्र दीक्षा के संकल्प सूत्र का वांचन करते हुए जीवनभर मास,मछली,अंडा,शराब,नशीले पदार्थो का सेवन नहीं करने, जूठ ना बोलने, अनुशासनमें रहने, नवकार महामंत्र का जाप करने हेतु एवं अच्छे बालक बननेआदि की प्रेरणा दी ! इस आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री राकेश कावड़िया द्वारा किया गया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

टोहाना। प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देश अनुसार एवं प्रेक्षा वाहिनी के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ भवन में अगस्त मास की प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन प्रेक्षावाहिनी संवाहिका उषा जैन की अध्यक्षता में किया गया। प्रेक्षा ध्यान के प्रयोग दीर्घ श्वास, कायोत्सर्ग व प्राणायाम के प्रयोग भी किए गए। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षा ध्यान का सिद्धांत देकर मानव कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

यह तपस्या का मौसम है

सिंकदराबाद। प्रेरक उद्बोधन देते हुए मुनि दीप कुमारजी ने कहा कि, 'जैसे श्रावण का महीना वर्षा ऋतु का प्रतीक है, वैसे ही यह तपस्या का भी श्रेष्ठ मौसम है। जैन धर्म में तप का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इतिहास में अनेक महान तपस्वियों ने तप के माध्यम से आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। तपस्या वही कर सकता है जिसमें दृढ़ मनोबल, साहस और आत्मविश्वास हो। आज के समय में, जब चारों ओर स्वादिष्ट व्यंजनों का आकर्षण है, ऐसे वातावरण में आठ दिन तक निराहार रहकर तप करना वास्तव में आत्मशक्ति का अद्भुत उदाहरण है।' उन्होंने आगे कहा कि 'तपस्या कभी भी किसी दबाव या दिखावे के लिए नहीं होती। यह पूर्णतः स्वेच्छा से, केवल कर्मों की निर्जरा और आत्मशुद्धि के उद्देश्य से की जाती है। गुरु कृपा से आज सिकंदराबाद के तेरापंथ भवन में एक साथ आठ अठाई तपस्याओं का शुभारंभ हुआ है। आशा है कि भविष्य में भी तपस्या के ऐसे अनुपम उपहार समाज को निरंतर प्राप्त होते रहेंगे।' मुनि काव्य कुमारजी ने भी तप की महिमा पर प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए।

मंत्र दीक्षा व किशोर दिवस का समायोजन

कटक। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद,कटक द्वारा मंत्र दीक्षोत्सव' कार्यक्रम का समायोजन मुनिश्री मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में किया गया। ज्ञानार्थियों को ज्ञानशाला के महत्व को समझाते हुए मुनि मोहजीत कुमार ने कहा- ज्ञानशाला का अभिनव उपक्रम आचार्य तुलसी ने अपनी दूर दृष्टि से किया। जो आज तक प्रवर्धमान है। ज्ञानशाला के माध्यम से भावी पीढ़ी में संस्कारों का निर्माण किया जाता है। यह प्रकल्प संस्कारों के जागरण का महत्वपूर्ण उपाय है। इससे बालक-बालिकाएं धर्म के प्रति जागरूक बनते हैं। उनके भीतर सद्भावों सत्क्रिया का विकास होता है। मुनिश्री ने पात्र बच्चों को मंत्र दीक्षा के संकल्प ग्रहण करवाये। मुनि जयेश कुमार ने अपने युग में चलने वाली ज्ञानशाला के अनुभवों प्रकट करते हुए कहा कि प्रत्येक ज्ञानार्थी को देव गुरु धर्म के प्रति गहरी श्रद्धा का विकास होना चाहिए। इसके लिए संकल्प शक्ति का जागरण करें। संकल्प बल से व्यक्ति महान बन सकता है। संकल्प शक्ति के जागरण का आधार नमस्कार महामंत्र है। इसका नित प्रति स्मरण भाव शुद्धि, कर्म शुद्धि, आत्म शुद्धि का महान आधार है। आज के दिन से जुड़े एक और उपक्रम किशोर दिवस के अंतर्गत तेरापंथ किशोर मंडल, कटक के सदस्यों द्वारा भिक्षु दर्शन पर आधारित नाटिका की प्रस्तुति की गयी। किशोर हर्ष डूंगरवाल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ कन्या मंडल, कटक ने राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्तुत की गयी सत्य का पथ–तेरापंथ नामक झांकी का समाज जनों के मध्य प्रदर्शन किया। तेयुप सदस्यों द्वारा मन्त्र दीक्षा प्राप्त ज्ञानार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

'चेंज योर थॉट्स' कार्यशाला का आयोजन

सेलम।

साध्वीश्री संयमलता जी के पावन सान्निध्य में प्रेरणादायी 'चेंज योर थॉट्स' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नवकार महामंत्र के मंगल उच्चारण से हुआ। साध्वी रौनकप्रभा जी ने सकारात्मक विचारों की महत्ता बताते हुए कहा कि हमारे विचार ही हमारी प्रतिक्रियाओं और व्यवहार को दिशा देते हैं। जैसे विचार होंगे, वैसी ही हमारी प्रतिक्रिया होगी। सकारात्मक सोच हमें विपरीत परिस्थितियों में भी संतुलित रहने और जीवन को बेहतर बनाने की प्रेरणा देती है। साध्वी मार्दवश्री जी ने कुशल संचालन करते हुए कहा— 'दुनिया हर पल रंग बदलती है और यह रंग हमारे थॉट्स पर निर्भर करता है। थॉट्स पॉजिटिव हों तो दुनिया रंगीन और नेगेटिव हों तो वही दुनिया बेरंग नजर आती है।' उन्होंने सरल एवं रोचक शैली में विचारों और दृष्टिकोण के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को समझाया। साध्वीश्री संयम लता जी ने 'चेंज योर थॉट्स' विषय पर अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि हमारे जीवन में होने वाले परिवर्तन की जड़ हमारे विचार हैं। परिस्थितियों, स्थान या लोगों को बदलने के बजाय यदि हम अपनी सोच और दृष्टिकोण को बदलें, तो जीवन में सकारात्मक परिवर्तन स्वतः आने लगता है। उन्होंने रिश्तों के संदर्भ में अत्यंत सुंदर उदाहरण देते हुए कहा कि हर रिश्ता हमसे कुछ अपेक्षा रखता है और रिश्तों को मधुर बनाए रखने के लिए कभी-कभी स्वयं को झुकाना भी पड़ता है। यदि हम कौशल्या जैसी सास चाहते हैं, तो पहले हमें यह देखना होगा कि हम स्वयं सीता जैसे गुण अपने भीतर रखते हैं या कैकेयी जैसे। यदि हम राम जैसा जीवनसाथी चाहते हैं, तो हमें आत्मचिंतन करना होगा कि हमारे विचार कहीं रावण जैसे तो नहीं हैं। उन्होंने 'गोल्ड' और 'गोल्ड प्लेटेड' का उदाहरण देते हुए कहा कि हर किसी को शुद्ध सोना पसंद आता है, गोल्ड प्लेटेड नहीं। उसी प्रकार दिखावटी नहीं, बल्कि शुद्ध एवं सकारात्मक विचारों वाला व्यक्तित्व ही वास्तव में सबको प्रिय लगता है। साध्वीश्री ने विभिन्न प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से बाल्यावस्था से युवावस्था तथा युवावस्था से वृद्धावस्था तक विचारों में आने वाले बदलावों को समझाया। उन्होंने विशेष रूप से युवा पीढ़ी को अपनी सोच में सकारात्मक परिवर्तन लाने की प्रेरणा दी।

Think Different Workshop का आयोजन

कटक।

मुनि मोहजीतकुमारजी के सान्निध्य तथा तेरापंथी सभा,कटक के तत्वावधान में Think Different Workshop के प्रथम चरण में 'विकास की सौगात, प्रकटे नव प्रभात' विषय पर कार्यशाला का आयोजन में धर्मपरिषद् को सम्बोधित करते हुए मुनि मोहजीतकुमारजी ने कहा कि विकास के लिए संवेगों पर अंकुश, सहिष्णुता- सामंजस्य को बढ़ाना, करुणा की चेतना को जागृत कर ही सत्य के सत्व को प्राप्त किया जा सकता है। मुनिप्रवर ने आगे कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यों ने समय के साथ परिवर्तन करते हुए संघ को नवीन विकास के पायदानों पर बनाये रखा है। विषय पर विशेष प्रस्तुति देते हुए मुनि जयेशकुमार जी ने विकास शब्द का विश्लेषण करते हुए कहा कि वि यानि विवेक हमारे हर कार्य के साथ विवेक जुडा हो। हमारा सहयोगी, सहभागी, मित्र विवेकशील होना ही चाहिए। उसकी कुछेक बाते हमे कटु लग सकती है, पर वह हमें प्रेरणा देती हैं, सद्बुद्धि देती हैं, संबोध देती हैं। का यानि काल- भगवान महावीर ने कहा 'काले कालं समायरे' अर्थात जिस कार्य का जो समय निर्धारित है, उसी समय में वो कार्य करने पर हम निष्पत्ति को प्राप्त कर सकते हैं। काल सबसे मूल्यवान है, अतः हर क्षण का प्रायोरिटी के साथ में उपयोग करना चाहिए। स यानि सकारात्मक दृष्टिकोण- हमारी एनर्जी को सही जगह संरक्षित रखना चाहिए। दूसरों को खुश करने की अपेक्षा, स्वयं अपने आप को पॉजिटिवनेस.में रखकर आगे बढ़ना चाहिए। अपनी शक्ति, शांति को सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ाएं। व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत विकास के साथ पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक व आध्यात्मिक विकास के लिए नई सोच, नये चिन्तन की अवधारणाओं को बढ़ना चाहिए। नवीनता के लिए अतीत की स्मृतियों को साथ लेकर ग्रोथ को पाया जा सकता है।

मातृ पितृ देवो भवः कार्यक्रम का आयोजन

अहमदाबाद।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अहमदाबाद द्वारा आयोजित एक समसामयिक कार्यक्रम मातृ पितृ देवो भवः का आयोजन युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की प्रबुद्ध शिष्या साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, शाहीबाग पर किया गया।

ग्रंथों में है बतलाया जिनका बड़ा हम पे उपकार है...' सुमधुर गीतिका के माध्यम से साध्वी समत्वयशाजी ने अपने स्वरलहरियों के साथ माता-पिता के महत्व को बताया। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने प्रासंगिक उद्बोधन देते हुए पितृदेवो भवः पर बताया कि परिवार के स्वप्नों के लिए पिता अपने स्वप्नों को गौण कर बच्चों की हर इच्छाओं को पूर्ण करने का प्रयास करता है। पिता जाते-जाते अपने बेटों को वसीयत और नसीहत आशीर्वाद स्वरूप देकर जाता है।

आगे प्रेरणा दी कि पिता का सम्मान करने के साथ उनकी इच्छाओं को पूर्ण करने का प्रयास करें। FAMILY का अर्थ समझाते हुए कहा - Father And Mother I Love You। साध्वी अणिमाश्रीजी ने उपस्थित विशाल परिषद को मार्मिक भावपूर्ण उद्बोधन देते हुए कहा - मां हमारे जीवन का शुभारंभ है। प्रत्येक दुःख को झेलकर अपने जिगर के टुकड़ों को संस्कारित करते हुए बड़ा करती है। आपने अनेक दृष्टांतों के साथ गणेशजी द्वारा सृष्टि की परिक्रमा करने का दृष्टांत बताते हुए माता-पिता के महत्व को समझाया। आगे कहा - माता-पिता के पास दुआओं का खजाना है, लूटना चाहो जितना लूट लो। उनसे प्राप्त आशीर्वाद और उनके आभामंडल से निकलने वाली किरणें भाग्योदय एवं रक्षा-कवच बन जाएंगी। माता-पिता खुश हैं तो आपका भविष्य सुरक्षित है। ठाणं सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि माता-पिता , मालिक (आजीविका प्रदाता) एवं गुरु (जीवन की सही राह दिखाने वाले)के उपकारों से उऋण नहीं हो सकते। मां-बाप के कर्ज उतारने का प्रयास करें, उन्हें गुरु दर्शन कराएं, आध्यात्मिक सद्गति में सहायक बनें। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने संचालन करते हुए बताया कि घर का गौरव मां है जो संस्कार सिखाती है, और घर का अस्तित्व पिता है जो संघर्ष करना सिखाता है।

पैंसठिया छंद यंत्र का आध्यात्मिक अनुष्ठान संपन्न

उधना।

पैंसठिया छंद यंत्र का आध्यात्मिक अनुष्ठान अत्यंत श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ तेरापंथ भवन में संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम तेरापंथ युवक परिषद, उधना एवं तेरापंथ महिला मंडल, उधना के संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। इस पावन अवसर पर साध्वी डॉ. परमयशाजी, साध्वी विनम्रयशाजी, साध्वी मुक्ताप्रभाजी एवं साध्वी कुमुदप्रभाजी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। अनुष्ठान के दौरान साध्वी श्री जी ने उपस्थित श्रद्धालुओं से विशेष क्रम अनुसार 24 तीर्थंकरों का जाप करवाया। पैंसठिया यंत्र में दिए गए निर्धारित क्रम के अनुसार, प्रथम से 24वें तीर्थंकर तक उनके मंत्रों का निर्धारित संख्या में जाप करवाया गया। साध्वी श्री जी ने प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के मंत्र जाप से प्राप्त होने वाले आध्यात्मिक, मानसिक एवं जीवनोपयोगी लाभों की विस्तृत जानकारी प्रदान की। साथ ही किस तीर्थंकर के जाप से जीवन में शांति, सफलता, स्वास्थ्य एवं सकारात्मकता आती है, इस विषय को अत्यंत सरल एवं प्रभावशाली ढंग से समझाया। इसके साथ ही साध्वी श्री जी ने यह भी मार्गदर्शन दिया कि किस दिशा में मुख रखकर जाप करना चाहिए, जिससे साधना का अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके। इस दिव्य अनुष्ठान में लगभग 208 जोड़ों (कपल) ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई तथा कुल मिलाकर लगभग 700 से अधिक श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। सुप्रसिद्ध गायिका अभिलाषा बांठिया द्वारा साध्वी श्री जी की रचित एक भावपूर्ण गीतिका की सुंदर प्रस्तुति दी गई, जिसने पूरे वातावरण को भक्ति और भावनाओं से ओत-प्रोत कर दिया।

पृष्ठ 1 का शेष

समय का सही...

प्राथमिकता के आधार पर महत्वपूर्ण कार्यों को समयबद्ध तरीके से पूरा करना चाहिए।

२. केवली समुद्घात से सीख : आचार्यश्री ने तात्विक दृष्टि से टाइम मैनेजमेंट का सबसे सटीक उदाहरण 'केवली समुद्घात' को बताया। स्वयं आचार्यश्री भी विशाल संघ के कार्यों को प्राथमिकता के अनुसार सुनियोजित समय-प्रबंधन से ही संपादित करते हैं।

३. साधु-साध्वियों के लिए पावन पाथेय : साधु-साध्वियों और श्रावकों को अपनी दिनचर्या का एक व्यवस्थित टाइम-टेबल बनाकर जिम्मेदारियों के प्रति सजग रहना चाहिए तथा रात-दिन सेवा के लिए तत्पर रहना चाहिए।

४.Duty is Beauty : गुरुदेव ने समझाया कि जिसकी जो ड्यूटी (जिम्मेदारी) है, उसे Duty is Beauty : 'मानकर निष्ठा और जागरूकता के साथ निभाना चाहिए।

युवाचार्य श्री का 'योगक्षेम' और TPF को पावन उद्बोधन:

१. प्राचीन परंपराओं की सुरक्षा और नया अर्जन: युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने 'हो हमारा योगक्षेम' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए फरमाया कि 'योगक्षेम वर्ष' के अंतर्गत जहाँ धर्मसंघ की सुरक्षा (क्षेम) और प्राचीन आचार-विचारों की रक्षा हो रही है, वहीं नए साध्य की प्राप्ति (योग) पर भी मंथन चल रहा है।

२. TPF को आध्यात्मिक लक्ष्य का संदेश: युवाचार्यश्री ने तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) को एक सामाजिक के साथ-साथ आध्यात्मिक संस्था बताते हुए आह्वान किया कि TPF के सदस्य धर्मसंघ के योगक्षेम में सहयोग देते हुए अपने मूल आध्यात्मिक लक्ष्य 'मोक्ष' की ओर निरंतर कदम बढ़ाते रहें। ISRO के पूर्व चेयरपर्सन डॉ. किरण कुमार ने भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की।

प्रेक्षाध्यान की विधि और 'लोगस्स' का ध्यान :

१. स्थिरता, शिथिलता और जागरूकता : प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति में कायोत्सर्ग के दो रूप हैं—लंबा कायोत्सर्ग (४०-४५ मिनट) और छोटा कायोत्सर्ग। ध्यान का मूल आधार शरीर की पूर्ण स्थिरता, शिथिलता और सजगता है।

२. श्वास के साथ ध्यान : आचार्यश्री ने उपस्थित विशाल चतुर्विध धर्मसंघ को श्वास के साथ 'लोगस्स' के ध्यान का प्रयोग भी करवाया, जिससे उपस्थित श्रद्धालुओं ने आत्म-शांति का अनुभव किया।

कायोत्सर्ग से प्राप्त होने वाले ५ महा-लाभः

१. जड़ता की शुद्धि : कायोत्सर्ग करने से शरीर व मन की जड़ता समाप्त होती है।

२. निर्मल मति : बुद्धि तीक्ष्ण, स्पष्ट और निर्मल बनती है।

३. समता भाव का विकास : अनुकूल और प्रतिकूल, सुख और दुख—दोनों स्थितियों को समता से सहने की क्षमता विकसित होती है।

४. उत्कृष्ट अनुप्रेक्षा : अनुप्रेक्षा (चिंतन-मनन) की साधना अधिक प्रभावी और गहरी होती है।

५. गहन ध्यान की सिद्धि : शरीर के स्थिर और शिथिल होने से ध्यान का प्रयोग अत्यंत सुगम और फलदायी हो जाता है।

अतीत के दोषों का परिमार्जन और प्रशांत विहार :

१. प्रायश्चित्त व दोष विशुद्धि : आगम के अनुसार, कायोत्सर्ग से अतीत और वर्तमान के प्रायश्चित्त योग्य दोषों की विशुद्धि होती है।

२. हल्कापन और सुखमय जीवन : दोषों के क्षय से साधु प्रशस्त ध्यान वाला और आत्म-भार से मुक्त (हल्का) हो जाता है। वह संयम पथ पर 'सुखे-सुखे' (आनंदपूर्वक) विहार करता है। आचार्यश्री ने सभी को कायोत्सर्ग के माध्यम से अपनी साधना को सुदृढ़ बनाने की पावन प्रेरणा दी।

पृष्ठ 2 का शेष

आश्रव पर लगेगा...

२. चार संस्थाओं का चतुष्कोण: आचार्यश्री की पावन सन्निधि में दो दिवसीय 'प्रेक्षाध्यान सम्मेलन' शुरू हुआ। पूज्य प्रवर ने जैन विश्व भारती, प्रेक्षा इंटरनेशनल, अध्यात्म साधना केंद्र और प्रेक्षा विश्व भारती—इन चारों संस्थाओं को मिलकर प्रेक्षाध्यान का व्यापक प्रसार करने व शिविरों में एकरूपता रखने का निर्देश दिया।

३. संस्थापकों की अभिव्यक्ति: सम्मेलन के शुभारंभ पर अमरचंद लुंकड़, गौरव कोठारी, के.सी. जैन और गौतम बाफना ने विचार व्यक्त किए। युवाचार्य श्री का उद्बोधनः युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने कहा कि आचार्य तुलसी के शासनकाल में आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा दिया गया 'प्रेक्षाध्यान' का अवदान लुप्तप्राय ध्यान परंपरा का पुनरुद्धार है। यह भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर मुड़ने का सशक्त माध्यम है।

बोलती किताब

अठारह पाप

पाप से विरक्ति, आत्मा की निर्मलता की ओर

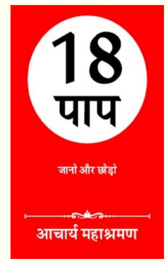

जैन विश्वभारती प्रकाशन द्वारा प्रकाशित आचार्य महाश्रमण रचित 'अठारह पाप' एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक एवं नैतिक ग्रंथ है। इस पुस्तक में जैन दर्शन के अनुसार आत्मा के बंधन का कारण बनने वाले अठारह प्रमुख पापों का विस्तृत एवं सरल विवेचन किया गया है। यह ग्रंथ आचार्य महाश्रमण के प्रेरणादायी प्रवचनों का संपादित रूप है, जिसका संपादन साध्वी सुमतिप्रभा द्वारा किया गया है।

जैन दर्शन के अनुसार मनुष्य के सुख-दुःख में पुण्य और पाप दोनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। सत्कर्मों से पुण्य का तथा असत्कर्मों से पाप का बंध होता है। पाप के कारण जीव अनादिकाल से संसार में भटकता रहता है, इसलिए आत्मकल्याण और परम सुख की प्राप्ति के लिए इन पापों का त्याग आवश्यक माना गया है। इस ग्रंथ में प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाद, रति-अरति, मायामृषा तथा मिथ्यादर्शनशल्य जैसे अठारह पापों का क्रमबद्ध वर्णन किया गया है। प्रत्येक अध्याय में धार्मिक सिद्धांतों के साथ-साथ प्रेरक प्रसंगों, ऐतिहासिक उदाहरणों तथा व्यवहारिक जीवन की घटनाओं के माध्यम से यह बताया गया है कि इन पापों से व्यक्ति का चरित्र, समाज और आत्मा किस प्रकार प्रभावित होते हैं। साथ ही अहिंसा, सत्य, ईमानदारी, संयम, संतोष, अपरिग्रह तथा आत्मानुशासन जैसे सद्गुणों को अपनाने की प्रेरणा भी दी गई है। यह ग्रंथ केवल धार्मिक उपदेशों तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव जीवन को नैतिक, संयमित, शांतिपूर्ण और आध्यात्मिक दिशा प्रदान करने वाला एक उत्कृष्ट मार्गदर्शक है। वर्तमान समय में जब भौतिकता, स्वार्थ, हिंसा, असत्य और लोभ जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, तब यह पुस्तक आत्मचिंतन, आत्मशुद्धि और व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है। इसके अध्ययन से पाठक न केवल अठारह पापों की गहन समझ प्राप्त करता है, बल्कि उनसे दूर रहकर सदाचार, आत्मसंयम और आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा भी प्राप्त करता है। यही इस ग्रंथ का मुख्य उद्देश्य और इसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

केलवा की अंधेरी ओरी से धर्म क्रांति तक : तेरापंथ की गाथा

इरोड।

साध्वी सोमयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा । आज आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा का दिन तेरापन्थ के इतिहास में गौरवपूर्ण दिन है । महामहिम आचार्य श्री भिक्षु स्वामी ने दीक्षा स्वीकार की थी ।

तेरापन्थ का उदय हुआ था। अनुशासन, संगठन और व्यवस्था का बीज वपन किया था तथा धर्म क्रांति का शंखनाद किया था। केलवा की अंधेरी ओरी में उत्साह पूर्ण वातावरण में आचार्य भिक्षु ने भाव दीक्षा स्वीकार की थी । हम सौभाग्यशाली है कि हमे ऐसा तेरापन्थ धर्म संघ मिला, ऐसे गुरु मिले। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी की छत्रछाया में रहकर आनन्द की अनुभूति कर रहे है । कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से कविता सिंघी द्वारा हुआ।

उपासक प्रकाशजी पारख ने आचार्य श्री भिक्षु स्वामी के साध्य साधना और दान, दया के बारे में बताया । डॉ. साध्वी सरलयशाजी ने गुरु पूर्णिमा पर गुरु की महिमा के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। साध्वी ऋषिप्रभाजी ने भक्तिपूर्ण कार्यक्रम का कुशल संचालन किया ।

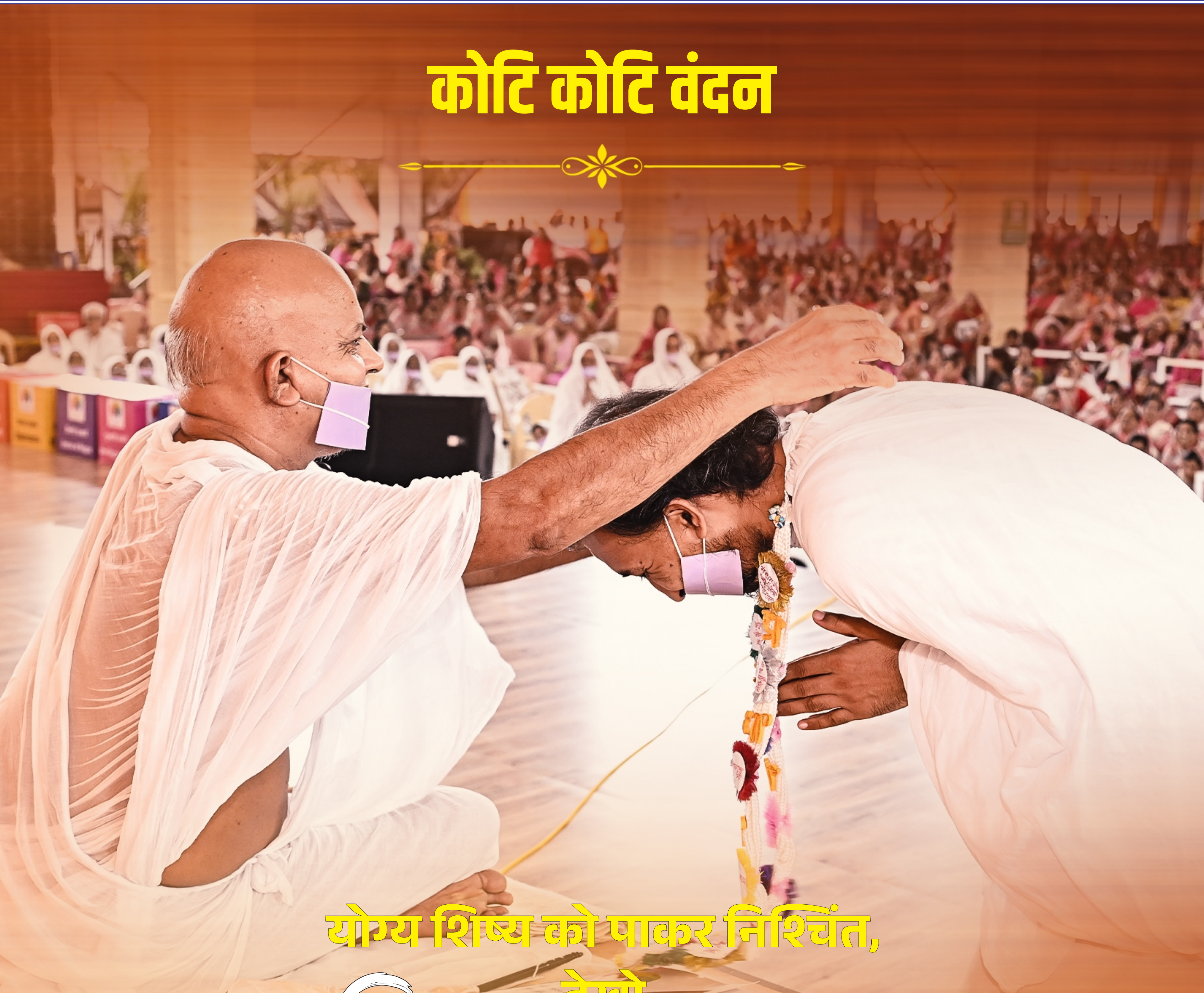

देखो

नेमानंदन

: श्रद्धाप्रणत :

सागरमल, दीपककुमार, विमलकुमार, कमलेशकुमार
श्रीमाल परिवार, वडोदरा-देवगढ़

MANGALAM JEWELLERS | D.S JEWELLERS PVT LTD
D. S. CHAIN | D. S. SILVER

KAROLIA POLE, M.G. ROAD, VADODARA

कोटि कोटि अभिवंदन

गुरुवर महाश्रमणजी ने, वाह-वाह क्या रंग जमाया।
मुख्य मुनि श्री महावीर को, उन्नत शिखर चढ़ाया।।

: श्रद्धाप्रणत :

स्व. कंकुबाई-स्व. प्रतापचंदजी, स्व. श्रीमती प्रेमदेवी पोखरणा की स्मृति में
रोशनलाल, वसंता-दिनेश, पिंकी-राकेश, सिमरन-अरविंद
आस्था, हिमांशी, तनिषा पोखरणा

चिताम्बा - बैंगलोर

ARYEN
Aryen Marketing
ESTD 1999

लोगस्स के पाठ से कटेगा मोहनीय कर्म, भक्ति से खिलेगा सम्यक्त्व का धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

'चतुर्विंशतिस्तव से क्या मिलेगा?' विषय पर पूज्य प्रवर का मार्मिक बोध; नमस्कार महामंत्र और लोगस्स पाठ के गूढ़ रहस्य को किया उजागर

लाडनूं।
17 अगस्त, 2026

तीर्थंकर भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर में 'चतुर्विंशतिस्तव से क्या मिलेगा?' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान किया।

चतुर्विंशतिस्तव और दर्शन विशोधि :

१. २४ तीर्थंकरों का स्तवनः पूज्य आचार्यश्री ने आगम की व्याख्या करते हुए फरमाया कि इस अवसर्पिणी काल में भरत क्षेत्र में २४ तीर्थंकर हुए हैं, जो वर्तमान में सिद्धावस्था को प्राप्त हैं। उनकी स्तुति और भक्तिभाव की अभिव्यक्ति ही चतुर्विंशतिस्तव है।

> मस्तक वहीं झुके जो वास्तव में पूज्य हैं, वीतराग की स्तुति ही आत्मा को बोधि लाभ देती है
> —आचार्यश्री महाश्रमण

२. दर्शन मोहनीय पर चोट : आगम में पूछा गया कि चतुर्विंशतिस्तव से जीव क्या प्राप्त करता है? उत्तर है—इससे जीव को 'दर्शन विशोधि' की प्राप्ति होती है। तीर्थंकरों की निष्काम भक्ति से दर्शन मोहनीय कर्म कमजोर होता है, सम्यक् दर्शन और अधिक निर्मल बनता है तथा क्षायिक सम्यक्त्व की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।

सिर किसके सामने झुके? — वंदन का विवेक :

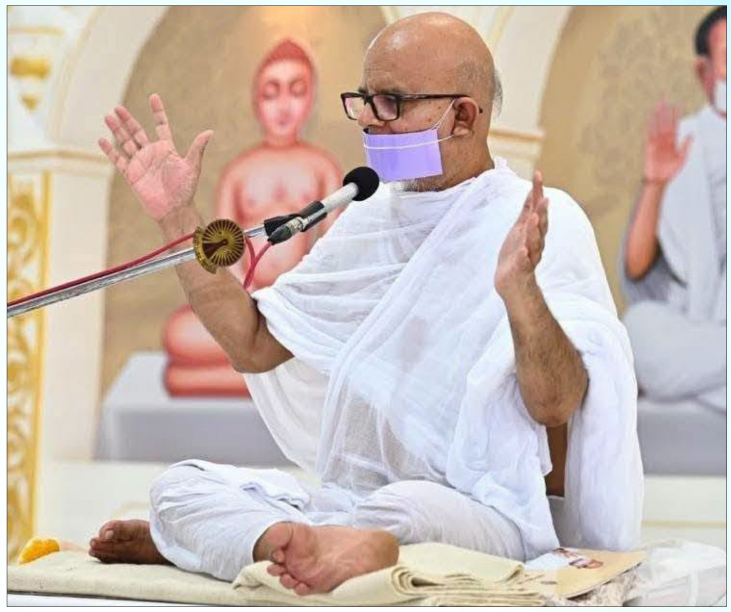

१. उत्तमांग की सार्थकता : आचार्यश्री ने फरमाया कि शरीर का उत्तमांग 'मस्तक' किसके सामने झुके, यह विचारणीय है। यह शीश केवल उनके आगे झुकना चाहिए जो वास्तव में पूज्य और नमनीय हैं।

२. 'लोगस्स' पाठ की गरिमा : 'लोगस्स' के पाठ में सभी २४ केवलियों का नामोल्लेख कर वंदन किया गया है। कर्म रज से रहित, जन्म-मरण से मुक्त सिद्धों की भक्ति आरोग्य, बोधि लाभ और उत्तम समाधि का वरदान देती है।

निःस्वार्थ भक्ति से अहंकार का अंतः

१. अहंकार का क्षय : सिद्धों और वीतरागों के प्रति विनीत भाव से झुकने पर मन के अहंकार को क्षीण होने का अवसर मिलता है। जहां निःस्वार्थ समर्पण और भक्ति होती है, वहीं जीव का वास्तविक कल्याण संभव है।

२. नमस्कार महामंत्र का मर्म : आचार्यश्री ने फरमाया कि नमस्कार महामंत्र भी भक्ति का ही उत्कृष्ट पाठ है। भिन्न-भिन्न संप्रदायों में वंदना की विधियां भले अलग हों, मुख्य बात यह है कि भीतर में सच्चा भक्तिभाव होना चाहिए।

गुरु वंदना से मिटता है अहंकार, क्षीण होता है नीच गोत्र कर्म! : आचार्यश्री महाश्रमण

'वंदना से क्या मिलेगा?' विषय पर पूज्य प्रवर का मार्मिक बोध; माता-पिता और गुरुजनों की वंदना को बताया संसार का श्रेष्ठ शिष्टाचार

लाडनूं।
18 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता,शांतिदूत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर में 'वंदना से क्या मिलेगा?' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान किया।

प्रधानमंत्री का पद भी जहाँ छोटा पड़ जाए...

विनम्रता का भाव : सांसारिक जीवन में भी बड़ों के प्रति सम्मान प्रकट करने की एक शिष्ट परंपरा है।

माँ का उदाहरण : आचार्य श्री ने एक बेटे और मां के रिश्ते का दृष्टांत देते हुए फरमाया कि व्यक्ति दुनिया में चाहे कितना भी बड़ा पद प्राप्त कर ले—जैसे कि 'प्रधानमंत्री' बन जाए—लेकिन जब वह अपनी वृद्ध मां के पास जाता है, तो उसका व्यवहार एक बेटे जैसा ही रहता है। वह अपनी मां के सामने कोई अहंकार नहीं दिखाता, बल्कि उनके चरणों में झुककर उन्हें प्रणाम करता है।

सीख : यह उदाहरण यह दर्शाने के लिए दिया गया है कि 'वंदना' अहंकार को मिटाने और बड़ों के प्रति कृतज्ञता व सम्मान व्यक्त करने का एक श्रेष्ठ माध्यम है। जिस तरह मां के सामने पद और प्रतिष्ठा गौण हो जाते हैं, उसी तरह साधु-संतों की परंपरा में भी रत्नाधिक (दीक्षा या ज्ञान में बड़े) के प्रति विनय का भाव रखना अनिवार्य है।

वंदना की महिमा व विधिः

१. तीसरा आवश्यक : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि षडावश्यक में तीसरा आवश्यक 'वंदना' है। परमेष्ठी वंदना में अरिहंतों, सिद्धों, आचार्यों, उपाध्यायों और साधुओं की वंदना की जाती है।

> विनम्रता ही वंदना का प्राण है; जहाँ शीश झुकता है, वहीं से आत्मा के कल्याण का द्वार खुलता है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

२. मस्तक झुकाना ही सच्ची भक्ति : वंदना के दौरान शिष्य, गुरु की आज्ञा लेकर प्रविष्ट होता है और अपना मस्तक गुरु के चरणों में रख देता है। अपने उत्तमांग को गुरु के चरणों में लगाना भक्ति का सर्वोच्च प्रतीक है।

३. वंदना की परंपरा : गृहस्थ एवं साधु-साध्वी 'तिक्खुत्तो' (तीन बार) उठ-बैठकर वंदन करते हैं। बहिर्विहारी साधु-साध्वियां गुरु की दिशा में मुंह करके वंदन करते हैं। परंपरा में आचार्य स्वयं भी अपने से रत्नाधिक (दीक्षा में वरिष्ठ) मुनियों को नतमस्तक होकर वंदना करते हैं।

विनयशीलता और आचार्यों के महान उदाहरणः

१. गुरुदेव तुलसी व आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की परिपाटी : आचार्यश्री ने स्मरण कराया कि आचार्य श्री तुलसी रत्नाधिक संतों को सड़क पर ही नीचे विराजकर वंदन करते थे। वहीं, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी भी प्रवचन देने जाने से पूर्व सदैव गुरुदेव तुलसी के पास जाकर वंदना व आज्ञा प्राप्त करते थे।

२. विनम्रता ही वंदना का प्राणः विद्वान संतों द्वारा अपने से वरिष्ठ मुनियों का चरण स्पर्श करना महान भक्ति का लक्षण है। गुरु से आज्ञा लेकर कार्य करना शिष्टता और मर्यादा का प्रतीक है।

नीच गोत्र का क्षय और आदेय वचन की प्राप्तिः

१. गोत्र कर्म की निर्जरा : आगम के अनुसार, वंदना करने से जीव नीच गोत्र कर्म का क्षय (निर्जरा) करता है और उच्च गोत्र का बंधन करता है।

२. आज्ञा की स्वीकार्यता : निष्काम वंदना से व्यक्ति का प्रभाव और वचन ऐसा आदेय बनता है कि उसकी बात या आज्ञा को समाज में सहर्ष स्वीकार किया जाता है।

३. मद का वर्जन : जाति, कुल, सुंदरता, रूप, बल और तपस्या पुण्य के योग से मिलते हैं, लेकिन इनका अहंकार नहीं करना चाहिए। सुंदरता से बड़ी चीज भावों की निर्मलता और ज्ञान की विशिष्टता है। वंदना से अहंकार क्षीण होता है और जीवन में सर्वत्र आदर प्राप्त होता है।

लाडनूं में 'स्तव-स्तुति मंगल से क्या मिलेगा?' पर पूज्य प्रवर का आगमिक बोध

स्तव-स्तुति से मिलेगी बोधि, स्वाध्याय से जागेगी आत्म-सिद्धि!: आचार्यश्री महाश्रमण

ISRO के पूर्व चेयरमैन डॉ. किरण कुमार ने लिए आशीर्वाद, ZEE Business के अनिल सिंघवी को मिला आचार्य महाश्रमण 'प्रोफेशनल ऑफ द ईयर' अवॉर्ड

लाडनूं।
22 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, धर्मधुरंधर, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर में 'स्तव-स्तुति मंगल से क्या मिलेगा?' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से पावन देशना प्रदान की।

ज्ञान योग, कर्म योग और स्वाध्याय की महिमाः

१. स्वाध्याय से बढ़कर कोई तप नहीं : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि साधना के क्षेत्र में स्वाध्याय ज्ञान योग का अनूठा प्रयोग है। स्वाध्याय से ज्ञान मिलता है, आलोक प्राप्त होता है और आगे का मार्ग प्रशस्त होता है। १२ प्रकार के तपों में स्वाध्याय के समान कोई दूसरा तप नहीं है।

२. कर्म योग और निष्काम वैयावृत्य : ज्ञान योग के साथ-साथ कर्म योग (सेवा) भी साधना का एक बड़ा स्तंभ है। जो अशक्त, ग्लान या वृद्ध हैं, उनकी सेवा करना कर्म योग है। इसके अलावा जो सेवा के अधिकारी हैं—जैसे आचार्य, उपाध्याय आदि—वे भले ही वृद्ध या अशक्त न हों, फिर भी उनकी सेवा करना महत्त्वपूर्ण है।

३. सेवा में मुख्य-गौण का विवेक : जो संत या साधक वैयावृत्य (सेवा) के कार्य में नियुक्त हैं, उनके लिए सेवा मुख्य कार्य है और स्वाध्याय गौण हो सकता है।

> बारह प्रकार के तपों में स्वाध्याय के समान कोई दूसरा तप नहीं है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

स्तव-स्तुति, भाव पूजा और बोधि लाभः

१. भक्ति योग और स्तुति का साहित्य मर्म : गुणवानों की निश्चल और निरहंकार भाव से प्रशंसा करना भक्ति योग है। साहित्यिक दृष्टि से १ से ३ श्लोक (या कुछ मान्यताओं में ७ श्लोक) वाले गुणोत्कीर्तन को 'स्तुति' और उससे बड़े श्लोकबद्ध गुणोत्कीर्तन को 'स्तव' कहा जाता है।

२. द्रव्य स्तव बनाम भाव स्तव : स्तव दो प्रकार के होते हैं—द्रव्य स्तव और भाव स्तव। राजाओं या लौकिक देवी-देवताओं की स्तुति द्रव्य स्तव है, जिसमें हिंसा की संभावना भी रहती है। इसके विपरीत अरिहंत, सिद्ध, आचार्य और साधु-साध्वियों की निष्काम भावपूर्वक गुण-पूजा करना 'भाव स्तव' है।

३. बोधि लाभ और उच्च गतियों की प्राप्ति : स्तव-स्तुति से जीव सम्यक ज्ञान, दर्शन और चरित्र बोधि प्राप्त करता है तथा इनकी पुष्टता होती है। बोधि सम्पन्न जीव 'अंत क्रिया' (मोक्ष) के योग्य बनता है। यदि मोक्ष न भी मिले, तो वह १२वें देवलोक, ९ ग्रैवेयक अथवा ५ अनुत्तर विमानों तक उच्च गति प्राप्त करता है।

४. तादात्म्य भाव और सिद्धान्त भक्ति : जिसकी भक्ति करें, उसके साथ ऐसा तादात्म्य (एकात्मता) हो कि उनके गुण हमारे भीतर संक्रमित होने लगें। आराध्य के साथ-साथ 'तत्त्व' की भी भक्ति होनी चाहिए—अर्थात् जिनेश्वर भगवान द्वारा प्रवेदित सत्य पर निशंक निष्ठा रखना और ईमानदारी, अचौर्य आदि आदर्शों को जीवन में उतारना ही सच्ची सिद्धान्त भक्ति है।

ISRO के पूर्व चेयरमैन डॉ. किरण कुमार ने ग्रहण किया आशीष

TPF का १९वां राष्ट्रीय अधिवेशनः अनिल सिंघवी अलंकृत–

योगक्षेम वर्ष में तप का कीर्तिमान

गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी के शासनकाल में ऐतिहासिक 'अभूतपूर्व प्रसंग'
(गुरुकुलवास में 13 चारित्रआत्माओं के मासखमण)

1. मुनि श्री श्रेयांश कुमार जी
2. साध्वी लब्धिश्री जी
3. साध्वी संवरप्रभा जी
4. साध्वी कान्तप्रभा जी
5. साध्वी राजश्री जी
6. साध्वी मर्यादा प्रभा जी
7. साध्वी सिद्धान्त श्री जी
8. साध्वी समीक्षा प्रभा जी
9. साध्वी हेमप्रभा जी
10. साध्वी भव्यप्रभा जी
11. साध्वी विशालप्रभा जी
12. साध्वी रुचिप्रभा जी
13. साध्वी गौतमप्रभा जी

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) के १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन में जी बिजनेस (ZEE Business) के मैनेजिंग एडिटर अनिल सिंघवी को 'आचार्य महाश्रमण प्रोफेशनल ऑफ द ईयर अवॉर्ड 2026' से अलंकृत किया गया।

विशिष्ट जनों की उपस्थिति : अधिवेशन में TPF के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत, पूर्व मुख्य न्यासी एस. के. सिंघी और पूर्व अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने विचार व्यक्त किए।

गुरुदेव का पावन पाथेयः आचार्यश्री ने फरमाया कि TPF प्रबुद्धजनों का संगठन है। बुद्धिजीवी धर्म और सेवा से जुड़कर चिकित्सा, कानून व वाणिज्यिक क्षेत्रों में समाज का महान उपकार कर सकते हैं।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।